सिकन्दर शाह

लेखक—

पण्डित चन्द्रशेखर पाठक

प्रकाशक—

पाठक एण्ड कम्पनी,

७२ बी, वाराणसी घोष स्ट्रीट,

कलकत्ता।

१९३१

मूल्य १॥=)

प्रकाशक—
पण्डित चन्द्रशेखर पाठक
पाठक एण्ड कम्पनी,
७३ बी, बाराणसी घोष स्ट्रीट,
कलकत्ता।
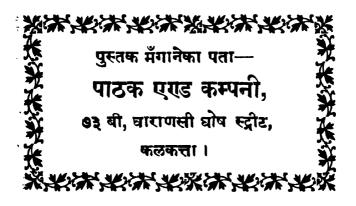
मुद्रक—
चन्द्रशेखर पाठक
महाराष्ट्र "प्रेस"
७३ बी, बाराणसी घोष स्ट्रीट,
कलकत्ता।

राजा चक्रधरसिंह (रायगढ़-नरेश)

वैरागढ़-वंश-भूषण, परम उदार-हृदय,

साहित्य-मर्मज्ञ, विद्वद्वर्य

रायगढ़-नरेश

श्रीमान राजा चक्रधर सिंहजी महाराज

के

कर-कमलोंमें

एक वीर पुरुषकी, यह वीर गाथा

प्रेमोपहार-स्वरूप,

सादर

समर्पित है।

श्रीमानका अनुगृहीत

चन्द्रशेखर पाठक।

ग्रन्थकर्त्ता रचित और अनुवादित अन्यान्य पुस्तकें।

रचित—

रमा	प्रतिमा-विसर्ज्जन
मदालसा	शोणित चक्र
विलासिनी विलास	वाराङ्गना-रहस्य ६ भाग
कृष्णवसना सुन्दरी	हेमलता ६ भाग
भीमसिंह	रामायण-रहस्य
शशिबाला	ठगवृत्तान्त
शैव्या	अङ्गरेजी शिक्षा
प्रेम संहार	लीना
महाराणा प्रतापसिंह	पृथ्वीराज
विचित्र समाज-सेवक	भयानक बदला
मायापुरी	आदर्श लीला

अनुवादित—

शोणित दर्पण	राईसे पर्वत
लार्ड किचनर	बिराज बहू
नैपोलियन बोनापार्ट	अर्थमें अनर्थ ३ भाग
कपाल कुण्डला	पीतलकी मूर्त्ति ५ भाग
मृणालिनी	मि० ब्लेककी कम्बख्ती
दुर्गेशनन्दिनी	ब्रह्मचर्य्य
जर्म्मन षड्यन्त्र	गोधन
पारिवारिक-चिकित्सा	हैजा-चिकित्सा
जननेन्द्रियके रोग	वायोकेमिक चिकित्सा

प्रस्तावना

आजतक हिन्दी पाठकोंकी सेवामें हम चार महापुरुषोंका जीवन चरित्र अर्पण कर चुके हैं और इसमें कोई सन्देह नहीं, कि पाठकोंने अपनी अशेष उदारता दिखाकर उन सभी पुस्तकोंको अच्छी तरह अपनाया है। नैपोलियन बोनापार्टका चौथा संस्करण होनेकी तैयारी हो रही है और पृथ्वीराज, महाराणा प्रताप सिंह तथा लार्ड किचनर इन तीनों जीवनियोंके भी कई संस्करण समाप्त हो गये हैं। इस सम्बन्धमें पाठकोंने जिस तरह हमारा उत्साह बढ़ाया है, उसीका यह फल है, कि आजसे लगभग तेईस सौ वर्ष पूर्वका, एक इतिहास लेकर, हम फिर हिन्दी-साहित्य-क्षेत्रमें उपस्थित होनेका साहस कर सके हैं और इसके लिये हम पाठकोंके चिर कृतज्ञ हैं।

परन्तु प्रस्तुत पुस्तक अर्थात् सिकन्दरकी जीवनीके कार्य-क्षेत्र और अन्य जीवनियोंके प्रणयनके कार्य-क्षेत्रमें बड़ा अन्तर है। बहुत दिवस पहलेकी घटनायें होनेके कारण, कोई भी बात बहुत हो प्रामाणिकतासे नहीं कही जा सकती। इसके अतिरिक्त एकदम विदेशीय ऐतिहासिकोंपर ही निर्भरकर यह पुस्तक लिखनी पड़ी है। सिकन्दरकी जीवन-सम्बन्धी घटनाओंके लेखक एरियन, डियोडोरस, जस्टिन, क्यूर्टियस, प्लूटार्क प्रभृति लेख-

कोंने अनेकानेक स्थानोंपर ऐसा विवरण दिया है, जिसका सामञ्जस्य नहीं। किसी स्थलपर एरियन कुछ कहते हैं तो डियोडोरस और ही कुछ तथा जस्टिन और क्यूर्टियस दूसरा ही राग अलाप रहे हैं। सिकन्दरके जीवनकी घटनायें पढ़ते समय पाठकोंको अवश्य ही मालूम हो जायगा, कि हमारा कथन कहाँतक सत्य है। साथ ही ये सभी ऐतिहासिक अपना कर्त्तव्य भी ठीक ठीक पालन न कर सके हैं, क्योंकि जहाँ मौका मिला, वहीं इन सबने सिकन्दरके सैनिकोंकी वीरता मुक्तकण्ठसे बखानी है; परन्तु भारतीयोंके सम्बन्धमें तथा अन्य देशोंके नरेशोंके सम्बन्धमें एकदम चुप रह गये हैं अथवा जो कुछ लिखा है, वह इतना अस्पष्ट तथा संक्षिप्त है, कि उससे कुछ भी तत्व नहीं निकलता। इतने पर भी उनके कथनसे यह स्पष्ट मालूम हो जाता है कि यहाँ उन्हें पक्षपात-रोगने आ घेरा है और जान बूझकर अथवा भ्रमके कारण या निरर्थक समझकर सिकन्दरके अतिरिक्त अन्य देशोंके नरेशोंके सम्बन्धमें कुछ विशेष लिखना उन्होंने उचित नहीं समझा है। एक बात और भी है। आजसे तेईस सौ वर्ष पहलेके समयमें और आजके समयमें बड़ा अन्तर है। उस समयके भारतीयोंमें इतिहास लिखनेकी प्रणाली बहुत कम दिखाई देती हैं; नहीं तो एकाएक धूम्रकेतुकी तरह सिकन्दरके भारतमें आ पहुँचने और पंजाब प्रदेशमें उथल-पुथल मचा डालनेका विवरण अवश्य ही प्राप्त होता। साथ ही विचार करनेसे यह भी मालूम होता है, कि जब घरमें धन-धान्य खूब भरा रहता है, जब किसी

बातकी कमी नहीं रहती, तब इन घटनाओंकी ओर कोई विशेष ध्यान भी नहीं देता। उदाहरणार्थ मान लीजिये, कि किसीके घरमें करोड़ोंकी सम्पत्ति है और उसमें दस बीस हज़ार रुपये यदि कोई ले ही गया, तो एक बार दुःख तो अवश्य ही होता है; परन्तु फिर वह घटना शीघ्र ही भूल जानेमें भी आती है। ठीक यही अवस्था सिकन्दरके सम्बन्धमें भी मालूम होती है। लगभग उन्नीस मासके सिकन्दरने भारतमें उपद्रव मचाया ; परन्तु इसके बाद ही भारतसे उसका सब सम्बन्ध विच्छिन्न हो गया। अतः भारतवासी इस घटनाको भी एकदम भूल गये और अपने देशके इतिहासमें उसको स्थान देना भी उन्होंने उचित नहीं समझा। यह एक और भी ऐसा कारण है, कि सिकन्दरके साथ भारत-वासियोंका उस समय ठीक ठीक कैसा व्यवहार हुआ था, इसका बिल्कुल ही पता नहीं चलता। जो कुछ पता मिल सकता है, वह विदेशी ग्रन्थकारोंसे और इस जीवनीको पढ़नेसे ही पाठकोंको मालूम हो जायगा, कि वह कितना है।

तीसरी और सबसे बड़ी अड़चन नामोंके सम्बन्धमें है। ग्रीक लेखकोंने नामोंको इस तरह बिगाड़ कर लिखा है, कि ठीक ठीक पता नहीं लगता, कि वे किस जातिके मनुष्य थे। यही अवस्था स्थानोंके नामोंके सम्बन्धमें भी है। सिकन्दरके भारत आक्रमणके समय यहाँके स्थानोंके नाम कुछ दूसरे ही थे और अब कुछ दूसरे ही हैं। उन स्थानोंको पहचाननेका उद्योग नदियोंकी गतिसे किया जाता है, परन्तु पंजाबकी नदियोंने भी अपनी गति बहुत

कुछ बदल दी है । रैवर्टी, कनिङ्घम प्रभृति पुरातत्वविदोंने यद्यपि इस सम्बन्धमें बहुत कुछ उद्योग किया है और बहुत कुछ पता लगाया है तथापि अब भी सब ऐतिहासिक एक मत न हो सके हैं । ऐसे पार्थक्यमें हम कहाँतक सफल हो सके होंगे, यह सब कोई समझ सकते हैं ; क्योंकि न तो हम इतिहासज्ञ ही हैं और न उतनी विद्या बुद्धि तथा गवेषणा ही है, तथापि इधर उधरसे जोड़ बटोरकर यह जीवनी लिखनेका साहस किया है । आशा है, पूरी पूरी नहीं तो उस समयकी यत्किञ्चित अवस्था तो पाठकोंके ध्यानमें आ जायगी और इतना तो पाठकगण अवश्य ही समझ सकेंगे, कि एक अध्यवसायी और उद्योगी पुरुष किस तरह थोड़े ही समयमें अपने अध्यवसाय और उद्योग बलसे सुदूर ग्रीससे भारततक अपना प्रभुत्व जमानेमें समर्थ हुआ था । सिकन्दरकी यह प्रतिभा मनन करने योग्य है और उसकी इस रण-तृष्णा तथा कष्ट-सहिष्णुताने ही उसको इतना यश दिलाया है । साथ हो एक बात और भी है । सिकन्दरके चरित्रसे पाठकोंको यह भी मालूम होगा, कि वह अपने मनुष्योंसे कैसा व्यवहार करता था और जबतक उसका चरित्र विशुद्ध था, तबतक ही वह उन्नति की ओर अग्रसर हो सका था ; परन्तु ज्यों ज्यों उसके चरित्रमें दूषण घुसते गये ; त्यों त्यों उसका अधःपतन होता गया। साथ ही पाठकोंको यह भी मालूम होगा, कि उस समयके निस्पृह ब्राह्मण भी किस तरह देश-सेवाके लिये सदा तैयार रहते थे और किस तरह उन्होंने स्वदेशकी रक्षामें अपने प्राणोंकी आहुति दी थी ।

सिकन्दरने भारतमें राजतंत्र और प्रजातंत्र दोनों प्रकारका ही शासन देखा था और ग्रीक लेखकोंके कथनानुसार मालूम होता है, कि इन दोनों प्रकारके शासनोंमें भारतने उत्कर्ष लाभ किया था। उस समय पंचायत-प्रथा प्रचलित थी और राजा अपने कर्त्तव्यको पालन करते थे। यद्यपि आज और उस समयमें बड़ा अन्तर पड़ गया है, तथापि आशा है, कि पाठकगण इसे पढ़कर कुछ उपदेश ग्रहण करेंगे। उपर्युक्त ऐतिहासिकोंके अतिरिक्त इस पुस्तकके प्रणयनमें विन्सेण्ट स्मिथ लिखित (Alexander's Campaign) तथा पं० सत्यचरण शास्त्री लिखित "भारते अलिकसन्दर" से बहुत अधिक सहायता मिली है। अतः हम इनके साथ-ही-साथ अन्यान्य उन ऐतिहासिकोंके भी अत्यन्त कृतज्ञ हैं, जिनके प्रस्तुत किये हुए पथको अनुसरण कर ही आज हम यह ग्रन्थ हिन्दी पाठकोंकी सेवामें अर्पण कर सके हैं।

इसमें भूलें कितने ही प्रकारकी तथा अनेकानेक होंगी तथापि आशा है, कि सहृदय पाठक तथा उदार-हृदय समालोचकगण उनके लिये क्षमा तथा यथासमय सूचित करनेका कष्ट उठाकर बाधित करेंगे।

भवदीय—

चन्द्रशेखर पाठक।

सिकन्दर शाह ।

सिकन्दर शाह ।

१

आरम्भ

आजसे लगभग तेईस सौ वर्ष पहले ग्रीसके उत्तरीय भागके मसिडोनिया प्रदेशमें, एक ऐसे असाधारण पुरुषने जन्म ग्रहण किया था, जिसमें कार्य-तत्परता, अध्यवसाय, साहस और जन-साधारणपर अपना प्रभाव डालनेकी इतनी अधिक क्षमता थी, कि उस समय वह रण-दुर्जय और अपने समयका एक ही वीर गिना जाने लगा था। ऐसी शक्ति बहुत कम मनुष्योंमें दिखाई देती है। नैपोलियन प्रभृति पाश्चात्य वीरोंने इसीकी युद्ध प्रणालीका अच्छी तरह अनुशीलन किया था और इसी कारणसे वे भी समर-कुशल और अजेय कहलाये थे।

उस समय ग्रीसकी बहुत उन्नत अवस्था हो रही थी। उस समय ग्रीस भूमिने शूरता, वीरता, पराक्रम, पाण्डित्य, शिल्प आदिमें समग्र यूरोपमें उच्च स्थान प्राप्त किया था। आज दैव-दुर्विपाकसे वह सब कुछ नहीं है। आज ग्रीसने अपना सब कुछ खो दिया है। इसका कारण इसके अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता है, कि वहाँके अधिवासी अपना कर्त्तव्य भूल गये हैं। इसी कारणसे ही, लियोनिडास (१), थेमिष्टोक्लिस (२) जैसे सपूतोंकी जननी रहने पर भी आज वह पद-दलित हो रही है। इस जीवनीके पढ़नेसे ही मालूम हो जायगा, कि उस समयके प्रत्येक ग्रीसवासियोंके हृदयमें स्वदेशका गौरव बढ़ानेकी प्रबल इच्छा भरी रहती थी और निन्दा अथवा प्रशंसाकी ओर भ्रूपेक्ष न कर, सभी अपना अपना कर्त्तव्य सम्पादन किया करते थे। इसी कारणसे ग्रीस देश उन्नत शिखरपर पहुँचा हुआ था। देशके जन-साधारणके कार्य्य और विचार यदि स्वदेशकी उन्नतिकी ओर लगे रहें, तो उसकी उन्नतिकी गतिको रोकना कोई सहज काम नहीं है; बल्कि बाधा पाने पर उसका वेग और भी बढ़ने लगता है।

मसिडोनिया ग्रीसके उत्तर भागमें है। इसके पश्चिममें इली-

---

(१) स्पार्टाका राजा। इसने थर्मापोलीकी रक्षामें अपने जीवनकी आहुति दी थी।

(२) एथेन्सका एक राजनीतिज्ञ तथा वीर-योद्धा। यह अरस्तूका विरोधी था।

रिया, पूर्वमें थ्रेस और ईजियन सागर है। उस समय मसिडोनिया देशके अधिवासियोंको ग्रीसबासी ग्रीकगण बड़ी ही हीन-दृष्टिसे देखते थे और उन्हें जँगली तथा असभ्य ही कहा करते थे। उस समय मसिडोनियावासी मसिडनोंकी अवस्था भी कुछ भिन्न ही थी। इनकी भाषा ग्रीस देशकी भाषासे स्वतन्त्र तथा रहन-सहनका ढङ्ग भी निराला ही था। उस समय तक नाना प्रकारके रङ्गोंसे शरीर रँगनेकी प्रथा इनमें वर्त्तमान थी। जबतक ये अपने किसी शत्रुको मारकर अपनी प्रतिहिंसा न चरितार्थ कर लेते थे; तब-तक समाजमें अपनी अक्षमता प्रकट करनेके लिये ये कोई न कोई घृणित चिन्ह धारण करते थे। जबतक शस्त्र द्वारा अपने हाथों किसी जँगली सूअरको न मार लेते, तबतक पलङ्ग अथवा चौकी-पर सोनेका उन्हें अधिकार न होता था। हमारे चरित-नायक सिकन्दरका (Alexander) जन्म इसी मसिडोनियामें हुआ था और इसकी प्रतिभाके कारण ही उस समय मसिडोनिया समस्त ग्रीसका मुकुट-मणि हो रही थी।

उस समय मसिडोनियाका शासन-भार फिलिपके हाथोंमें था। फिलिपने ही मसिडोनियावासियोंको रण-शिक्षा देकर अजेय बना दिया था। उपादान किसी न किसी रूपमें सर्वत्र मिल सकते हैं; परन्तु जो महापुरुष अपने बुद्धिबलसे अशिक्षितको शिक्षित, भीरुको साहसी, आलसीको कर्मशील बनाते हैं, जो जातीय भावका प्रवाह देशवासियोंके हृदयमें बहाना जानते हैं, वे ही जन-नायकके पदको प्राप्त करते हैं। फिलिप अथवा सिकन्दरके

पहले भी मसिडोनियावासियोंमें वीरत्व गुणकी कमी न थी ; परन्तु कोई उत्तम शिक्षक अथवा उन्हें सुराहपर लानेवाला न रहनेके कारण, उस देशकी अवस्था हीन हो रही थी। इसी कारणसे फिलिप और सिकन्दर अद्भुतकर्मा कहलाये हैं। आज भी वही मसिडोनिया है, वहाँकी जनसंख्या पहलेकी अपेक्षा बहुत कुछ बढ़ भी गई है ; परन्तु आज न तो उसका वह गौरव है और न वहाँ अब वैसे वीरपुरुष ही उत्पन्न होते हैं। जिस देशके थोड़ेसे वीरोंने एकबार अपने वीरदर्पसे जगतको मुग्ध कर दिया था, वर्त्तमानकालमें उसी देशके अधिवासी दुःसह दुःख भोग रहे हैं।

जो हो, फिलिपने अपनी सेनाका संस्कार कर उसे समरदुर्जय बना दिया था। उस समय ग्रीस देशमें भाड़ेपर सेना लेकर युद्ध करनेकी चाल चल रही थी ; परन्तु फिलिपने यह चाल उठा दी। उन्होंने वेतन-भोगी स्थायी सेना नियुक्त की और अच्छी तरह युद्ध-विद्यामें उसे निपुण बनाया। फिलिपने ही पहले पहल यूरोपमें वेतन-भोगी सेना नियुक्त करनेकी चाल चलाई थी। इस सेनाको वे यथासमय पुरस्कार इत्यादि देकर उत्साहित किया करते थे। फिलिप मध्यम श्रेणीके गृहस्थके बालकोंको राजधानीमें लाकर उन्हें शिक्षा देते थे। उनकी शिक्षा इस ढङ्गकी होती थी कि वे कष्टसहिष्णु, साहसी और कर्मठ बन जाते थे। उनमें विलासिता लेशमात्र भी प्रवेश न करने पाती थी। उस समयकी शिक्षाका ढङ्ग भी बड़ा ही कठोर था। एक सैनिकने जाड़ेके दिनोंमें गर्म जलसे स्नान किया था, इसलिये उसे बहुत कुछ लाञ्छित होना

पड़ा था। एकके साथ उसकी स्त्री थी। इस कारणसे उसे पदच्युत होना पड़ा था। यदि फिलिप इतनी कठोरता न दिखाते तो उनकी सेना कभी इतनी रणदुर्जय न होती। फिलिप अपने सिपाहियोंको "राजसहचर", "राजपार्षत्" इत्यादि शब्दोंसे सम्बोधन किया करते थे। इसी तरह जो सेना युद्धक्षेत्रमें सबके आगे जाकर शत्रु-सैन्यपर आक्रमण करती और भयानकसे भयानक स्थानमें जाकर भी वीरता दिखाती, उसे बहुत कुछ पुरस्कार भी देते थे।

दूरदर्शी राजनीतिज्ञ फिलिप धीरे धीरे ग्रीसवासियोंको साम, दाम और भेद द्वारा अपना पक्षपाती बनाने लगे। जिस स्थानपर इन :तीनों उपायोंसे काम न निकलता था, वहीं वे शस्त्रका प्रयोग करते थे। घूस और षड़यन्त्र—ये ही दोनों फिलिपके प्रधान शस्त्र थे। इस तरह फिलिपने स्पार्टाके अतिरिक्त ग्रीसके अन्य कितने ही भागोंको अपने दलमें मिला लिया था।

जिस समयकी बातें हम कह रहे हैं, उस समय ग्रीसके स्पार्टा और एथेन्स बड़े ही बलशाली राज्य थे।

ग्रीसके दक्षिण भागमें सुविख्यात लिकोनिया प्रदेश है। उस प्रदेशकी युरोतस नदीके तटपर वीर-प्रसविनी स्पार्टा भूमि है। यद्यपि आज स्पार्टाका पहले जैसा गौरव नहीं है, तथापि आज भी उसकी वीरत्व कथा घर घर गाई जाती है। वहाँ मिसटक्लिस या :पेरिक्लिसकी नाईं योद्धा और प्रख्यातनामा दार्शनिकोंके जन्म न ग्रहण करनेपर भी उसने स्वाधीनताकी रक्षामें

आत्म-त्यागके जो उत्कट उदाहरण दिखाये थे, स्पार्टावासियोंने फारिसवासियोंके आक्रमणसे जिस तरह अपने देशकी रक्षा की थी, उसी कारणसे आज भी स्पार्टा नगरी वीर सन्तानोंकी प्रसव करनेवाली वीरमाता कहलाती है।

उस समयके स्पार्टनोंकी शिक्षा ठीक भारतीय क्षत्रियोंकी शिक्षाके समान होती थी। युद्ध ही उनकी जीविका थी—इस लिये वे सदा युद्धके लिये प्रस्तुत रहते थे। स्पार्टन बालकके जन्म ग्रहण करते ही वह पञ्चायत सभामें पहुँचाया जाता था। यदि परीक्षामें वह बालक हीनाङ्ग या रोगी मालूम होता तो पहाड़पर रख दिया जाता था और वहीं वह परलोक सिधार जाता था। बालककी अवस्था सात वर्षकी होते ही, वह पिता मातासे ले लिया जाता था और फिर उसकी सैनिक शिक्षा आरम्भ हो जाती थी। अन्य शिक्षाओंकी अपेक्षा शारीरिक शिक्षा पर ही विशेष ध्यान दिया जाता था। जाड़े और गर्मीके दिनोंमें नंगे पाँव रहना पड़ता था। पहननेके लिये केवल एक वस्त्र, स्नानके लिये शीतल जल और खानेके लिये थोड़ा और मोटा अन्न दिया जाता था। समय समयपर इस विषयकी परीक्षा भी होती थी कि बालक कष्टसहिष्णु हुआ या नहीं। बड़ोंकी आज्ञा पालन करना, नीची दृष्टि कर, सीधे बिना इधर उधर देखे चलना और सदा अपने शिक्षककी आज्ञाके अनुकूल रहना—यही उन बालकोंकी शिक्षा थी।

सत्रह वर्षकी अवस्था होते ही स्पार्टनोंका सैनिक जीवन

आरम्भ हो जाता था और ६० वर्षकी अवस्था हो जानेपर इस सैनिक जीवनसे उन्हें छुट्टी मिलती थी। इस दीर्घ समयके बीच, वे सेना निवासमें सैनिकोंकी भांति शयन, भोजन, व्यायाम आदि किया करते थे। वे अपनी इच्छाके अनुसार घर भी नहीं जा सकते थे।

यहाँकी स्त्रियोंकी भी यही अवस्था थी। ग्रीस देशके अन्य प्रान्तोंकी स्त्रियोंको घरमें चरखा चलाकर और कपड़े बुनकर अपना समय बिताना पड़ता था ; परन्तु स्पार्टन स्त्रियाँ पुरुषोंकी भाँति व्यायाम करती थीं। उस समयकी स्पार्टन रमणियाँ बल तथा साहसमें विख्यात हो रही थीं। ये स्त्रियाँ कभी कभी पुरुषोंके वस्त्र पहन सेना निवासमें अपने स्वामीसे मिलने भी जाती थीं। वीर्यवान पुत्र उत्पन्न होनेकी इच्छासे पिता क्षेत्रज सन्तान उत्पन्न करा लेनेमें भी लज्जित न होते थे। स्पार्टाके शब्दकोषमें "कापुरुष की माता"से बढ़कर स्पार्टन स्त्रियोंके लिये दूसरी गाली नहीं थी। एक बार एक स्पार्टन कादरोंकी भाँति युद्धक्षेत्रसे भाग आया। इसी अपराधपर उसकी माताने उसे मार डाला और कहा,—"युरोताका जल गधोंके पीनेके लिये नहीं है।" एक वृद्धके पाँच पुत्र लड़ाईमें मारे गये। यह दुःसमाचार उसके एक आत्मीयने उससे जाकर कहा। वृद्धने उत्कण्ठासे पूछा—"स्पार्टनोंकी विजय तो हुई ?" उत्तरमें "हाँ" सुनकर वृद्धने कहा,—"तब ईश्वरको धन्यवाद दीजिये।"

इनके अतिरिक्त वहाँ दो श्रेणियाँ और भी रहती थीं। इनमें

एकका नाम पेरियुकी था। इनका काम व्यवसाय अथवा वाणिज्य था और दूसरी जाति हेलोटके नामसे विख्यात थी, जो कृषि-कार्य करती, स्पार्टनोंका अत्याचार सहती और बड़े दुःखसे अपना जीवन व्यतीत करती थी। इनकी संख्या स्पार्टनोंसे दश गुणी रहनेपर भी ये बिल्कुल ही निर्वीर्य्य और अकर्मण्य थे।

उन्हीं स्पार्टनोंपर फिलिपका प्राधान्य पहले स्थापित न हो सका था।

अब ऐथेन्सवासी एथेनियनोंका कुछ परिचय देना भी आवश्यक है। इनकी चाल स्पार्टावासियोंसे भिन्न थी। एथेनीय बालक अपने पिताकी इच्छाके अनुसार घरमें रखे या त्याग दिये जाते थे। जो शिशु त्यागने योग्य समझा जाता था, वह दरवाजेपर रख दिया जाता था। विशेषकर वह मर ही जाता था। कभी कभी कृपाकर शहरके मनुष्य उसे उठा ले जाते थे और उसे दास बनाकर रख छोड़ते थे। जो बालक त्यागा न जाता था, वह सात वर्षतक महलमें अपनी माताके पास रहता था। इसके बाद उसे गुरुके पास भेज दिया जाता था। वहाँ उसे क्रीतदासके समान ही रहना पड़ता था। इस तरह गुरुसे आज्ञा पालनकी शिक्षा ग्रहणकर वह बालक पाठशालामें भेजा जाता था। वहाँ वह लिखना-पढ़ना साथ ही गाना बजाना भी सीखता था। बालिकाएं घरमें वस्त्र बुनना, सूत कातना और गुरुजनोंके आज्ञा-पालनकी शिक्षा ग्रहण करती थीं। उनका विवाह पिताकी इच्छाके अनुसार ही होता था। पिता प्रायः अपने बन्धुबान्धवोंके

पुत्रके साथ ही कन्याका विवाह करते थे। एथेन्सके बाहर कन्या न दी जाती थी। स्त्रियोंको धर्म्म-कार्यके अतिरिक्त अन्य किसी कामसे घरसे बाहर निकलनेकी आज्ञा न थी। उस समय एथेनियन और स्पार्टन सबका ध्यान ब्रह्मचर्यकी ओर विशेष था। इसीलिये वे वीर्य्य-सम्पन्न और दृढ़व्रत होते थे।

उस समय ग्रीसवासियोंको पितृ-मातृ-भक्त होनेकी विशेष शिक्षा दी जाती थी। पितृ द्रोही पुत्रकी समाजमें निन्दा होती थी। स्वदेश-शासनके अधिकारसे भी वह वञ्चित समझा जाता था। विचार-कार्य्यमें नियुक्त होनेके पहले पुत्रको यह प्रमाण देना पड़ता था, कि उसने अपने पिता-मातासे कभी असद्-व्यवहार तो नहीं किया है। यदि कोई अपने पिता-माताका भरण-पोषण न कर सकता तो सर्व साधारणमें वक्तृता देनेका अधिकारी न समझा जाता था।

इन्हीं गुणोंके कारण ग्रीसदेश उस समय धन, जन, वीरता, साहस, आदि सभी विषयोंमें श्रेष्ठत्व प्राप्त कर रहा था और वही ग्रीस जब विलास-परायण और अकर्म्मण्य हो उठा, जब ब्रह्मचर्य्य-हीन तथा कर्त्तव्य विमुख हुआ, तब उसे दारुण पापका प्रायश्चित्त पराधीनता आदि भोगनेके लिये वाध्य होना पड़ा।

जो हो, फिलिपके कारण ग्रीसदेशका बहुत कुछ उपकार हुआ। यद्यपि वे स्पार्टनोंको अपने दलमें न मिला सके; परन्तु कितने ही युद्धोंमें विजय प्राप्त करनेके कारण फिलिपका ग्रीसमें बड़ा नाम हुआ और लोग उनसे डरने भी लगे। उस समय एक

तो ग्रीस छोटे छोटे जनपदोंमें बट ही रहा था, दूसरे आपसमें लड़ाई झगड़ा भी हुआ करता था।

ग्रीससे तथा पर्शिया (फारिस) से बराबर ही युद्ध चलता था। फारिसनिवासी सदा ग्रीसपर आक्रमण कर उसे छिन्न भिन्न कर डालना चाहते थे। फारिसके राजा जरेक्ससने जबसे ग्रीसपर आक्रमण किया था, उसी समयसे ग्रीसवासियोंके हृदयमें पर्शियासे बदला लेनेकी धुन समाई हुई थी। परन्तु ग्रीस इस तरह गृह-कलहमें लिप्त हो रहा था, कि वह कुछ कर न सकता था। जरेक्ससके साथ युद्धकर ही लियोनिडास मर जानेपर भी अपनेको अमर बना गया था। इसी समयसे ग्रीसदेशकी थार्मापोली नामक गिरि-उपत्यका जगद्विख्यात हो गई थी।

यद्यपि स्पार्टा और ऐथेन्स दोनों बलशाली राज्य थे; परन्तु इनके पास भी सेना भरपूर न थी। अरस्तूके मतसे स्पार्टाके पास नौ हज़ार और एथेन्सके राज्यमें बीस-तीस हज़ारसे अधिक सेना न थी। इस अवस्थामें ग्रीसवासियोंका पर्शियापर आक्रमण करना सहज काम न था; परन्तु फिलिप इस आशाको हृदयमें लेकर ही कार्य्य-क्षेत्रमें अवतीर्ण हुए थे। इसी उद्देश्यसे वे अपनी सेनाको रणदुर्जय बना रहे थे और इसी आकांक्षासे वे ग्रीसके अन्यान्य राज्योंको अपने पक्षमें मिला रहे थे। यद्यपि फिलिप ये उद्योग कर रहे थे, परन्तु फ़ारिसवासी भी चुप न थे। वे भी धनका प्रलोभन दे, ग्रीसके कितने ही प्रतिभाशाली मनुष्योंको अपने दलमें मिला रहे थे। उनके धनसे जो मनुष्य

सिकन्दर और पुरुका युद्ध ।

परिपुष्ट होते थे ; उनमें एथेन्सके डिमस्थिनीस उल्लेख योग्य हैं। ये फिलिपके विरुद्ध सदा अनलवर्षो वक्तृताएँ दिया करते थे। उस समय इनके समान दूसरा वक्ता न था। परन्तु इनकी वक्तृत्व-शक्तिने फिलिपके कार्य्यों में कुछ विशेष वाधा न पहुँचाई। फिलिपने (३४८ बी, सी,) में ओलिन्थसपर विजय प्राप्त कर ली। इसके बाद उन्होंने डेलफ़ीपर भी अधिकार जमाया। इस तरह उनका नाम समस्त ग्रीसमें व्याप्त हो गया। इस समय ग्रीसमें एक धार्म्मिक झगड़ा (Sacred war) फैल रहा था। फिलिपने डेलफ़ीपर अपना अधिकार जमाकर इस झगड़ेको भी शान्त किया। इस तरह ग्रीसमें अपना प्राधान्य स्थापित कर, फिलिप पर्शियाकी ओर ध्यान देनेकी चेष्टा कर ही रहे थे, कि उनका मृत्युकाल आ पहुँचा।

बलवान कालने फिलिपकी इच्छा पूरी न होने दी। जिन्होंने बड़े क्लेशसे एकता सम्पादन की था, जिन्होंने शत्रु-संहारके लिये अनेकानेक उद्योग कर रखे थे, जिन्होंने समर-निपुण अगाध सैन्य-बल संग्रह किया था ; वे अपनी स्त्री और पुत्रके षड़यन्त्रसे ४५ वर्षकी अवस्थामें ही घातकके हाथों मारे गये और उनकी आकांक्षा उनके समयमें पूरी न हो सकी। इस जीवन-चरित्रका नायक सिकन्दर (Alexander) इसी वीर पिताका रणदुर्जय पुत्र था।

२

बाल्य-जीवन

सिकन्दर (Alexander) का जन्म मसिडोनियाके पेला नगरमें ईसा मसीहके ३६५ वर्ष पूर्व, अक्टबूर मासके प्रथम सप्ताहमें, रात्रिके समय हुआ था। वह रात बड़ी ही भयावनी थी। घोर वर्षा तथा तूफ़ानसे समस्त पेला नगर हिल रहा था। किम्बदन्ती है, कि इसी दिन रात्रिके समय इफि-सुस नगरके डियाना देवीके मन्दिरमें भयानक आग लगी थी। कितनों ही की धारणा है, कि इस आगसे केवल डियाना देवीका मन्दिर ही नहीं जला था, बल्कि एक प्रकार से उसी दिवस एशियाके भाग्यमें आग लग गई थी। यह डियाना देवीका मन्दिर प्राचीनकालके सप्ताश्चर्यों में गिना जाता है।

इधर सिकन्दरका जन्म हुआ और उधर फिलिपकी सेनाको कितने ही स्थानोंमें विजय प्राप्त हुई। इसके अलावा ओलिम्पिया

उत्सवकी* घुड़दौड़में फिलिपके घोड़ेने सर्वश्रेष्ठ बाजी मारी। इन कारणोंसे फिलिप अपने पुत्रपर बहुत ही प्रसन्न हुए।

सिकन्दरकी माताका नाम ओलिम्फिया था। जिस समय सिकन्दरका जन्म हुआ, उस समय ज्योतिषियोंने कहा था, कि यह पुत्र संसारमें अपनेको अजेय प्रमाणित कर अशेष कीर्त्ति उपार्जन करेगा।

सिकन्दरके बाल्य-जीवनकी घटनाओंका पता नहीं लगता। ऐसा सुना जाता है, कि सिकन्दरने सुप्रसिद्ध विद्वान दार्शनिक अरस्तूनसे शिक्षा ग्रहण की थी। अरस्तूके पिता मसिडन राज-परिवारके गृह-चिकित्सक थे। कितनोंका यह भी मत है, कि सिकन्दरने अरस्तूसे (Aristottle) शिक्षा नहीं प्राप्त की थी। अरस्तूने शिक्षा-प्रदानका समय तीन भागोंमें विभक्त किया है। पहला भाग जन्मसे सात वर्षकी अवस्थातक, दूसरा आठसे अट्ठारह वर्षकी अवस्थातक, तथा तीसरा उन्नीसवें वर्षसे इक्कीसवें वर्ष तक। अरस्तूका कथन है, कि प्रथम भागमें शिशुके भोजन और शरीरपर विशेष ध्यान रखना चाहिये। बालकको

---

* ग्रीसके दक्षिण भागमें पीसा नगरीके पास ओलिम्पया नामक स्थानमें चार चार वर्षोंपर एक उत्सव हुआ करता था। इस उत्सवपर ग्रीसके सब भागोंके मनुष्य आपसकी शत्रुता त्यागकर एकत्र हुआ करते थे। यहाँ नवीन ग्रन्थ पाठ, कविताकी लड़ाई, व्यायाम, मल्लयुद्ध, घुड़दौड़ आदि बहुतसे कार्य्य हुआ करते थे और इनमें जो विजय प्राप्त करता था, उसका नाम समस्त ग्रीसमें व्याप्त हो जाता था। उसका बड़ा सम्मान होता था।

शीतसहिष्णु बनानेके लिये शीतल जल सेवन करने देना चाहिये। शीत वस्त्र कम पहननेको देने चाहियें। उसमें कोई दुर्गुण न प्रवेश करने पाये; इसलिये उसकी आँखें तथा कानोंपर विशेष ध्यान रखना चाहिये। लड़कोंको खेलनेकी सामग्रियाँ भी ऐसी ही देनी चाहियें, जिससे बराबर उनका बुद्धि-विकास होता जाये। लियननेटस नामक एक ओलिम्फियाके आत्मीय बालकपनमें सिकन्दरकी देख-रेख करते थे। ये बड़े ही कठोर नीति-परायण पुरुष थे। सम्भवतः इनकी शिक्षासे ही सिकन्दरका शरीर सुन्दर और बलवान हो गया था। लाइसिमेक्स नामक एक मनुष्यपर सिकन्दरकी शिक्षाका विशेष भार था। प्लूटार्क इसे अच्छा न समझते थे। राजाओंके मुसाहब, राजा और राजपुत्रोंके इतिहास-प्रसिद्ध मनुष्योंके साथ जिस तरह राजाकी तुलना किया करते हैं, वे भी उसी तरह होमर महाकाव्यके प्रधान पात्र एचिलसके साथ सिकन्दरकी तुलना किया करते थे। इसी समयसे शायद सिकन्दरके हृदयमें होमरकी ओर अनुराग उत्पन्न हो गया था।

अरस्तूके मतसे शिक्षाके दूसरे भागमें साहित्य, व्यायाम और संगीत तथा चित्रण-कलाके सम्बन्धमें शिक्षा देनी चाहिये। व्याकरण, पद्य और गद्य तथा इतिहासको साहित्यके अन्तर्भुक्त ही उन्होंने माना है। अरस्तू बालकोंकी प्रथम अवस्थामें कठोर व्यायामके पक्षपाती न थे। उनका कथन है, कि इससे शरीरकी गठन खराब हो जाती है।

जिस समय सिकन्दरकी अवस्था आठ वर्षकी थी, उस समय डिमास्थिनिस तथा एथेन्सके अन्यान्य आठ प्रतिभाशाली मनुष्य किसी राजकीय कार्यके लिये फिलिपके दरबारमें गये थे। फिलिपने उन सबसे अपने पुत्रका परिचय कराया। उस समय सिकन्दरने बीणा (harp) बजाकर तथा एक नाटकके उत्तम स्थानका आवर्त्तनकर अपनी शिक्षाका प्रकृष्ट परिचय दिया था।

ईसा मसीहके ३४२ वर्ष पूर्व जिस समय सिकन्दरकी अवस्था पन्द्रह वर्षकी थी; उस समय स्वयं अरस्तूने उसकी शिक्षाका भार ग्रहण किया था और जबतक वह एशियापर आक्रमण करनेके लिये न निकला था तबतक बराबर उसे शिक्षा देते थे। अरिस्टोटल (अरस्तू) यूरोपके प्राचीन समयके एक प्रतिभा-सम्पन्न पुरुष थे। उन्होंने न्यायदर्शन, विज्ञान, राजनीति प्रभृति विषयोंमें उत्तमोत्तम ग्रन्थोंकी रचनाकर यूरोपको बहुत कुछ शिक्षा प्रदान की है।

अरस्तूने सिकन्दरको जिन काव्योंका रसास्वादन कराया था उनमें होमर कविका इलियट काव्य सर्व प्रधान है। सिकन्दर इसी काव्यको पढ़कर बीर रसमें मतवाला हो गया था।

इलियटके युद्धस्थलका दृश्य दारुण है। मानो समस्त विश्व-ब्रह्माण्ड ग्रास करनेके लिये युद्धदेवी विकट शरीर फैलाये गरजती हुई आगे बढ़ती चली आती है। शत्रुओंका नाश करनेके लिये ग्रीकोंकी प्रचण्ड क्रोधाग्नि प्रभृति कितनी ही बातें सिकन्दरने

इलियटमें देखीं। इसके बाद तो सिकन्दर इलियटका ऐसा भक्त बन गया कि इलियट काव्यको अपने विपदबन्धुके समान बराबर ही अपने पास रखने लगा। वह सोनेके समय भी, तलवारके साथ ही साथ, इसे अपने सिरहाने रख लेता था। इसी इलियटने सिकन्दरको जगज्जेता बनाया था। सिकन्दरने फारिसके राजाको पराजित कर उसके रत्नखचित राजसिंहासनपर जिस समय अधिकार जमाया; उस समय इस इलियटको ही पहले पहल उसपर रखकर अपनेको धन्य धन्य समझा। मालूम होता है, कि सिकन्दरने साधारणतः राजनीति, समाजनीति, युद्धनीति आदिकी ही शिक्षा अपने गुरुओंसे प्राप्त की थीं। पारलौकिक नियमोंकी शिक्षा कुछ भी प्राप्त न की थीं। यदि प्राप्त की होती तो उसकी पाशव-वृत्तियां कभी सीमाको अतिक्रम करनेमें समर्थ न होतीं।

सिकन्दरके हृदयमें बालकपनसे ही उच्च आकांक्षाने अपना निवास बना लिया था। फिलिपके विजयका समाचार सुनकर वह अपने साथियोंसे कहता—"यदि पिता ही सब विजय कर लेंगे तो मैं क्या विजय करूंगा।"

सिकन्दरके हृदयमें यह भाव भी खूब जम गया था, कि मैं धनीका पुत्र हूँ। परन्तु उसके पिताके हृदयमें इस भावका लेश भी न था। फिलिप सदा ही ओलिम्पिक उत्सवमें योग दिया करते। परन्तु एकबार जब सिकन्दरको वहाँ दौड़नेके लिये कहा गया, तब वह बोला, कि यदि कोई राजपुत्र मेरा प्रतिद्वन्द्वी होकर आये तो मैं दौड़नेके लिये तय्यार हूँ। ग्रीसका

औलिम्पिक उत्सव जनसाधारणकी जातीय सम्पत्तिके समान था। एक दरिद्र ग्रीसवासीको जितना अधिकार था, राजाको उससे अधिक कदापि न था। एकबार फ़ारिसके राजाने इस उत्सवमें अपना रथ भेजना चाहा था; परन्तु विदेशी रहनेके कारण उनका रथ वहाँ न लिया गया।

एकबार फारिसके दूत राजधानीमें आये। उस समय फिलिप वहां न थे, कहीं बाहर गये हुए थे। सिकन्दरने दूतसे इतनी उत्त-मतासे बातें कीं, कि वहाँ बैठे हुए बहुतसे विद्वान चकरा गये। उसने फारिसके राजाका स्वभाव, चरित्र, उनका सैन्यबल शत्रुके साथ उनका व्यवहार, उनके राज्यकी राहें आदि बहुतसे प्रश्न किये।

एकबार एक सौदागर एक बहुत ही बढ़िया घोड़ा बेचने लाया। घोड़ा सबको पसन्द आ गया। १३ टैलेण्ट (लगभग ३८ हज़ार रूपये) उसका दाम स्थिर हुआ। उस घोड़ेकी परीक्षाके लिये सब एक मैदानमें एकत्र हुए। इस समय घोड़ा बदमाशी करने लगा। किसीको वह चढ़नेही न देता था। यहाँ तक कि साईसोंका उसे पकड़ रखना कठिन हो गया। फिलिपने यह दशा देख सौदा-गरको घोड़ा वापस ले जानेके लिये कहा। सिकन्दर बैठा हुआ यह तमाशा देख रहा था। उसने पिताको घोड़ा वापस करते देखकर कहा,—"क्या यह घोड़ा वापस कर दिया जायेगा? ज़रा होशियारीसे काम लेनेसे ही घोड़ा बशमें आ जायेगा।" फिलिपने पहले तो इस बातपर ध्यान न दिया। परन्त कितनी ही बार जब

सिकन्दरने ये बातें कहीं तब वे बोले,—"आजकलके लड़के समझते हैं, कि वे बड़ोंसे भी अधिक चतुर हो गये हैं।" सिकन्दरने कहा,—"कुछ अधिक अवश्य समझते हैं।" अब फिलिप क्रोधित हो उठे। बोले,—यदि तुम घोड़ेको वशमें लाकर न चढ़ सकोगे तो क्या दण्ड दोगे?" सिकन्दरने कहा,—"उसका मूल्य।" यह बात सुन सभी हँसने लगे। अब सिकन्दर उस घोड़ेके पास जा पहुँचा और उसने उसकी लगाम पकड़ उसका मुँह सूर्यकी ओर फेर दिया। असल बात यह थी, कि घोड़ा अपनी छाया देखकर भड़कता था। जिस समय घोड़ा हिलता था, उस समय उसकी छाया भी हिलती थी। इसी कारणसे वह घोड़ा इतना भड़कता था। इसके बाद धीरे धीरे उसकी पीठपर हाथ रख, सिकन्दर उसपर चढ़ बैठा। घोड़ा बहुत ही तेज़ था। सिकन्दरने उसे खूब दौड़ाया। यह दशा देख फिलिपने उसी समय प्रसन्न होकर सिकन्दरको कहा—"पुत्र! तुम अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित करो। मसिडोनिया तुम्हारे उपयुक्त नहीं है।" सिकन्दरने इस घोड़ेका नाम बूकेफेलस (वृषशीर्ष) रखा था। इस घोड़ेपर चढ़कर सिकन्दरने कितने ही युद्धोंमें विजय प्राप्त की थी। कितनी ही बार इस घोड़ेकी सहायतासे उसके प्राण बचे थे। यह घोड़ा अन्तमें भारतमें आकर मरा। प्लूटार्कका कथन है, कि इसी घोड़ेवाली घटनाके बाद फिलिपने अपने पुत्रको शिक्षाके लिये अरस्तूके सुपुर्द किया था।

अरस्तूने राजधानी छोड़कर अपनी जन्मभूमि स्टैगिया नामक

गाँवमें सिकन्दरको कितने ही विषयोंकी शिक्षा दी थी। सिकन्दरने वहाँ तीन चार वर्ष तक पढ़ा था।

जब सिकन्दरकी अवस्था सोलह वर्षकी थी, उस समय फिलिपने बैजण्टाइन (वर्त्तमान कुस्तुन्तुनिया) पर आक्रमण किया था। पिताकी अनुपस्थितिमें सिकन्दर ही राज्यकी रक्षा करता था। ३३६ ई० पू० में सिकन्दरने पहले पहल शत्रु-संहारके लिये शस्त्र ग्रहण किया। कारण यह था, कि फिलिपको अपने राज्यसे बहुत दूरपर युद्ध करते देखकर इलीरियाके अधिवासी उसके विपक्षमें खड़े हो गये। उन्होंने समझा, कि इस समय न तो फिलिप ही यहाँ है और न उसके सैनिक ही। अतः इस समय सहजमें ही इलीरियाको स्वतन्त्र बना लेंगे। परन्तु उनकी आशा पूरी न हुई। सिकन्दर यह समाचार सुनते ही सेना ले उनपर चढ़ दौड़ा। उसके विद्रोहियोंका इस तरह दमन किया कि फिर उन्हें सर उठानेका कभी साहस न हुआ। सिकन्दरने अपनी विजयका स्मारक स्वरूप एक नगर स्थापित किया। उसका नाम रखा अलेकजैण्डर पोलिस अर्थात् सिकन्दरपुर।

इसके बाद फिर वह राज्य-शासनमें लगा। इन दिनों फिलिपका बल दिनों दिन बढता जाता था। यह देख देखकर एथेन्सवासी बड़े ही चिन्तित हो रहे थे। इसके अतिरिक्त डिमस्थिनिस आदि वक्ता बड़ी ही ज्वलन्त भाषामें फिलिपके विपक्षमें आग उगल रहे थे। इसी समय फिलिपने इलेतिया नामक नगरपर अधिकार जमा लिया और उसे अपना सेना-निवास बनानेकी

इच्छासे वहाँ किले बन्दी करने लगे। इलेतिया एथेन्स राज्यके सीमान्त प्रदेशसे लगभग ३० और ऐथेन्स नगरसे प्रायः ४५ कोसकी दूरीपर है। फिलिपके इलेतिया पर अधिकार जमानेका समाचार जब एथेन्समें पहुँचा तो एथेन्सवासी बड़े ही शङ्कित हो उठे। वे मन ही मन सोचने लगे, कि शायद फिलिप एथेन्सपर आक्रमण करेंगे। डिमस्थिनिसका दल बढ़ने लगा। थेबवासियोंने पहले तो डिमस्थिनिसकी बातोंपर ध्यान न दिया; परन्तु धीरे धीरे वे भी उनकी बातोंमें आ गये। इस समय डिमस्थिनिसका प्रभाव बहुत ही बढ़ गया। उनकी वक्तृत्व-शक्तिसे थेब, एथेन्स प्रभृति नगरोंके अधिवासी मुग्ध हो गये। थेबवासी पहले फिलिपके पक्षमें थे, अब वे वक्ताकी वक्तृत्व-कलामें मुग्ध होकर उसके विपक्षी बन गये।

युद्धका समय निकट आ गया। चीरोनिया क्षेत्रमें ग्रीसोंके बाहुबलकी परीक्षा हुई। एक ओर फिलिप दूसरी ओर थेब—एथेन्स प्रभृति एकत्र हुए। यदि इस युद्धमें फिलिप पराजित हो जाते तो सम्भव था कि सिकन्दरको अपना यह प्रतिभा दिखानेका अवसर ही न मिलता। इसीलिये कितने ही इस युद्धको पृथिवीका एक प्रधान युद्ध मानते हैं। इस युद्धमें फ़िलिपके साथ तीस हज़ार पैदल तथा दो हज़ार घुड़सवार सेना रणस्थलमें उपस्थित हुई थी। सम्मिलित ग्रीक सेना भी इतनी ही थी। ग्रीकसेनामें अधिकांस भाड़ेपर लाई हुई सेना तथा युद्धके शौकीन नागरिक थे। डिमस्थिनिस भी अपने देशका गौरव बढ़ानेके लिये इस

युद्धमें सम्मिलित हुए थे ; परन्तु वक्तृताके समय वे जैसी तेजस्विता और निर्भीकता दिखाते थे, युद्धके समय उन्होंने ठीक उसका विपरीत भाव दिखाया था। वे ही सबके पहले शस्त्र फेंककर युद्धक्षेत्रसे भाग खड़े हुए थे। यद्यपि इस युद्धमें ग्रीकोंने बड़ा साहस दिखाया ; परन्तु विजय फ़िलिपको ही प्राप्त हुई। सिकन्दरने इस युद्धमें बड़ी वीरता दिखाई थी। इस विजयसे फिलिपकी उच्च आशाका द्वार और भी खुल गया। ऐथेन्स और थेब्सका गर्व खर्व हुआ। फिर फिलिपके विपक्षमें खड़े होनेका किसीको साहस भी न हुआ। यह युद्ध सात अगस्त सन ३६८ ई० पू० में हुआ था।

इस युद्धमें लगभग तीन हज़ार एथेन्सवासी और लगभग इतने ही थेब्सवासी निहत हुए थे। इन छः हज़ार मनुष्योंकी मृत्युसे ही ग्रीसवासी उस समय एकदम हतवीर्य्य हो गये थे।

युद्ध समाप्त हुआ। सन्धिकी बातें होने लगीं। जो मनुष्य सन्धिकी शर्त्तें ठीक करनेके लिये एथेन्स गये थे, उनमें शायद सिकन्दर भी था। इसी समयसे सिकन्दरकी प्रतिभा और सम्मान और भी बढ़ गया था। जनसाधारण सिकन्दरको राजा और उसके पिताको सिपाही कहा करते थे। जनसाधारणकी पुत्रपर श्रद्धा देखकर फिलिप भी बहुत प्रसन्न होते थे ; परन्तु यह आनन्द भोगना फ़िलिपके भाग्यमें अधिक दिनोंतक लिखा न था।

इसी समयसे स्पार्टाको छोड़कर समस्त ग्रीसने फ़िलिपकी अधीनता स्वीकार ली। यद्यपि स्पार्टाने उनकी अधीनता न

स्वीकार की थी ; परन्तु उसकी यह शक्ति न थी, कि फ़िलिपके विरुद्धमें खड़ा हो सके। चीरोनिया-युद्धके लगभग एक वर्ष बाद कोरिन्थ (Corinth) नगरमें एक जातीय महासभा स्थापित हुई। स्पार्टाके अतिरिक्त ग्रीसके सब प्रदेशोंके प्रतिनिधि इसमें एकत्र हुए और फ़ारिसपर आक्रमण करना स्थिर कर फिलिपको इस सन्मिलित सेनाका सेनापति बनाया गया। स्थिर हुआ, कि आजसे एक वर्ष बाद फिलिप फ़ारिसपर आक्रमण करें। सब प्रदेशोंने धनजनसे सहायता देनेका वचन दिया।

संसारमें मनुष्य जब विशेष सफलता प्राप्त कर लेता है ; उस समय कभी कभी उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। कारण, गर्व सवार हो जाता है। यही दशा फिलिपकी हुई। ग्रीस पर इस तरह विजय प्राप्त होनेके कारण उनका दिमाग़ आस्मान पर जा चढ़ा। फिलिपकी विवाहिता स्त्री वर्त्तमान थी ; कितनी ही उपपत्नियाँ भी मौजूद थीं ; पर उन्हें फिर विवाह करनेका शौक चर्राया। एक ओर एशियापर आक्रमण कर उसे विदारण करनेके लिये वे शस्त्र तथा सैन्य संग्रह करने लगे। दूसरी ओर अपना शरीर विदीर्ण करनेके लिये वे एक नई रमणी संग्रह करने लगे। खुशामदी मुसाहबोंने खूब हाँमें हाँ मिलाई। उन सबने फिलिपका विवाह होना उचित बताया और यहाँतक स्थिर हो गया, कि इस रानीके गर्भसे जो पुत्र होगा, वही सिंहासनका अधिकारी माना जायेगा। फिलिपने भी इनका साथ दिया। वे ओलिम्फियाको व्यभिचारिणी, पुत्रको दोगला, त्याज्यपुत्र आदि कहने लगे। एक

दिन मद्यपानके समय एक मुसाहब बोला,—"नवीन रानीके गर्भसे जो पुत्र उत्पन्न होगा, वही सिंहासनपर बैठेगा।" सिकन्दर भी वहीं था। उसने कहा,—"तब मैं क्या त्याज्यपुत्र हूँ?" इतना कह उसने शराबका प्याला कहनेवालेके मुँहपर फेंक मारा। शराबसे बेहोश क्रोधान्ध फिलिप यह दशा देखकर नङ्गी तलवार ले सिकन्दरको मारने चले; परन्तु सिकन्दर कुछ दूरीपर बैठा था। फिलिपका पैर एक टेबिलसे अड़ा। टेबिल भी गिरा और फिलिप भी। पिताको गिरते देखकर सिकन्दरने कहा,—"जो उस टेबिलके पाससे इस टेबिलतक नहीं आ सकते, वे पहाड़ और समुद्र, लांघकर एशियापर आक्रमण करने जायँगे!"

इस घटनाके बाद सिकन्दरने राजधानीमें रहना उचित न समझा। अपनी माताके साथ दूसरी जगह चला गया; परन्तु इससे भी कलह शान्त न हुआ। दिनों दिन बढ़ता ही गया। फ़िलिप द्वारा सिकन्दरके साथी और बन्धु मारे जाने लगे। फिलिपका गृह अशान्तिसे परिपूर्ण हो गया।

फिलिपके हृदयकी दुर्बलताके साथ ही उसकी नवीन स्त्री और उनके मुसाहबोंकी शक्ति बढ़ने लगी। अन्तमें भयानक अवस्था आ पहुँची। एपिरसके राजासे फिलिपकी कन्याके विवाह-के उपलक्ष्यमें एक महोत्सव हो रहा था। फिलिप नाटक देखने जा रहे थे। उसी समय पउसेनियस नामक एक मनुष्यने उनको हत्या की। फिलिपके जीवन-नाटकका अभिनय इस तरह समाप्त हुआ। इस अभिनयमें फिलिपकी सह-धर्मिणी ओलिम्फिया और

पुत्र सिकन्दर भी लिप्त था—यह उस समयके सभी मनुष्योंका कथन है।

फ़िलिपके चरित्रमें चाहे और जितने ही दोष हों परन्तु उन्होंने जातीय गौरवकी वृद्धिके लिये बड़े परिश्रमसे समस्त ग्रीसवासियों को सम्मिलित किया था। यह कम प्रशंसाकी बात नहीं है।

३

उन्नति-पथ

फिलिपके परलोक गमनके साथ ही सबकी दृष्टि फिर सिकन्दरकी ओर पलट पड़ी। यद्यपि और भी दो चार मनुष्य मसिडोनियाका राजसिंहासन प्राप्त करनेकी आशा लगाये बैठे थे, तथापि सिकन्दरकी तेजस्विता और बलदर्पके कारण कोई स्पष्ट रूपसे सिंहासनपर अधिकार जमानेके लिये अग्रसर न होता था। अतः सिकन्दरने अपनी बीस वर्षकी अवस्थामें ३३६ ई० पू० में बिना किसी तरद्दुदके सिंहासनपर अधिकार जमा लिया। उसने अपनी वाक-चातुरीसे एशिया-विजयके लिये वद्ध-परिकर सैन्य तथा अन्यान्य धनीमानी पुरुषोंको अपने दलमें मिला लिया। सब मन ही मन सिकन्दरका यह गुण देखकर प्रसन्न हुए और विचारने लगे कि मसिडोनियाके गौरव और कार्यमें किसी प्रकारका परिवर्त्तन न होगा।

जिस समय सिकन्दरने सिंहासन ग्रहण किया ; उसी समय से उसे अपने राज्यके चारों ओर अशान्तिके चिन्ह दिखाई देने लगे। फ़िलिपने जिस असभ्य जातियोंको पराजित कर वशीभूत किया था ; वे विद्रोही बन बैठीं। थेब आदि प्रदेश मसिडोनियाका अधिकार न मानकर स्वतन्त्र हो जानेकी चेष्टा करने लगे। सिकन्दरने यह समाचार सुनते ही उनपर आक्रमण कर दिया और इस तरह उन्हें ध्वंस करना आरम्भ किया कि फिर किसीका माथा उठानेका साहस न हुआ। यह युद्ध डैन्यूब तटपर हुआ था। जिस समय सिकन्दर डैन्यूब तटपर असाधारण वीरता दिखा रहा था ; उस समय एकाएक यह समाचार फैल गया कि सिकन्दर मारा गया। यह समाचार सुनते ही कितने ही सिकन्दरकी अधीनता त्यागकर स्वतन्त्रता प्राप्त करनेके लिये तय्यार हो गये। इनमें थेब प्रदेश भी था।

थेब (Thebe) के विद्रोही बननेका समाचार सुनते ही सिकन्दरने डैन्यूबतट छोड़ देना उचित समझा। वह जानता था कि इस समय ग्रीसकी जो अवस्था हो रही है ; उससे कोई सहजमें ही उसका पक्ष ग्रहण न करेगा। स्पार्टा तो उसके विरुद्ध था ही। ऐथेन्सवासी उसके पक्षमें रहनेपर भी मन ही मन जल रहे थे। सिकन्दरको भय था कि कहीं समस्त ग्रीस एक पक्षमें होकर उसके विरुद्ध शस्त्र धारण न करे। अतः वह डैन्यूबतटको छोड़कर पहाड़ी राहसे एक सप्ताहके भीतर ही इलीरिया (Ellyria) से थेब जा पहुँचा। थेबमें विद्रोहियोंके प्रधान नेता

फ़ानिक्स और प्रोथाइटिस थे। सिकन्दरने इन दोनोंको मांगा। परन्तु यद्यपि थेबवासियोंने उन्हें देना स्वीकार कर लिया ; परन्तु वास्तवमें वे उन दोनोंको देना न चाहते थे। उन्होंने स्वाधीनता-का दुहाई देकर और भी कितने ही मनुष्योंको अपने दलमें मिला लिया।

अब उनमें और सिकन्दरकी सेनामें घोर युद्ध आरम्भ हुआ। यद्यपि थेबवासियोंने जीवनकी आशा त्यागकर पूर्ण बलविक्रमसे युद्ध किया ; परन्तु सिकन्दरकी सुशिक्षित युद्ध-निपुण सेनाके आगे वे अधिक क्षण ठहर न सके। सिकन्दरने थेबका इस तरह ध्वंस किया कि किसीके मकानतकका चिन्ह न रहा। सिकन्दर-की क्रोधाग्निमें दश हज़ारके लगभग योद्धा स्वाहा हो गये और लगभग तीन हज़ारके वन्दी हुए, जो गुलाम बनाकर बेच डाले गये। सिकन्दरकी सेनाके अत्याचार और अविचारकी सीमा न रही। सिकन्दरकी सेनाने थेबकी एक धनवती रमणीका धन रत्न लूट लिया। अन्तमें उस सैन्यदलके सेनानायकने उसका सतीत्व रत्न नष्ट किया। इतनेपर भी उसे सन्तोष न हुआ और वह फिर उससे धन पानेकी आशासे उसे कष्ट पहुँचाने लगा। नगरमें सिकन्दरका अधिकार होनेके पहले ही उस स्त्रीने अपने बागके एक कूएमें अपना धन छिपा रखा था। अब उस स्त्रीने और भी अधिक अत्याचारके भयसे वह धन उसे बता दिया ; परन्तु जब वह धन निकालनेके लिये कूएमें उतरा तब उस रमणीने ऊपरसे कितने ही पत्थर मारकर उसे परलोक पहुँचा

दिया। सिकन्दरकी सेना यह दृश्य दूरसे देखती थी। वह यह दृश्य देख, उस स्त्रीको पकड़ कर सिकन्दरके पास ले गई। सिकन्दरने रमणीका मनोहर रूप देखकर उसका परिचय पूछा। उसने कहा,—"जो ग्रीसकी स्वाधीनताकी रक्षाके लिये सेनाका परिचालन कर चीरोनिया युद्धक्षेत्रमें तुम्हारे पिता फ़िलिपसे लड़े थे; मैं उसी थियोजिनिसकी बहन हूँ।"! सिकन्दरके मनमें न जाने किस तरह इस समय दया उत्पन्न हो गई, कि उसने उस रमणीको छोड़ दिया और उसके पुत्र उसे लौटा दिये। इस नगरके तीस हजार अधिवासी क्रीतदासके रूपमें १५ लाख ५ हज़ार रुपयेमें बेचे गये थे। इसके अतिरिक्त दस पाँच मनुष्य वहाँ ऐसे भी थे, जिन्होंने सिकन्दरकी दया और सम्मान प्राप्त किया था। सब देशोंमें ही स्वार्थपर मनुष्य हैं। थेव-भूमि बाख्य्दिनिस और हरक्यूलिसकी जन्मदाता होनेपर भी कापुरुषोंसे शून्य न थी।

जिनलोगोंने थेबवासियोंको विद्रोही बननेके लिये उसकाया था, वे उसका भयानक ध्वंस सुन विचलित हो उठे; बल्कि साथ ही साथ उन्हें यह चिन्ता भी उत्पन्न हो गई, कि कहीं उनकी भी यही दशा न हो। बस, इसी कारणसे फिर कोई सर उठानेका साहस न कर सका। इसी समयसे राजभक्त दलका आविर्भाव होना आरम्भ हो गया। जिन आर्केडियनोंने थेबकी सहायताके लिये अपनी सेना भेजी थी, वे ही इस समय विश्वासघातकर उन सहायता देनेवालोंको प्राणदण्ड देने लगे। एथेन्सवासियोंने

भयसे सिकन्दरकी खुशामदके लिये अपना दूत भेजा और उसकी कुशल पूछी। सिकन्दरने इन दुर्घटनाओंका कारण डिमस्थिनिस प्रभृति वक्ताओंको ही समझा और उन्हें भेज देनेके लिये पत्र लिखा। फिर बड़ी कठिनता और एथेन्सवासियोंके बहुत कुछ प्रार्थना करने पर उन्हें क्षमा कर दिया।

इस तरह २१ वर्षके एक बालकके प्रतापसे समूचा ग्रीस अस्थिर हो गया। उसी समयसे वह असाधारण प्रतिभा-सम्पन्न मनुष्य समझा जाने लगा। वह शत्रुको कभी विचार करनेका समय न देता था। एकाएक आक्रमण करना उसका मूल-मन्त्र था।

सिकन्दरकी वासना सफल हुई। थेबका दण्ड देखकर समस्त ग्रीस सिकन्दरकी शरणमें आ गया। सभी सिकन्दरका सम्मान करने लगे। फिर कोरिन्थ (Corinth) में ग्रीसकी जातीय महासभाका अधिवेशन हुआ। इस सभामें इक्कीस वर्षकी अवस्थाका सिकन्दर समस्त ग्रीसकी सेनाका सेना-नायक नियुक्त हुआ। इस सभामें ग्रीसके प्रत्येक राज्यके प्रधान प्रधान पुरुषोंके अतिरिक्त प्रसिद्ध दार्शनिक, पण्डित और राजनीतिज्ञगण भी सिकन्दरकी अभ्यर्थनाके लिये आये थे। स्वार्थवश ही ये उस समय सिकन्दरके इतने भक्त बन गये थे। ठीक इसी समय एक दूसरा तत्वदर्शी महापुरुष कोरिन्थके किनारे बैठकर भगवद् चिन्ता कर रहा था। इस साधु-पुरुषका नाम डायोजिनिस था। सिकन्दरने समझा था, कि वह भी उसकी सम्बर्द्धनाके लिये

उसके पास जायगा ; परन्तु सिकन्दरकी यह आशा फलवती न हुई। अन्तमें सिकन्दरको स्वयं ही उसके पास जाना पड़ा। जिस समय सिकन्दर डायोजिनिसके पास गया, उस समय वे धूपमें बैठे थे। सिकन्दरने बड़ी श्रद्धासे उनसे बातें कीं और उनसे पूछा कि आपकी कौन सी इच्छा पूरी करूँ। उस साधुने इतना ही कहा, कि कृपाकर धूप रोककर न खड़े हों। उस साधुका व्यवहार देखकर सिकन्दरके साथियोंने उसे परम मूर्ख समझा था ; परन्तु सिकन्दरने उसी समय कहा, कि यदि मैं सिकन्दर न होता तो डायोजिनिस ही बननेकी चेष्टा करता। ऐसा ही होता है। स्पृहा-शून्य पुरुषोंके लिये जगतका ऐश्वर्य तृणके समान होता है। अतः डायोजिनिसके लिये सिकन्दरकी कृपा तृणके समान हुई तो आश्चर्य्य ही क्या है।

४

युद्ध-यात्रा
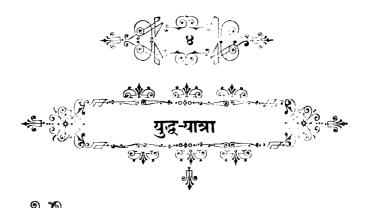
जिस समय सिकन्दरको उसका पैतृक सिंहासन प्राप्त हुआ उस समय उसके पास केवल साठ टैलेण्ट और कुछ चांदीके वरतन प्राप्त हुए थे। साथ ही पाँच सौ टैलेण्ट-का पैतृक ऋण भी प्राप्त हुआ था। यदि कोई दूसरा मनुष्य इस अवस्थामें सिंहासन पाता और सिकन्दरकी भाँति ही उसके चारों ओर शत्रु उमड़ पड़ते तो वह किंकर्त्तव्य विमूढ़ हो जाता। परन्तु सिकन्दरने इस समय अच्छी बुद्धिमत्ताका परिचय दिया। उसने एथेन्सवासियोंकी स्वाधीनतापर हस्तक्षेप न किया और न डिमस्थिनिस आदि वक्ताओंको ही कोई दण्ड दिया। इतने पर भी एथेन्सवासी फारिसवासियोंसे मिलकर उसका नाश करनेकी चेष्टा बराबर ही करते रहे।

कोरिन्थकी महासभासे सिकन्दर अपनी राजधानीमें लौट आया और फ़ारिसपर आक्रमण करनेका उद्योग करने लगा। ३३४ ई० पू० के प्रथम भागमें ही सिकन्दर आक्रमणके सब सामानोंसे सुसज्जित हो गया। उसने ऐण्टिपिटर नामक एक मेधावी मनुष्यको मसिडोनिया और ग्रीसके तत्त्वावधारकके पदपर नियुक्त किया और स्वयं फारिसकी ओर प्रस्थान करनेकी चेष्टा करने लगा। सिकन्दरके पास इस समय जितना सैन्य अथवा अर्थबल था, वह उस कामकी तुलनामें कुछ भी न था, जिसके लिये वह चला था। उसके पास इस समय सेनाका एक मासका खर्च भर था। किसी किसीका यह मत है, कि दो सौ टैलेण्ट उधार लेकर वह एशिया विजयके लिये रवाना हुआ था। कुछ हो, इतना अवश्य ही मानना पड़ेगा, कि उसके पास महीने दो महीनेका ही खर्च था। उसके पास सेना भी ३० से ३४ हज़ार पैदल तथा ५ हज़ार घुड़सवार थी, परन्तु उसके हृदयमें असाधारण बल था। यही बल लेकर सिकन्दर एशिया-विजयके लिये चल पड़ा था। फारिसके राजाके पास धनबल तथा अर्थबल विशेष रहनेपर भी हृदय-बलकी कमीके कारण वे सिकन्दरसे पराजित हो गये थे। यदि उनमें हृदयबल रहता तो इन मुट्ठीभर वीरोंको एक फुंकारमें उड़ा दे सकते थे। हृदयमें बल न रहनेपर मनुष्य पशुकी अपेक्षा भी अधम हो जाता है।

सिकन्दरने अपनी यात्राके पहले अपने राज्यका बहुत सा अंश सैनिकोंको बाँट दिया। यह देख, सिकन्दरके एक सैनिकने

पूछा—"आपने सब तो बाँट दिया। अपने लिये क्या रख छोड़ा है?"

सिकन्दरने कहा—"आशा।"

वह सैनिक यह उत्तर सुनकर स्तब्ध हो गया। कुछ देर बाद बोला,—"इस युद्ध-यात्रामें हमलोग भी आपके साथ ही साथ सुख दुःखके भागी हैं; अतः हमलोगोंको भी अपनी आशाका साझीदार बनाइये।"

वास्तवमें सिकन्दर आशादेवीका एकनिष्ठ भक्त था। यदि भक्त न रहता तो इस तरह सब जगह विजय न प्राप्त कर सकता। सिकन्दर अपने साथ जो सेना और जितना अर्थबल लेकर इस एशिया विजयके लिये चला था, उससे कहीं अधिक सेना केवल फ़ारिसके शाहके पास थी। फ़ारिसके राजाका नौबल उस समय बहुत ही बढ़ा-चढ़ा था। इसके विपरीत सिकन्दरका नौबल एक प्रकारसे नहीं-सा ही समझना चाहिये। यदि फ़ारिसवासी इच्छा करते तो अनायास ही मसिडोनिया पर आक्रमणकर सिकन्दरको पराजित कर सकते थे; परन्तु यह उनसे न हो सका।

सिकन्दर जब फ़ारिस विजयके लिये चला है, उस समय कितने ही मनुष्योंने उसे कुछ दिन और भी ठहर जानेके लिये कहा। इसका कारण यह था, कि उस समय तक सिकन्दरको कोई सन्तान न हुई थी। यदि दैवी घटनासे सिकन्दर युद्धमें मारा जाता तो सिंहासनका अधिकारी कोई नहीं रह जाता। इसी कारणसे सब उसे ठहर जानेके लिये कहते थे; परन्तु

सिकन्दरने इन युक्तियोंपर बिल्कुल ही ध्यान न दिया। वह अपने स्वार्थकी ओर ध्यान न देकर स्वदेशका गौरव बढ़ानेके लिये चल पड़ा। उस समय स्त्री-पुत्रकी चिन्ता क्षणभरके लिये भी सिकन्दरको कर्त्तव्य-पथसे न हटा सकी। सिकन्दर ऐण्टि-पिएटरके हाथमें राज्यकी रक्षाका भार दे, बारह हज़ार पैदल और डेढ़ हज़ार अश्वरोही सैन्यके साथ एशिया विजयके लिये रवाना हो गया।

इक्कीस दिवसका पथ पारकर सिकन्दर बाईसवें दिवस हेलिसपौण्ट या डार्डेनेलीसकी तट-भूमिपर जा पहुँचा। इसकी लम्बाई लगभग ४० मील और चौड़ाई पौने चारसे साढ़े चार मील होगी। इसका किनारा ऊँचा न रहनेके कारण पार उतरनेमें किसी प्रकारकी असुविधा न थी। जहाँ पुल बनाकर फ़ारिसके जरेक्ससने युरोपपर आक्रमण किया था, सिकन्दर भी उसी स्थानसे एशियामें जा पहुँचा। चौदहवीं शताब्दिमें एशियावासियोंने यही स्थान पारकर युरोपवासियोंको परास्त किया था और युरोपीय भूमिपर अधिकार जमाया था। इसी कारणसे यह स्थान बड़ा ही प्रसिद्ध हो रहा है।

डार्डेनेलीस तटपर सिकन्दरने पहले युरोपकी अधिष्ठातृ देवीका पूजन किया और फिर सेना लेकर आगे बढ़ा। समुद्र पार करनेके लिये वह १६० जंगी तथा कितने ही व्यापारी जहाज़ अपने साथ ले गया था। इन जहाज़ोंमें बीस जहाज़ सिकन्दरको प्रसन्न करनेके लिये एथेन्स राज्यने भी दिये थे। सिकन्दर परमिनीपर सैन्य-परिचालनका भार देकर स्वयं ट्राय नामक स्थानमें

प्राचीन योद्धाओंकी समाधि-भूमि देखनेके लिये चला गया। यहाँ उसने एचिलिसकी समाधिका दर्शनकर उसकी पूजा की। ट्रायके जिस मकानमें प्राचीन योद्धाओंके शस्त्र रखे थे, उसमें सिकन्दरने अपना भी एक शस्त्र रख दिया और कुछ प्राचीन शस्त्र वहाँसे ले भी लिये। ये शस्त्र एक मनुष्य सिकन्दरकी सेनाके आगे आगे लेकर चलता था। इससे उसके अनुयायी समझते थे, कि सिकन्दर भी प्राचीन योद्धाओंकी भाँति ही अजेय है और वे स्वर्गीय योद्धा युद्धके समय उसकी रक्षा किया करते हैं।

अभी सिकन्दर उस स्थानसे आगे भी न बढ़ा था और वहीं ठहरकर प्राचीन योद्धाओंकी कीर्त्तिकथा स्मरण कर उनका ही अनुसरण करनेका बाँधनू मन-ही-मन बाँध रहा था, कि एकाएक उसे समाचार मिला कि ग्रेनिकस नाम्नी एक छोटी नदीके दूसरे तटपर फ़ारिसकी सेना युद्धके लिये आ पहुँची है।

फ़ारिसवासियोंके पास युद्धके उपकरण प्रचुर परिमाणमें उपस्थित रहनेपर भी, ऐसे ढङ्गसे वे राज्य कर रहे थे, कि सिकन्दर सेना सहित डार्डेनेलीसमें जा पहुँचा और उनलोगोंको खबर तक न लगी। यदि पहलेसे उन्हें यह समाचार मिला होता तो वे समुद्र तटपर ही सिकन्दरको रोक सकते थे। परन्तु यह न हो सका। जब शत्रु-सैन्य डार्डेनेलीसमें जा पहुँची तब उनलोगोंको समाचार मिला। अब इस विषयपर विचार होने लगा, कि सिकन्दरसे किस ढङ्गसे युद्ध करना चाहिये और किस तरह उसकी सेनाको आगे न बढ़ने देना चाहिये। इसमें भी दो मत

हो गये। एक पक्षका कथन था, कि शत्रु-सेनाकी राहमें जो गाँव पड़ते हैं, वे जला दिये जायें और जलाशय विषाक्त कर दिये जायें। इस तरह शत्रु-सेना जब क्षुधा पिपासासे व्याकुल हो उठे, तब उसपर आक्रमणकर उसे नष्ट कर डाला जाये। परन्तु दूसरे पक्षवाले कहते थे, कि नहीं, अपने हाथों अपनी प्रजाको कष्ट न पहुचाया जाये। यदि हमलोग ही प्रजाको कष्ट पहुँचायँगे तो उनकी रक्षा कौन करेगा? इसी तरह बहुत कुछ वाद-विवाद होनेपर भी दूसरे पक्षकी ही जीत रही। उस समय फ़ारिसकी सेना भी कम न थी। ऐतिहासिक एरियनका कथन हैं, कि उनके पास लगभग बीस हज़ार पैदल और इतनी ही घुड़सवार सेना थी। ड्यूडोरस सिकुलस नामक ऐतिहासिकका कथन है, कि ग्रेनिकस तटपर फ़ारिसकी दस हज़ार घुड़सवार और एक लाख पैदल सेना थी। ऐतिहासिक यस्टिन और भी बढ़ गये हैं। उनका कथन है, कि सब मिलाकर छः लाख सेना सिकन्दरको बाधा पहुचानेके लिये ग्रेनिकस तटपर एकत्रित थी। इसमें कोई सन्देह नहीं, कि इन सबमें अत्युक्ति भरी है और केवल युरोपवासियोंके बाहुबलको दिखानेके लिये ही यह अत्युक्ति कही गई है। परन्तु कुछ भी हो, यह मानना ही पड़ेगा, कि फ़ारिसकी सेना कम न थी। सिकन्दर यह समाचार सुनते ही उसी दिवस उस सेनापर आक्रमण करनेके लिये तैयार हो गया। सिकन्दरके अन्यतम सेनापति परमिनीकी राय थी, कि शत्रु पर इतना शीघ्र आक्रमण न किया जाये; परन्तु सिकन्दरने उसकी बात न मानकर कहा,

कि जो बिना किसी वाधाके इतना बड़ा समुद्र पारकर यहाँतक आ पहुँचा ; उसकी गति एक सामान्य नदी नहीं रोक सकती। इसके अतिरिक्त यदि हमलोग रुक जायँगे और फ़ारिसवासियोंके हृदयसे हमलोगोंका भय दूर हो जायगा, तो फिर विजय प्राप्त करनेमें वाधा आ पड़ेगी। अतः एकाएक आक्रमण कर देना ही उचित है।

फ़ारिसवासी लगभग दो सौ वर्षोंसे ग्रीसवासियोंपर बराबर आक्रमण कर उन्हें तङ्ग कर रहे थे। ग्रीसवासियोंकी युद्धनीतिसे वे बहुत कुछ परिचित हो गये थे। अतः वे बालक सिकन्दरके भयसे भागे नहीं। इसके अतिरिक्त फ़ारिसकी सेनामें ग्रीससे भाड़ेपर ली हुई सेना भी सम्मिलित थी। फ़ारिसकी जो सेना ग्रेनिकसके तटपर सिकन्दरकी गति रोकनेके लिये खड़ी थी, उसके पीछे ही एक पहाड़की तराईमें वह ग्रीक सेना भी ओमरिस नामक एक सेनापतिकी अध्यक्षतामें सिकन्दरसे युद्ध करनेके लिये तय्यार खड़ी थी।

सिकन्दरने अपनी सेनाको आठ भागोंमें विभक्त कर डाला। इसके प्रत्येक भागमें लगभग दो हज़ार सेना एक सुदक्ष सेनापतिकी अधीनतामें थी। ये आठ सेनापति कभी मिलकर, कभी अलग अलग काम करते थे। प्रत्येक भागकी दो हज़ार सेना दो रेजिमेण्टोंमें विभक्त रहती थी। उसका नायक भी दो मनुष्य रहता था। प्रत्येक रेजिमेण्ट भी दो दलोंमें विभक्त होकर दो सेनापतियों द्वारा परिचालित होता था। इसका प्रत्येक दल फिर

आठ छोटे छोटे दलोंमें विभक्त रहता था और आठ मनुष्यों द्वारा परिचालित होता था। सब सेना दो भागोंमें विभक्त रहती थी। सिकन्दर विशेषकर सेनाके दाहिने भागमें रहता और उसका परिचालन करता था। युद्धक्षेत्रके अनुसार यह सेना कभी दाहिने कभी बायें भागमें रखी जाती थी। सेनापति परमिनो बायें भागमें रहकर सैन्य-परिचालन करता था।

इस तरह सेना सज्जितकर युद्ध आरम्भ हुआ। पहले दोनों दलोंकी सेना दोनों पक्षोंको कुछ देरतक देखती रही। इसके बाद सिकन्दरकी सेना नदीमें उतर पड़ी। रण-दमामे बज उठे। इस समय कापुरुषोंमें अस्थायी उन्मत्तता उत्पन्न हो गई। जिधर फ़ारिसकी सेना सिकन्दरसे युद्ध करनेके लिये दृढ़तासे खड़ी थी, सिकन्दर अपनी सेना सहित उधर ही चला। फ़ारिसवासी नदीके दूसरे तटसे सिकन्दरकी सेनापर कितने ही शस्त्र फेंकने लगे। इधर मसिडन सेना भी बड़ी बड़ी ढालोंसे अपनी रक्षा करती हुई, २४ फीट लम्बे बर्छोंके द्वारा फ़ारिसकी सेनापर आक्रमण करने लगी। सिकन्दरने बड़े वेगसे सबसे आगे बढ़कर फ़ारिसकी सेनापर आक्रमण किया। अबतक जो मसिडन सेना इधर उधर कर रही थी, वह भी अपने स्वामीको शत्रु-सैन्यके सम्मुख उपस्थित होते देख वज्रकी भाँति फ़ारिसकी सेनापर टूट पड़ी। इस युद्धके समय फ़ारिसवासियोंके घोरतर आक्रमणसे सिकन्दरके शस्त्र टूट गये। इसी समय एक फ़ारिस सैनिकने सिकन्दरका सर धड़से अलग कर देनेके लिये तलवार उठाई। सम्भव था, कि

उसी दिवस सिकन्दर संसारसे विदा हो जाता ; परन्तु उसके क्लीतस नामक एक सहचरने उसको मारकर अपनी स्वामीकी रक्षा की।

ग्रीक सेनाकी तेज़ी, कष्ट-सहिष्णुता, शूरता और वीरताके प्रभावसे सिकन्दरने फ़ारिसकी सेनाको स्थानच्युत कर दिया। उसे लाचार होकर समतल भूमिमें जाना पड़ा। इसी बीचमें ग्रीकसेनाने नदी पारकर बड़े वेगसे फ़ारिसकी सेनापर आक्रमण किया। फ़ारिसकी सेना किसी तरह भी उनकी गति न रोक सकी। लम्बे लम्बे भालोंकी चोटसे फ़ारिसके घोड़े और अश्वारोही विचलित हो उठे। सिकन्दरके भीषण आक्रमणसे फ़ारिसकी सेनाका मध्यभाग विकल हो, भाग चला। इनकी दुर्बलतासे फ़ारिसकी सेना और भी दुर्बल हो गई। फिर वह किसी तरह युद्ध-क्षेत्रमें खड़ी न रह सकी। वह धीरे धीरे भागने लगी। अब सिकन्दरने उस सेनापर आक्रमण किया जो फ़ारिसवासियोंने ग्रीससे भाड़े पर ली थी। आकाशके मेघ जिस तरह थोड़े ही समयमें नाना प्रकारके रूप दिखाते है ; उसी तरह कितने ही रूप दिखाकर फ़ारिसकी सब सेना भाग चली। इन स्वदेशद्रोही ग्रीकोंको सिकन्दरने कठोर दण्ड दिया। केवल वे ही अपना प्राण बचा सके जो मुर्दों में जा छिपे थे। जो जीते बच गये, उन्हें पकड़कर लोहेकी जंजीर पहना, सिकन्दरने मसिडोनिया भेज दिया। सिकन्दरने यही दिखानेके लिये कि स्वजाति और स्वदेश द्रोहियोंकी क्या दशा होती है, उन्हें इस तरह मसिडोनिया भेज दिया था।

युद्धके प्रथम भागमें यद्यपि विजय-श्री फ़ारिसवासियोंकी ओर ही दिखाई देती थी; परन्तु अन्तमें वह सिकन्दरकी ओर पलट पड़ी। सिकन्दरके उदाहरणसे उत्साहित होकर उसके सैनिक और सेनापतियोंने मृत्युभयको त्यागकर, जिस तरह प्रवल वेगसे युद्ध किया था, उसी तरह दृढ़तासे यदि फ़ारिसकी सेना भी युद्ध करती तो मसिडन सेना कभी नदी पार होकर सूखी भूमिपर पहुँच भी न सकती थी; परन्तु फ़ारिसकी सेना सिकन्दरके नामसे ही विचलित हो उठी और उसीका यह भीषण परिणाम हुआ।

सत्यप्रिय यूरोपीय ऐतिहासिकोंका कथन है, कि इस घोरतर युद्धमें सिकन्दरके २५ सहचर, ६० घुड़सवार और ३० पैदल सिपाही मारे गये थे। प्लूटार्कका कथन है, कि फ़ारिसकी सेनाके २० हज़ार पैदल और अढ़ाई हज़ार घुड़सवार मारे गये। ड्यूडोरसका मत है, कि फ़ारिसकी सेनाके दस हज़ार पैदल तथा दो हज़ार घुड़सवार सैनिक परलोक सिधारे और एरियन कहते हैं, कि दो हज़ारके अलावा सब पैदल सेना और एक हज़ार घुड़सवार सेना परलोक सिधारी। इसमें कोई सन्देह नहीं, कि यूरोपीय लेखकोंने इसे अतिरञ्जित किया है।

युद्धमें विजय प्राप्त करनेके साथ ही साथ सिकन्दरके भाग्यने भी पलटा खाया। उसका शून्य धनागार परिपूर्ण हुआ। दुर्भिक्ष सुभिक्षमें परिणत हुआ। अबतक जो उसे बाधा देनेके लिये तय्यार थे, वे ही उसे धनजन देकर परितुष्ट करने लगे। इस

तरह थोड़े ही दिनोंमें उस प्रदेशपर अधिकार जमाकर, उसने शासन करना आरम्भ किया। राज्य-परिवर्त्तन अवश्य हुआ ; परन्तु शासन नीतिमें कुछ भी परिवर्त्तन न हुआ ; क्योंकि सिकन्दरने उसी प्रदेशकी शासन नीतिके अनुसार सुशासनका प्रबन्ध किया था। प्रजाको यह भी न मालूम हुआ, कि वे फ़ारिसके राजाके बदले किसी दूसरे देशके राजाकी अधीनतामें जा पड़े हैं। वही प्रजा उसके लिये रसद्का प्रबन्ध करने लगी। सिकन्दरको अब किसी प्रकारका अभाव न रह गया। विजय प्राप्तिके कारण वह और भी अधिक उत्साहसे कार्य्यक्षेत्रमें अग्रसर हुआ।

सिकन्दरने इस युद्धमें जैसा उत्साह दिखाया था, उसकी सेनाने जिस तरह प्राणोंकी ममता त्यागकर अपने देशका गौरव बढ़ाया था और उसके सेनापतियोंने रणदक्षताका जैसा परिचय दिया था, उससे शीघ्र ही सिकन्दरका नाम चारों ओर गूंज उठा। सिकन्दरने इस युद्धमें जो अस्त्र शस्त्र प्राप्त किये थे तथा जो सम्पत्ति उसके हाथ लगी थी, उसका अधिकांश स्वदेशमें भेज दिया और लिख दिया, कि स्पार्टावासियोंके अतिरिक्त समस्त ग्रीसवासियोंको असभ्य लोगोंका यह धन समर्पित हैं।

सिकन्दरके पास लाइसियस नामक एक बड़ा ही सुदक्ष मूर्त्तिकार था। सिकन्दरने इस मूर्त्तिकारसे अपने मृत सहचरोंकी मूर्त्तियां बनवाकर उनका गौरव बढ़ानेके लिये स्वदेशमें भेज दिया। ये मूर्त्तियाँ मसिडोनियाके एक मन्दिरमें रखी गईं। इस तरह सिकन्दर अपने सैनिकोंका गौरव बढ़ाकर फिर कार्य-क्षेत्रमें अग्रसर हुआ।

यद्यपि आज कालक्रमसे वे मूर्तियाँ नष्ट भ्रष्ट हो गई है और अब उनका पता भी नहीं है, तथापि अभीतक प्रत्येक ग्रीसवासी-के हृदयमें उनका गौरव विद्यमान रहकर, उनकी देशसेवाकी घोषणा कर रहा है।

फ़ारिसपर आक्रमण
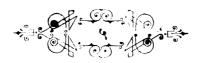
ग्रेनिकसमें सिकन्दरको विजय प्राप्त करते देख ग्रीकोंकी आँखें खुल गईं। वे अब अपनी स्वतन्त्रताके लिये उद्योग करने लगे। सिकन्दर अब लीडियाकी ओर चला। उसने परमिनीको दूसरी ओरके निकटवर्त्ती दुर्ग तथा अन्यान्य स्थान विजय करनेके लिये भेज दिया। परमिनीने भी बड़ी वीरतासे कितने ही स्थानोंको विजयकर सिकन्दरकी कीर्त्ति बढ़ाई।

अभी सिकन्दर लीडियासे साढ़े चार कोसकी दूरीपर ही था कि वहाँके दुर्ग रक्षकने बहुत-सा धनके साथ दुर्ग भी सिकन्दरको अर्पण कर दिया। दुर्ग-रक्षक अपने सम्मान अथवा स्वतन्त्रताकी ओर भ्रूक्षेप न कर, सिकन्दरके पैरोंपर लोट पड़ा। सिकन्दरने भी दुर्ग-रक्षककी बड़ी ख़ातिर की और लीडियाके अधिवासियोंका

भी बड़ा सम्मान किया। सिकन्दरने इस सुदृढ़ दुर्गमें ही अपनी सेना रख, वहाँका शासन-प्रबन्ध कर इफिसुसकी ओर यात्रा की।

सिकन्दरका इफिसुसकी ओर अग्रसर होनेका समाचार सुनते ही इफिसुसके रक्षक तथा वे ग्रीक जो सिकन्दरके विरोधी थे, वहाँसे भाग चले। उनके भागते ही फ़ारिसवासियोंके विरोधी ग्रीकगणने फ़ारिस शासनके पक्षपाती ग्रीकोंपर अत्याचार करना आरम्भ किया ; परन्तु सिकन्दरने ठीक अवसरपर उपस्थित होकर उनकी रक्षा की। उसने इस समय ऐसा सदय व्यवहार दिखाया कि शत्रु मित्र सभी उसके भक्त बन गये। सिकन्दरने इफिसुस-वासियोंको साधारण तन्त्रके अनुसार शासन करनेका अधिकार दे दिया।

इफिसुसकी आर्त्तिमिस या डियाना नाम्नी देवी बड़ी ही विख्यात थीं। जिस रातमें सिकन्दरने जन्म ग्रहण किया था ; उसी दिन रात्रिके समय हिरोस्त्रास नामक एक मनुष्यने इस डियाना देवीके मन्दिरमें आग लगा दी थी। डियाना देवी स्वयं असती थीं ; परन्तु युरोपीय सतीत्वकी रक्षा करनेके कारण इनकी बड़ी कीर्त्ति हो रही थी। डियाना देवीके कितने ही प्रेमी थे। इन्होंने विवाह न किया था। ये पुरुषोंके वस्त्र पहनकर जङ्गलोंमें शिकार खेलती थीं। डियाना देवीके मन्दिरकी दुरवस्था देखकर सिक-न्दरने उसकी मरम्मत करानेका विचार किया ; परन्तु इफिसुसके अधिवासियोंने उसे रोका और कहा, कि क्या देवता भी कहीं देवताके मन्दिरका पुनः संस्कार करते हैं। कुछ भी हो, सिकन्दरने

अपने प्रसिद्ध शिल्पी डियूक्रेटस द्वारा यहाँ एक अद्भुत मन्दिर बनवाया। इसके बाद ही सिकन्दर पर लोगोंकी भक्ति इतनी बढ़ी, कि उस प्रदेशके कितने ही स्थान जो फ़ारिसवासियोंके अधिकारमें थे, उसे विना युद्धके ही प्राप्त हो गये।

सिकन्दर अब मेलिटसकी ओर चल पड़ा। सिकन्दरके आगमनकी खबर पाते ही मेलिटसका रक्षक घबड़ा उठा। वह नगर समर्पण करनेकी इच्छासे सिकन्दरसे पत्र-व्यवहार करने लगा। अभी इन दोनोंका पत्र-व्यवहार हो ही रहा था, कि मेलिटसके रक्षकको समाचार मिला, कि उसकी सहायताके लिये चार सौ जहाज़ आ रहे हैं। उस समय फ़ारिसपति दाराका नौबल बहुत बढ़ा चढ़ा था। इन जहाज़ोंके आगमनका समाचार सुनते ही नगर-रक्षकने नगर समर्पण करनेका विचार त्याग दिया और युद्धकी तैयारियाँ करने लगा।

इधर सिकन्दरने भी यह समाचार पाते ही अपनी सेनाको नगरपर आक्रमण करनेकी आज्ञा दे दी। उसकी सेनाने नगरके बाहरी भागपर अनायास ही अधिकार जमा लिया। इसके अतिरिक्त फ़ारिसके जहाज़ोंके आनेके पहले ही ग्रीसके नौ-सेनापतिने मेलिटसके निकटवर्त्ती एक टापूपर अपना अधिकार जमा लिया। सिकन्दरने थोड़े अश्वारोही उसकी सहायताके लिये भी भेज दिये। ये वहाँ जाकर इस बातका प्रबन्ध करने लगे, कि फ़ारिसका बेड़ा बन्दरपर न आने पाये।

यद्यपि सिकन्दरके सेनापतियोंने सिकन्दरको जल-युद्ध करनेके

लिये बड़ा ज़ोर दिया, परन्तु सिकन्दर उनकी बातोंपर ध्यान न देकर नगरका घेरा डालकर बैठ गया। यह दशा देख मेलिटसके अध्यक्षने एक धनी मनुष्यको नगर समर्पण करनेका प्रस्ताव लेकर सिकन्दरके पास भेजा। सिकन्दरने उसे लौटा दिया और कहला भेजा, कि कल सवेरेसे ही नगर पर आक्रमण होगा। बात ऐसी ही हुई भी। दूसरे दिन सवेरेसे ही प्राचीर ध्वंस करनेवाले यन्त्रोंकी सहायतासे नगरपर आक्रमण होने लगा। इधर तो सिकन्दरने नगरपर आक्रमण किया, उधर ग्रीक जहाज़ोंने फ़ारिसके जहाज़ोंसे युद्ध आरम्भ किया। जल-स्थल दोनों ही ओरसे घिर जानेके कारण मेलिटसके नागरिक बड़ी विपत्तिमें जा पड़े। फ़ारिसका पक्ष लेकर लड़नेवाली ग्रीकसेना भाग चली। उस सेनाके अधिकांश सिपाही मसिडनोंके हाथों परलोक सिधारे। सिकन्दरने शहर पनाहकी दीवार तोड़ डाली और उसी राहसे नगरमें घुसकर उसपर अधिकार जमा लिया। इसके बाद भागती हुई फ़ारिसकी सेनापर सिकन्दरके सैनिकोंने आक्रमण किया। वह सेना लौट पड़ी और इस बार खूब जमकर युद्ध हुआ। पर विजय सिकन्दरकी ही हुई, सिकन्दरने विपक्षी सैनिकोंकी स्वामिभक्ति देखकर उन्हें क्षमा कर दिया और अपनी सेनामें नौकर रख लिया। इसके बाद नगरपर अधिकारकर सिकन्दरने नगर निवासियोंको स्वायत्त शासनका अधिकार दे दिया!

इसके बाद अपने जहाज़ोंसे कोई विशेष काम न निकलता देखकर सिकन्दरने वे सब जहाज़ नष्ट करा डाले।

यह समाचार सुनते ही दाराने प्रसिद्ध ग्रीक वीर मेमनको सेनापति नियुक्त कर युद्धके लिये आज्ञा दी। मेमनने हेलिकारनेसस (वर्त्तमान देवरूप) नामक स्थानके किलोंकी मरम्मत करा डाली और फ़ारिस तथा ग्रीक-सेनाका दल संग्रहकर सिकन्दरसे युद्धके लिये तैयार हो गया।

हेलिकारनेसस केरिया प्रदेशकी राजधानी थी। प्राचीन ऐतिहासिक हिरोडोटस और डियूनिसिसने यहीं जन्म ग्रहण किया था। इस स्थानके दुर्ग भी समुद्रके किनारे ही बने हुए थे। उनके पीछे गहरी खाई थी। इसकी रक्षा ग्रीस तथा फ़ारिसकी सेना करती थी। सिकन्दर मेमनके प्रधान सेनापति होने और सैन्य-संग्रहका समाचार सुनते ही उस ओर चल पड़ा और हेलिकारनेससके आध मीलकी दूरीपर शिविर स्थापनकर युद्धकी तैयारियाँ करने लगा। सिकन्दरने पहले उस खाईको जो दुर्गको घेरे हुए थी, मिट्टी भरकर पटवा डाला। इसके बाद काठकी सीढ़ियाँ लगा, मचान बाँधकर दुर्गपर आक्रमण करने लगा। दाराके पक्षके वीरगण भी किलेसे निकलकर कभी कभी बाधा पहुँचाने लगे। वे सिकन्दरकी सीढ़ीवाले स्थानोंमें आग लगा देते थे तथा ऊपरसे पत्थर मारकर ही सिकन्दरकी सेनाको नष्ट भ्रष्ट कर डालते थे।

यद्यपि किलेसे आक्रमण होनेके कारण सिकन्दरकी सेनाकी बहुत हानि हो रही थी, तथापि सिकन्दरके वीर सैनिक इस हानि-पर कुछ ध्यान न दे, प्रबल अध्यवसायसे आक्रमण करते जाते थे। उनके उद्योगसे कितने ही स्थानोंकी शहर पनाहकी दीवार

टूट गई थी। यद्यपि उस किलेके अधिवासी भी सावधान थे, तथा दीवार टूटते ही उस स्थानकी मरम्मत करा देते थे ; परन्तु नगरकी रक्षा करना उनके लिये अब असम्भव हो रहा था। उन-लोगोंने नगरकी रक्षाका कोई उपाय न देख, अन्तमें अपने ही हाथों कितने ही यन्त्र तथा युद्धके उपकरणोंमें आग लगा दी। साथ ही कितने ही मकान भी इस आगसे भस्म हो गये। उसके कुछ ही दिन बाद सेनापति मेमन भी रुग्ण होकर परलोक सिधार गये।

सिकन्दरने नगरपर अधिकार जमा लिया और अपने सेना-पतियोंको भेजकर अन्यान्य स्थानोंपर भी अधिकार जमानेकी चेष्टा करने लगा। इस समय विजय-लक्ष्मी सिकन्दरपर प्रसन्न हो रही थी। इसी कारणसे जहाँ सिकन्दर और उसके सैनिक जाते थे, वहीं विजय प्राप्त होती थी। एक बात और भी है। चरित्रबल भी मनुष्यके उद्यममें बहुत सहायता पहुचाया करता है। इस समय सिकन्दरका चरित्रबल बड़ा ही उज्ज्वल हो रहा था। ब्रह्मचर्य्य, नियमित आहार-विहार तथा आत्म-दमनके कारण उसका अध्य-वसाय बल बढ़ता जाता था और यही वास्तवमें उसकी विजय-प्राप्तिका प्रधान कारण था।

हेलिकारनेसस पर अधिकार जमाकर सिकन्दरने आदा नाम्नी एक गुणवती राज-कन्याको उसके सिंहासनपर बिठा दिया। किम्वदन्ती है, कि आदा सिकन्दरको अपने पुत्रके समान मानती थी और सिकन्दर भी उसे माता कहकर सम्बोधन करता था। आदा सिकन्दरसे बहुत ही स्नेह करती थी। अतः जब सिकन्दर

वहाँसे आगे बढ़नेके लिये प्रस्तुत हुआ, तब आदाने अपने कई सुदक्ष रसोइये उसको साथ ले जानेके लिये कहा ; परन्तु सिकन्दरने धन्यवाद सहित उन्हें लौटा दिया। इसके बाद आदाने सुन्दर सुन्दर बिछावन आदि भेजे ; परन्तु सिकन्दरने विलासकी सामग्रियाँ समझकर उसे भी लौटा दिया और आगे बढ़नेके लिये वहाँसे चल पड़ा।

इस समय जाड़ा पड़ना आरम्भ हो गया था। सिकन्दरने अपने उन सैनिकोंको जिनका विवाह हो गया था, स्वदेशको लौट जानेकी आज्ञा दे दी। इसमें उसके दो उद्देश्य थे। एक तो यह कि वे सैनिक अपने देशमें जाकर सिकन्दरकी कीर्त्ति-कथा और विजय-वार्त्ता सबसे कहते। इससे ग्रीसवासियोंके हृदयमें भय भी बना रहता और उसे सैनिक भी खूब प्राप्त होते। यही हुआ भी। स्वदेश-को लौटे हुए सिपाहियोंकी अवस्था, प्राप्त द्रव्य तथा सिकन्दरकी विजयवार्त्ता सुन अनेकानेक सैनिक सिकन्दरकी सेवामें सम्मिलित होनेके लिये तैयार हो गये। यह अवस्था आ पहुँची कि घरमें बैठे रहना कापुरुषका लक्षण समझा जाने लगा।

भयानक शीत भी सिकन्दरकी गति न रोक सका। वह एक स्थानको विजय कर तुरन्त ही दूसरे स्थानमें जा पहुँचता और उसे भी विजय कर लेता था। उसके आकस्मिक आक्रमणके कारण शत्रु हत-बुद्धि हो जाते और घबड़ाकर नगर समर्पण कर देते थे। साधनासे ही मनुष्य सिद्धि प्राप्त करता है। इस तरह प्रबल साधना द्वारा उसने तीस प्रधान नगरोंपर थोड़े ही दिनोंमें अधि-

कार जमा लिया। इनमें समुद्र तटके नगरोंकी संख्या ही अधिक थी। इन नगरोंपर सिकन्दरका अधिकार होनेके कारण फ़ारिसकी नौ-शक्ति बहुत ही कम हो गई थी। इस समय जो राजपुरुष सिकन्दरके शरणापन्न होते थे, उनके नगरपर अधिकार कर, सिकन्दर उनसे बड़ा ही सदय व्यवहार करता था।

जिस समय सिकन्दर फैसिलिस नामक नगरमें पड़ाव डाले हुए था, उस समय उसका नामराशि (अलेक्जैण्डर) एक सैनिक दारासे मिल गया। इसीने सिकन्दरके पिताकी हत्यामें सहायता पहुँचाई थी और इसी पुण्य-कार्यके लिये उसे उच्च पद प्राप्त हुआ था। इसने फ़ारिसके राजा दारासे मिलकर अब सिकन्दरपर भी हाथ साफ़ करनेका विचार किया। दारासे इसका पत्र व्यवहार हो रहा था। दाराने भी इसे कहला भेजा था, कि यदि वह किसी तरह सिकन्दरको इस लोकसे विदा कर दे, तो उसे मसिडोनियाका राज्य तथा एक हज़ार टैलेण्ट अर्थात् लगभग चालीस लाख रूपये दिये जायँगे। सम्भव था, कि लोभके वशीभूत होकर वह सिकन्दरको भी मार डालता; परन्तु यह पत्र लानेवाला सन्देहवश पकड़ लिया गया और इसी तरह यह भेद भी खुल गया। इसके बाद षड़यन्त्री अलेक्जैण्डर बड़ी निर्दयतासे इस लोकसे विदा किया गया।

इसके बाद सिकन्दरने फेसिलिससे पारगा नामक स्थानमें अपनी सेना भेज दी और स्वयं छोटी-सी सेना ले, समुद्र-तटवर्त्ती स्थानोंसे आगे बढ़ा। इस राहसे थोड़े ही समयमें वह पारगा

पहुँच सकता था। वह राह टेढ़ी मेढ़ी तथा विपद्-जनक रहनेपर भी सिकन्दर सौभाग्यवश बिना किसी बाधाके अपने निश्चित स्थानपर जा पहुँचा। राहमें जो जो नगर या गाँव पड़े उनपर सिकन्दर अधिकार जमाता गया। इसी तरह विजय करता हुआ सिकन्दर जब कृष्ण सागर (Black Sea) के किनारेके गरडियम नामक स्थानमें पहुँचा. उस समय वह सेना भी उससे आ मिली, जो विवाहित थी और जिसे उसने स्वदेश भेज दिया था। इस सेनाके साथ लगभग तीन हज़ार पैदल और छः हज़ार घुड़सवार सेना और भी आ पहुँची।

जिस समय सिकन्दर गरडियममें था, उस समय एथेन्सके राजदूतने उससे उन कैदियोंको छोड़ देनेकी प्रार्थना की, जिन्होंने फ़ारिसकी सेनामें सम्मिलित होकर युद्ध किया था; परन्तु सिकन्दरने इस भयसे उन्हें न छोड़ा, कि कहीं वे फिर शत्रु-दलमें न जा मिलें। परन्तु कुछ दिन बाद सीरियामें इस दूतसे सिकन्दर-की फिर भेंट हुई और उसकी प्रार्थनाके अनुसार उसने उन कैदियोंको छोड़ दिया।

कुछ दिनोंतक सिकन्दर गरडियममें रहा। इसके बाद वसन्त ऋतुके आरम्भ होते ही वह फिर दिग्विजयके लिये चल पड़ा। इस समय उसका इक्कीसवाँ वर्ष बीतकर बाईसवाँ आरम्भ हो गया था। जिस समय वह गरडियमसे अपने सैनिकोंको साथ ले, दक्षिणकी ओर अग्रसर हुआ; उस समय राहमें ही पैफला-गोनिया प्रदेशका दूत उसके पास आया। यह बड़ा ही बलवान

प्रदेश था और अनायास ही लाखों घुड़सवार सेना लेकर सिक-न्दरका सामना कर सकता था ; परन्तु लगातार विजय प्राप्त होनेके कारण सब सिकन्दरके नामसे ही डरने लगे थे। अतः बिना रक्तपात किये ही इतना बड़ा पैफलागोमिया प्रदेश सिक-न्दरके हाथमें आ गया। सिकन्दर इस प्रदेशका शासन भार अपने एक विश्वासी मनुष्यके हाथोंमें सौंप, कैपडोसियाकी ओर अग्र-सर हुआ। यहाँ भी पूर्वकी भाँति ही बिना रक्तपात किये विजय-लक्ष्मी उसे वरमाल पहना गई।

कैपडोसियापर अधिकार जमाकर सिकन्दर साइलीसियाकी ओर अग्रसर हुआ। कैपडोसियासे साइलीसिया जानेके लिये राहमें एक सङ्कीर्ण पहाड़ी घाटी पड़ती है। यह घाटी टोरस नामक पर्वतके बीचमें है। वह स्थान समुद्रसे लगभग ३ हज़ार ६ सौ फ़ीट ऊँचा है। यह ऐसा स्थान था, कि यदि इस स्थानकी रक्षाका अच्छा प्रबन्ध किया जाता तो थोड़ी-सी सेना भी एक प्रबल सेनाको रोक दे सकती थी। यही सोचकर फ़ारिसवालोंने इस स्थानकी रक्षाका भरपूर प्रबन्ध भी कर रखा था।

सिकन्दरमें एक यह भी गुण था, कि किसी कठिन कार्यके समय वह अपने कर्म्मचारियोंका भरोसा न करता था। अतः उसने परमिनीके समान सुदक्ष सेनापतिके रहनेपर भी इस कार्यका भार उसपर न छोड़ा और सामान्य सैनिकोंके समान ही शस्त्र ले, सेनाके आगे आगे अग्रसर हुआ। यही कारण था, कि सिकन्दरको विजय भी प्राप्त होती थी और यही उसकी सफलताका गुप्त रहस्य था।

फ़िलिपने ओषधिमें विष मिला दिया है। आप सावधान रहें। सिकन्दर पत्र पढ़कर वैसा ही शान्त बना रहा जैसा पहले था। इसके बाद जब फ़िलिप दवा तैयारकर उसके पास ले गया ; उस समय ओषधिका प्याला उसके हाथसे लेकर सिकन्दरने पत्र फ़िलिपके हाथमें दे दिया और बिना किसी भयके दवा पी गया। पत्र पढ़कर भी फ़िलिपके चेहरेपर भयका चिन्हतक न प्रकट हुआ। इससे सभी समझ गये, कि फ़िलिप निर्दोष हैं। ईश्वरकी इच्छासे उसी ओषधिने सिकन्दरको बहुत कुछ लाभ पहुँचाया और वह आरोग्य हो गया। जो हो, इस समय सिकन्दरको अपने कुछ मनुष्योंपर अटल विश्वास था और यह भी उसकी उन्नतिका अन्यतम कारण था; परन्तु इसके बाद जब उसका चरित्र कलुषित हुआ ; उस समय उसका कैसा अधःपतन हुआ, यह पाठकों को आगे चलकर मालूम होगा। इसके नौ वर्ष बाद जब सिकन्दर हिपास्थियन नामक स्थानमें बीमार पड़ा था, तब उसने सन्देहवश अपने चिकित्सकको बड़ी निर्दयतासे हत्या की थी।

थोड़े ही दिनोंमें सिकन्दर पूर्ण रूपसे आरोग्य हो गया। उसने प्रधान प्रधान गिरिपथोंपर अधिकार जमानेके लिये परमिनिको पहले ही भेज दिया। स्वयं दुर्बल रहनेपर भी सिकन्दरने ऐङ्क्षिएलम नगरपर अधिकार जमाकर टारसून नगर पर भी अपना शासन स्थापित कर दिया। इस स्थानके अधिवासियोंने फ़ारिसके राजाका पक्ष ग्रहण किया था ; इसलिये उन्हें दो लाख २८ हज़ार रुपये दण्ड स्वरूपमें देने पड़े थे। अब यहाँके शासनका

प्रबन्धकर सिकन्दर उन्हें दमन करनेके लिये अग्रसर हुआ जो दाराका पक्ष ग्रहण किये हुए थे और भागकर पहाड़ोंमें जा छिपे थे। एक सप्ताहमें ही सिकन्दरने उन्हें इस तरह पराजित किया, कि फिर उन्हें सर उठानेका साहस न हुआ। उन्हें वशीभूतकर सिकन्दर सोली नगरमें लौट आया। यहाँ लौटकर उसने सुना, कि उसके सेनापतियोंको भी सर्वत्र विजय प्राप्त हुई है। इसी-लिये इस नगरमें कई दिनोंतक उत्सव होता रहा और इस देशके अधिवासियोंने सिकन्दरकी कृपासे स्वायत्त-शासनका अधिकार प्राप्त किया।

दारासे युद्ध

फारिस-पति दाराको भी जब यह समाचार मिला, कि सिकन्दर बीमार हो रहा है और उसकी अवस्था अच्छी नहीं है, तब वह एक विशाल सेना लेकर सिकन्दरपर आक्रमण करनेके लिये चल पड़ा। उसने यूफ्रेटिस नदीपर नाव-का पुल बँधवा अपनी सेना पार उतरवा दी। नदी पार करनेमें ही इस सेनाको पाँच दिवस लग गये। ऐतिहासिक प्लूटार्कका कथन है, कि दाराके साथ छः लाख सेना थी। ड्यूडोरस और यस्टिनका कथन है, कि दारा चार लाख पैदल और एक लाख घुड़सवार सेना लेकर सिकन्दरपर आक्रमण करनेके लिये अग्र-सर हुआ था। इस इतनी बड़ी सेनाकी खाद्य सामग्री ले जानेके लिये कितने ही ऊँट और खच्चर थे। केवल दाराके व्यवहारिक सामान और धन-रत्न वहन करनेके लिये छः सौ घोड़े और तीन

सौ ऊँट नियुक्त थे। दाराने मेसोपोटामियाकी समतल भूमिपर ही सिकन्दरसे युद्ध करना स्थिर किया था। उसने समझा था, कि उसकी इतनी बड़ी सेना देखकर सिकन्दर डरकर भाग जायगा।

साइलीसियासे आगे बढ़नेपर दो पहाड़ी घाटियाँ पार करनी पड़ती हैं। पहली समुद्र किनारेकी सीरिया घाटी। यह दक्षिण ओर है। दूसरी उत्तरकी ओर एमिनक घाटी है। यूफ्रेटिस नदीके किनारे किनारे जानेपर यह एमिनिक घाटी पार करनी पड़ती हैं। दारा इसी एमिनिक घाटीको पारकर पहाड़ और समुद्रके बीचके संकीर्ण भूभागमें जा पहुंचा। दाराने मन-ही-मन विचारा था, कि इस विपुल सेना द्वारा सिकन्दरको घेरकर मार डालेंगे।

सिकन्दर भी चुप न बैठा था। वह भी दारापर आक्रमण करनेके लिये सीरिया घाटी पारकर रहा था। जब उसको यह समाचार मिला, कि दारा एक प्रबल सेनाके साथ एकाएक आ पहुँचा है, तब पहले तो उसे इस बातपर विश्वास न हुआ; परन्तु जब उसके भेजे हुए दूतोंने भी इसी समाचारको पुष्ट किया, तब उसे विश्वास हो गया और वह दारासे युद्ध करनेके लिये तैयार होने लगा।

दाराकी सेना बराबर ही ग्रीसपर आक्रमणकर ग्रीसवासियों-को कष्ट पहुँचाया करती थी। सिकन्दरने इस बारके आक्रमणके पहले बड़ी ही ज्वलन्त भाषामें फ़ारिसवासियोंका ग्रीसपर अत्या-चार तथा अन्यान्य घटनायें कहीं। सिकन्दरकी प्रभाव-शालिनी

वक्तृता सुन उसके सैनिक फड़क उठे। वे युद्धके लिये इतने अधीर हो उठे कि क्षण भरका विलम्ब भी उन्हें असह्य मालूम होने लगा। सिकन्दरने अपने सैनिकोंको इस तरह उत्साहित कर उन्हें भोजन करनेकी आज्ञा दे दी और अपने थोड़े सैनिक घाटीकी रक्षाके लिये भेज दिये तथा रात्रिके समय स्वयं जाकर सिकन्दरने घाटीपर अपना अधिकार जमा लिया।

सिकन्दरने अपने सैनिकोंको उत्साहित करनेके लिये चाहे जो कुछ कहा हो; परन्तु दाराकी सेनाका समाचार सुनकर वह अच्छी तरह समझ गया था, कि इस बार सहजमें ही विजय प्राप्त न होगी। जो हो, सिकन्दरने जय-पराजय दोनोंके लिये प्रस्तुत होकर पहले एक पहाड़ीपर चढ़कर एकान्त स्थानमें ईश्वरसे जयके लिये प्रार्थना की। रात बीतते ही सेनाको युद्धके लिये आगे बढ़नेकी आज्ञा दे दी गई। जिस स्थानपर सिकन्दरकी सेना थी, वहाँसे दाराका पड़ाव लगभग डेढ़ मीलकी दूरीपर था। सिकन्दरने यह बात सुनकर अपनी सेनाका व्यूह बनाना आरम्भ किया।

उधर दाराको भी यह समाचार मालूम हुआ, कि सिकन्दर उसपर आक्रमण किया चाहता है। दाराको अपनी सेनाका इतना घमण्ड था, कि उसे इस बातपर विश्वास ही न हुआ। उसने मन-ही-मन यही सोच रखा था, कि उसकी प्रबल सेनाका समाचार सुनकर ही सिकन्दर भाग जायगा। उसकी सेना मनमाना काम कर रही थी। इसी समय एकाएक युद्धका समाचार सुनकर

उसमें विश्रृङ्खलता उत्पन्न हो गई। दाराने मन-ही-मन सोचा था, कि पासकी पहाड़ीपर अधिकार जमाकर एक सेना-दल शत्रुके सामने और दूसरा पीछेसे उसपर आक्रमण करेगा। ऐसी ही आज्ञा भी उसने दे रखी थी। अपनी सेनाके एक भागको उसने समुद्रके किनारे रहकर शत्रुके बायें भागपर आक्रमण करनेकी आज्ञा दी थी। बीस हज़ार तीरन्दाज़ोंको उसने दोनों सेनाकी मध्यवर्त्तिनी पिनारस नाम्नी नदीको पारकर युद्ध करनेकी आज्ञा दे रखी थी ; परन्तु दाराके दुर्भाग्यसे उसके आज्ञानुसार काम न हुआ। किसी किसी भागने तो सिकन्दरके भयसे दाराकी आज्ञा न मानी। जिसने उसकी आज्ञा मानी उसने हृदयसे काम न किया। इसलिये सेना विश्रृङ्खल हो गई। जहाँ श्रृङ्खला है, जहाँ कर्त्तव्य प्रतिपालनमें अनुराग है, जहाँ वीरगण निःशङ्कचित्तसे युद्धमें अपने जीवनकी आहुति देनेके लिये प्रस्तुत रहते हैं, वहीं थोड़ी सेना रहनेपर भी अनायास ही विजय प्राप्त होती है।

सिकन्दरने अपनी सेनाको सम्मुख भागमें रखकर सेनापति परमिनीके पुत्र निकानरको उसके दक्षिण भागकी रक्षाके लिये नियुक्त किया। उसके पास केड्निस, पर्डिक्का, मिलेगोर ऐमिण्टस आदि वीरगण अपनी अपनी सेना ले शत्रु पक्षपर आक्रमण करनेके लिये प्रस्तुत हो गये। समुद्रके किनारेके बाम भागकी रक्षाका भार क्रिटिरस और परमिनिको दिया गया।

अभी युद्ध आरम्भ न हुआ था। दोनों सेना इतनी दूरपर थी, कि तीर वहाँ तक न पहुँच सकता। इसी समय सिकन्दरकी

सेनाको देखकर एकाएक फ़ारिसकी सेना विषम स्वरसे चित्कार कर उठी। ग्रीक-सेनाने भी एक स्वरमें उनके चित्कारका उत्तर दिया। शत्रुओंने यह स्वर सुनकर समझ लिया, कि सिकन्दरके पास भी सेना कम नहीं हैं। सिकन्दरने अपनी सेनाको चिल्लानेके लिये इस भयसे मना कर दिया, कि शायद अभीसे चित्कार करनेके कारण युद्धके समय वे थक जायें और चिल्ला न सकें। इस समय फिर सिकन्दरने फ़ारिसकी सेनाके वस्त्र, फ़ारिसका धन रत्न आदिका प्रलोभन दिलाकर और फ़ारिसवासियोंका ग्रीकोंपर अत्याचार सुनाकर तथा फ़ारिसवासियोंके द्वारा ग्रीस-देशका बारम्बार पददलित होना बताकर अपनी सेनाको फिर उत्साहित कर दिया। इसी समय फ़ारिसकी सेना युद्धके लिये आगे बढ़ी और क्षण भर बाद ही दोनों दल आपसमें मिलकर शस्त्रोंसे खेलने लगे। यद्यपि थोड़ेसे स्थानमें बहुत सी सेना रहनेके कारण फ़ारिसकी सेना यथेच्छा शस्त्र न चला सकी; परन्तु इस असुविधाके रहनेपर भी वह युद्धसे विमुख न हुई।

फ़ारिसकी सेनाने मसिडोनियापर आक्रमणकर उसे बहुत हानि पहुँचाई थी। मसिडोनियाकी सेना एक प्रकारसे उनसे पराजित हो चली थी। यदि दाराकी सेना इस समय थोड़ी दृढ़तासे काम लेती तो इसमें कोई सन्देह नहीं, कि सिकन्दर पराजित हो जाता। पहले ही कह चुके हैं, कि दाराकी सेनामें ग्रीस देशकी बहुत-सी सेना थी। मसिडोनियाकी सेना इन स्वदेशद्रोहियोंको देखकर और इनका अत्याचार स्मरणकर बड़े

वेगसे उनपर टूट पड़ी। बड़ा भीषण युद्ध हुआ। सल्यूकस पुत्र पुलोमी आदि कई नामी योद्धा मारे गये। सिकन्दर अपने हाथों दाराको मारनेके लिये शत्रु सैन्यके सामने जा पहुँचा; परन्तु दाराकी रक्षाके लिये फ़ारिसके कितने ही सैनिकोंने अकातर भावसे अपना जीवन विसर्ज्जन कर दिया। यद्यपि फ़ारिसकी सेनाने बड़े विक्रमसे युद्ध किया; परन्तु वह विजयी न हो सकी। शत्रुओंके प्रचण्ड आक्रमणसे जिस समय फ़ारिसकी सेना युद्ध छोड़ भागने लगी, तब रणस्थलमें रहनेपर सिकन्दरके हाथों दाराके वन्दी होनेकी आशङ्का उपस्थित हुई। उस समय फ़ारिस-पति दारा अपने घोड़ेपर सवार हो कापुरुषकी भाँति प्राणसे भी प्रियतर सम्मानको परित्यागकर वहाँसे भाग चला। इतने दिनोंके परिश्रम, उद्योग, आशा और सम्मान एक दिवसमें ही उसकी कापुरुषताके कारण धूलमें मिल गये। दूसरी ओर सिकन्दर धन-जनसे बलवान हो गया और उसकी उन्नत आशा और भी अधिकतर उन्नत हो गई।

इस युद्धके पहले जो ग्रीकवासी एशियाके प्रतापकी बातें सुन भय-कम्पित होते थे, उनका भय आज अनायास ही दूर हो गया। अपने हठके कारण ही दाराको यह दुर्दशा भोगनी पड़ी। यदि वह अपनी प्रबल सेना द्वारा चारों ओरके स्थान घेरकर सिकन्दरको खाद्य सामग्री न प्राप्त होने देता, यदि पहले ही उसके अग्रसर होनेमें बाधा पहुँचाता और यदि आँख, कान बन्दकर शासन न किये होता, तो आज उसकी यह दुर्दशा न होती?

यह युद्ध यद्यपि बहुत देरतक न हुआ तथापि इसमें मनुष्य-हत्या कम न हुई। फ़ारिसकी ओरके एक लाख पैदल और दस हज़ार घुड़सवार इस युद्धमें परलोक सिधारे। ऐसी किम्बदन्ती है, कि इस युद्धमें मरे हुए मनुष्योंसे एक नदी इतनी भर गई थी, कि बहुतसे सैनिक लाशोंपर चढ़कर ही नदी पार हो गये। चालीस पचास हज़ार दृढ़ प्रतिज्ञ प्राण देकर युद्ध करनेवालोंने यह असाध्य साधन कर दिखाया। इस युद्धमें सिकन्दरकी ओरके पाँच सौ योद्धा घायल हुए थे और १८२ परलोक सिधारे थे। सिकन्दरने यह युद्ध विजयकर जो प्राधान्य प्राप्त किया था। उसकी तुलनामें यह मृत्यु संख्या कुछ भी न थी।

दाराने स्वप्नमें भी यह न विचारा था, कि बाईस वर्षके एक बालक द्वारा इस तरह पराजित होकर, उसे अपने प्राण-भयसे भागना पड़ेगा। वह रात्रिके अन्धकारकी सहायता पाकर अनायास ही अपने घर जा पहुँचा।

दाराके हज़ार टैलेण्ट या एक करोड़ बारह लाख पचास हज़ार रूपये, कितने ही विलास द्रव्य और सुन्दर सुन्दर शिविर विजेताके हस्तगत हुए। इन शिविरोंमें युद्धके सामान तो उसे न मिले, परन्तु सोने चाँदीके बरतन, कितने ही बहुमूल्य वस्त्र और बहुत-सा धन सिकन्दरके हाथ लगा। दाराकी माता, स्त्री पुत्र और कन्या भी दुर्भाग्यवश सिकन्दरके हस्तगत हुई। सिकन्दरने उनपर बड़ी दया दिखाई और उनका अपमान न हो, इसलिये किसी दूसरेको उनके शिविरमें न जाने दिया। उस समय

दाराकी स्त्री एशियाकी एक ही सुन्दरी गिनी जाती थी। इस युद्धमें दाराका धनुष तथा कितने ही अन्य शस्त्र भी सिकन्दरके हाथ लगे थे। यह देखकर फ़ारिसके शिविर रक्षकोंने समझ लिया कि दाराकी मृत्यु हुई और यह समाचार दाराकी माताको उन्होंने कहला भेजा। इससे वे चिल्कार कर रोने लगीं। सिकन्दरने रुदन-ध्वनि सुनकर उसका कारण जान, उसी समय दाराकी माताको कहला भेजा, कि दाराकी मृत्यु नहीं हुई है। सिकन्दर दाराकी माताको माता, जननी इत्यादि शब्दोंसे सम्बोधन करता था और निहत फ़रासी सैनिकोंका सामरिक प्रथासे सम्मानकर उसने अपने हृदयके महत्वका परिचय दिया था। यह युद्ध ई० पू० ३२ के कार्त्तिक मासमें हुआ था।

युद्धमें विजय प्राप्तकर अदूरदर्शी सेनापतियोंकी भाँति सिकन्दर खेल तमाशेमें मग्न न हो गया। बल्कि उसने तुरन्त ही अपने सेनापति परमिनीको डमस्कसकी ओर रवाना किया। डमस्कसमें बहुत-सी युद्धकी सामग्री और बहुमूल्य द्रव्य दाराने रख छोड़े थे! परमिनीने उन द्रव्योंपर अधिकार जमाकर, राज-भण्डार परिपूर्ण किया। इसके साथ ही कितनी नाचने वालियाँ, रसोइये और ग्रीससे आये हुए दूत भी सिकन्दरके हाथ लगे।

यहाँसे समुद्र-तटके स्थानोंपर अधिकार जमाता हुआ, सिकन्दर मराथस नामक स्थानमें जा पहुंचा। यहाँ दाराके दूतने उससे मिलकर दाराकी माता, स्त्री पुत्र और कन्याको छोड़ देनेकी प्रार्थना की। यह दूत दाराका एक पत्र भी ले आया था, जिसमें

लिखा था, कि आपको उचित है, कि मेरी स्त्री, कन्या तथा पुत्र-को छोड़ दें। इसके बदले मसिडोनियाका जितना मूल्य है, उतना धन देनेके लिये हम तैयार हैं। यदि मेरे साम्राज्य पर आपको अधिकार जमानेकी इच्छा हो तो किसी दूसरे युद्ध क्षेत्रमें आप मुझसे अपने भाग्यकी परीक्षा करें। साथ ही आपको उचित है, कि दूसरेका राज्य छोड़कर चले जायें। यदि आप ऐसा करेंगे तो मैं सदा बन्धुभावसे आपकी सहायता करूँगा। विश्वासके लिये आप जो कहें सो करनेके लिये मैं तैयार हूँ।

सिकन्दरने इस पत्रके उत्तरमें लिखा:—

"तुमने जिस दाराका नाम ग्रहण किया है, उसने आयोनिया-के ग्रीक औपनिवेशिक तथा हेलिसपौण्ट और उपकूल निवासी ग्रीकोंकी निर्दयतासे हत्या की थी। इसके बाद उन्होंने समुद्र पारकर मसिडन और ग्रीस देशपर आक्रमण किया था। फिर उसी देशके जरेक्ससने अगणित असभ्योंको साथ ले हमलोगों पर आक्र-मण किया था। यद्यपि वे जल-युद्धमें पराजित हुए थे तथापि वे अपने सहचरोंको ग्रीसमें छोड़ गये थे ; जिन्होंने उनके पीछे ग्राम और नगर लूटकर सब खेत जला डाले थे। तुम्हारे हा धनसे परि-पुष्ट मनुष्योंने मेरे पिताकी हत्या की है। तुमलोग कूटनीति अव-लम्बन कर युद्ध करते हो। शत्रुका अभाव न रहनेपर भी तुम अपने शत्रुका मस्तक धन देकर छेदन किया चाहते हो। तुम्हारे पास बहुतसी सेना रहनेपर भी तुमने मुझे मार डालनेके लिये एक हज़ार टैलेण्टका पुरस्कार देना चाहा था। मैंने पहले शत्रुता नहीं

की है ; परन्तु जो मुझसे शत्रुता करता है, उसे समूल ध्वंस किये बिना भी नहीं छोड़ता हूं । मैं न्यायका पक्षपाती हूँ । एशियाके बहुतसे प्रदेश मेरे साम्राज्यमें मिल चुके हैं और तुमपर भी मैंने युद्धमें विजय प्राप्त की है । तुमने युद्ध-नीतिके अनुसार मुझसे व्यवहार नहीं किया है । यदि तुम अनुग्रह-प्रार्थी होकर मेरे पास आना स्वीकार करो तो मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि तुम्हारे परिवार-वालोंको छोड़ दूँगा और उसके बदलेमें एक पैसा भी न लूँगा । मेरे पास आनेमें तुम डरते क्यों हो ? यहाँ आकर तुम्हारे लौट जानेमें किसी प्रकारकी बाधा न पहुँचाई जायगी । तुम्हारे विश्वासके लिये प्रतिनिधि भेजनेको मैं तैयार हूँ । भविष्यमें पत्र लिखते समय स्मरण रखना, कि किसी दूसरे राजाके पास नहीं, बल्कि अपने राजाको तुम पत्र लिख रहे हो ।" सिकन्दरने यही पत्र दाराके पास भेज दिया और पत्र-वाहकको कुछ बोलनेके लिये मना कर दिया ।

युद्धके पहले जो एथेनियन, स्पार्टन और थेबवासी मनुष्योंने सिकन्दरका विपक्ष ग्रहणकर दाराकी सहायता की थी, परमिनी उन्हें भी कैद कर लाया था । ये उच्च कुलके मनुष्य जब सिकन्दरके पास लाये गये, तो स्पार्टनोंके अतिरिक्त अन्य सबको उसने छोड़ दिया । स्पार्टनोंके सम्बन्धमें उसने कहा, कि मसिडोनियावालोंने जिनका देश एकदम ध्वंस कर डाला है, जो उनको क्रीतदासके समान समझते हैं, वे अपने गौरवको फिरसे स्थापित करनेके लिये यदि शत्रुसे जा मिलें तो कौन-सी आश्चर्यकी बात है—यह कह-

कर उसने स्पार्टनोंको भी छोड़ दिया। सिकन्दरने एथेन्स-राज्य-का सम्मान दिखानेके लिये एथेनियन दूत इपिक्रेनसको अपना सहचर बना लिया। वह अपनी मृत्युतक बराबर सिकन्दरके पास बड़ी मर्य्यादासे काम करता रहा। उसकी मृत्युके बाद उसकी अस्थि सिकन्दरने उसके आत्मीयोंके पास भेज दी। दाराकी पराजयके बाद भू-मध्य सागरके पूर्वी-तटके सब छोटे-छोटे राज्योंने सिकन्दरका आनुगत्य स्वीकार कर लिया। केवल टायरी राज्यने मस्तक न झुकाया। सिकन्दरने इन राज्योंपर अधिकार जमाकर अपने अधीनस्थ मनुष्योंको शासन-कार्यमें नियुक्त कर दिया।

सिकन्दरकी विजय-प्राप्तिके बाद फिनीशियाके क्षुद्र-क्षुद्र नृपतिगण स्वर्ण-मुकुट तथा और कितनी ही बहुमूल्य सामग्रियाँ भेजने लगे, सिकन्दरने टायरीवासियोंका बड़ा आदर किया और स्वयं वहाँ जाकर हरक्यूलिसकी मूर्त्तिकी पूजा करनी चाही। यह समाचार जब टायरीके शासकको मालूम हुआ, तब उसने सिकन्दरका वहाँ आने देना उचित न समझा। उसने मन-ही मन विचारा, कि सिकन्दर अकेला तो आयगा ही नहीं, साथमें उनके सैनिक भी आयँगे और वह अनायास ही नगरपर अधिकार जमा लेगा। यह सोच वह वीर पुरुषोंकी भाँति टायरीकी स्वर्गीय स्वाधीनताकी रक्षा करनेका प्रबन्ध करने लगा।

सिकन्दरको जब मालूम हुआ, कि टायरीका शासक उसे अपने राज्यमें नहीं आने देना चाहता है और उसकी रक्षाका प्रबन्ध कर रहा है, तब वह टायरीपर आक्रमण करनेके लिये तैयार हो गया।

भू-मध्य सागरके पूर्व और सीरियाके किनारे एक टापूमें टायरी नगर बसा था। समुद्रके किनारेसे यह उस समय लगभग आध मीलकी दूरीपर था। इस स्थानके समुद्रकी गहराई सत्रह अट्ठारह फ़ीटसे कम कहीं न थी। पहले यह नगर समुद्रके किनारे बसा था। एक बार एक समीपवर्त्ती राजासे लड़ाई छिड़ जानेके कारण, टायरीवासी उस प्राचीन नगरको छोड़ उसी टापूमें जाकर बस गये। टापूकी चारों ओर प्राचीर खड़ी कर दी गई। प्राचीन नगर खण्डहरके रूपमें परिणत हुआ। यह नगर वाणिज्यके लिये बड़ा ही विख्यात था और इसी कारणसे इसका जहाज़ी बल भी बहुत अधिक था। भूमध्य-सागरमें ऐसा कोई भी स्थान न था, जहाँ इस नगरका वाणिज्य न होता हो। यहाँके अधिवासी जितने वाणिज्य-प्रिय तथा धनी थे, वैसे ही स्वाधीनता-प्रिय तथा साहसी भी थे। परन्तु साहसी होनेपर भी ये किसीसे शीघ्र युद्ध न करते थे।

टायरीवासियोंने जब सिकन्दरको अपने नगरमें घुसनेका अधिकार न दिया, तब सिकन्दरने अपनी सेनाको साथ ले, नगरके सामने समुद्र-तटपर अपना शिविर स्थापन किया। समुद्र पार करनेके साथ ही साथ दुर्भेद्य प्राचीरको तोड़कर नगरमें घुस जाना कोई साधारण काम न था। उसके शत्रु नौबलसे बलवान हो रहे थे; इसलिये उन्हें अन्नके अभावकी सम्भावना न थी। ऐसी अवस्थामें यदि कोई दूसरा होता तो टायरीको विजय करनेकी वासना ही त्याग देता; परन्तु सिकन्दर उस प्रकृतिका

मनुष्य न था। ज्यों ज्यों वाधायें अग्रसर होती थीं, त्यों त्यों वह और भी उत्साहित होता जाता था। वाधाके गुरुत्वके साथ-ही-साथ उसका अध्यवसाय और कष्ट-सहिष्णुता भी बढ़ती जाती थी। अतः उसने पुल बनाकर टायरोपर अधिकार करनेका संकल्प किया।

पुल बाँधनेका कार्य आरम्भ हुआ। प्राचीन टायरी नगरके शिलाखण्ड और पासके जङ्गलोंके वृक्षोंकी लकड़ीसे पुल बाँधा जाने लगा। पहले तो लोगोंने इसे सिकन्दरका दुःसाहस मात्र समझा। परन्तु जब कुछ दूरतक पुल बँध गया; तब टायरो-वासियोने जल और स्थल दोनों ही ओरसे वाधा पहुँचानी आरम्भ की। उन्होंने प्राचीरपर पत्थर फेंकनेवाले यन्त्र स्थापित कर पुल बाँधनेवालोंपर पत्थर फेंकने आरम्भ किये। सिकन्दर भी एक बहुत बड़ा पत्थर फेंकनेवाला यन्त्र तैयार करा, उनपर पत्थर बरसाने लगा। इसके अतिरिक्त टायरीवासी नावपर सवार होकर पुल बनानेवालोंपर आक्रमण करने लगे। कभी कभी वे पुलमें आग लगा देते थे। इस तरह वे जितनी ही वाधा देने लगे; सिकन्दरका उत्साह भी उतना ही बढ़ता गया। सिकन्दर भी बहुतसे पत्थर फेंकनेवाले यंत्र बनवाकर प्रवल वेगसे उनपर आक्रमण करने लगा। इस समय समुद्र भी कृपा परतन्त्र होकर विपन्न टायरीवासियों-की सहायताके लिये तैयार हो गया। प्रवल तूफानके कारण बड़े बड़े पत्थर इधर उधर गिरने लगे। पुलके काठ इधर उधर बह

तरङ्गकी चोटसे बचानेके लिये सिकन्दरने और भी चौड़ा पुल बाँधना आरम्भ किया। इससे आक्रमणमें भी सुविधा हो सकती थी। विपक्षके पत्थर, आग और शस्त्रोंकी चोटसे रक्षा करनेके लिये पुल बाँधनेवालोंने पशुओंका गीला चमड़ा ओढ़कर काम आरम्भ किया। ज्यों ज्यों पुलका काम आगे बढ़ता गया; त्यों त्यों दोनों पक्षके मनुष्य अधिकाधिक हिंसापरायण हो एक दूसरेपर आक्रमण करते थे। इस समय सिकन्दरने एक चाल और भी चली। बहुत-सी नावें बनवाकर उसने टापूपर दूसरी ओरसे आक्रमण किया। टायरीवासी उधर टापूकी रक्षा करनेमें उलझ पड़े, इधर पुलका काम बढ़ने लगा। जब टायरीवासियोंने देखा, कि पुल बँध गया, अब शत्रु प्राचीर भेदकर नगरपर आक्रमण करनेकी चेष्टा करेगा तो उन्होंने अपने स्त्री पुत्र कार्थेज नामक टापूमें भेज दिये और घोरतर युद्धमें प्रवृत्त हो गये। टायरीवासी शहरपनाह-की दीवारपर चढ़कर पत्थर तथा शस्त्र फेंकने लगे। इस बार अपनी सेनाके आगे रहकर सिकन्दरने अद्भुत पराक्रम दिखाया। सिकन्दरके यन्त्रोंने पत्थर उगल उगलकर टायरीवासियोंको व्याकुल कर दिया। इसी तरह प्राचीरका एक स्थान टूट गया। उस स्थानकी रक्षाके लिये हज़ारों टायरीवासियोंने अपने जीवन-की आहुति दे डाली; परन्तु सिकन्दरके प्रचण्ड वेगसे अपनी रक्षा न कर सके।

शहरपनाहकी दीवार टूटते ही सिकन्दरकी सेनाने प्रबल वेगसे आक्रमण किया। आद्मिटस नामक उसका सैनिक बड़ी

वीरता दिखाता हुआ उस प्राचीरपर चढ़ गया। जिस समय वह उस प्राचीरपर चढ़कर जयोल्लास करता हुआ अपनी सेनाको उत्साहित कर रहा था ; उस समय वह भालेकी चोटसे परलोक सिधारा ; परन्तु इससे क्या होता है ? सभी उस स्थानपर अधिकार करनेका उद्योग करने लगे। सभी स्पर्द्धासे एक दूसरेको पीछे ठेल उस स्थानपर जा पहुँचनेकी चेष्टा करने लगे। आद्मिटसके बाद स्वयं सिकन्दर उस स्थानपर जा पहुँचा। इसके बाद ही पहाड़ी नदीके समान प्रबल वेगसे किसी बाधा विघ्नकी पर्वाह न कर सिकन्दरकी सेना उस भग्न स्थानसे नगरके भीतर घुसने लगी। वणिक टायरीवासी अपनी स्वाधीनताकी रक्षा न कर सके।

इस स्वाधीनता-संरक्षणके युद्धमें आठ हज़ार टायरीवासी परलोक सिधारे। इनके अतिरिक्त दो हज़ार टायरीवासियोंको दानव-हृदय सिकन्दरने उनके शरीरमें काँटियाँ ठोकवा कर मार डाला और अपने स्वरूपका यथार्थ परिचय दिया। अपने देशकी स्वाधीनताकी रक्षाके लिये सभी उद्योग करते हैं और ऐसा उद्योग अवश्य करना ही चाहिये। इसी भावको लक्ष्यमें रखकर टायरीवासियोंने युद्ध किया था। जय और पराजय तो अदृष्ट-सापेक्ष विषय है। उन्होंने पराजित होनेपर भी अपनी स्वाधीनताकी रक्षाके लिये जो विषम साहस दिखाया था, वह निःसन्देह श्लाघनीय है ; परन्तु सिकन्दरके विचारमें उस समय यह कार्य भयानक पाप हुआ। वह इतने मनुष्योंको मारकर भी शान्त न हुआ।

उसने लगभग बीस हज़ार टायरीवासी और उनके कितने ही सैनिकोंको दास रूपमें बेचकर यथेष्ट धन भी संग्रह किया।

इस युद्धमें मसिडोनियाकी लगभग चार सौ सेना भी परलोक सिधारी। ईसामसीहके ३३२ वर्ष पूर्व श्रावण मासमें टायरीपर सिकन्दरका अधिकार हुआ। उसने हरक्यूलसकी पूजा की। कई दिनोंतक बड़ा उत्सव होता रहा। इस तरह सिकन्दरने टायरीपर अधिकार जमा लिया।

गाजापर आक्रमण

जिस समय सिकन्दर टायरीमें था ; उसी समय दाराका एक राजदूत पत्र लेकर उसके पास जा पहुँचा। पत्रमें लिखा था, कि यदि आप मेरे परिवारवालोंको छोड़ दें, तो आपको तीन करोड़ छियासठ लाख रुपये तथा यूफ्रेटिस नदीके तटसे लेकर ग्रीस सागरके किनारेके सब स्थान दे दिये जायगे। साथ ही मैं अपनी कन्या स्तातिराका विवाह आपसे कर दूँगा। इस तरह हमलोग मित्रताके बन्धनमें बँधकर आनन्दपूर्वक राज्य कर सकेंगे।

सिकन्दरने इसके उत्तरमें लिखा,—"मैं आपसे धन अथवा समस्त राज्यके बदले आधा राज्य नहीं लिया चाहता। आपका समस्त राज्य और धन मेरा है और मैं आपकी इच्छा न रहनेपर

भी अनायास ही आपकी कन्यासे विवाह कर सकता हूँ। इसमें यदि आप किसी प्रकारकी आपत्ति भी करेंगे तो कोई फल न होगा। जो प्रदेश मैंने युद्धमें विजय कर लिया है, वह आप दया दिखाकर क्यों दिया चाहते हैं। यह तो मेरा है ही, आप यदि मुझसे भद्र व्यवहारकी इच्छा करते हों तो स्वयं मेरे पास उपस्थित हों।"

यह पत्र जिस समय दाराके पास पहुँचा ; उस समय उसने सन्धिकी आशा बिल्कुल ही त्याग दी और फिर युद्धका उद्योग करने लगा।

यहूदियोंके इतिहास लेकर जोसेफ़ सिकन्दरके तीन सौ वर्ष बाद वर्त्तमान थे। उन्होंने अपने इतिहासमें लिखा है, कि जब सिकन्दरने टायरीपर अधिकार जमा लिया तब भोजनकी सामग्री संग्रह करनेके लिये उसने अन्यान्य प्रदेशोंमें दूत भेजने आरम्भ किये। इनमेंसे ही एक दूत जेरूज़ेलम जा पहुँचा, परन्तु जेरूज़ेलमवालोंने दूतको यह कहकर नगरसे निकल जानेकी आज्ञा दी, कि हमलोग दाराके अधीन हैं। आपको खाद्य-सामग्री नहीं दे सकते। उस समय तो सिकन्दरने यह बात चुपचाप सहन कर ली ; परन्तु अब उसका बदला लेनेको तैयार हो गया और जेरूज़ेलमका ध्वंस करनेके लिये अग्रसर हुआ। जेरूज़ेलमकी रक्षा करनेका कोई उपाय न देख, वहाँके नगरपाल तथा नागरिक सभी चिन्तित हो पड़े। नगरपालने पुरुषार्थपर निर्भर न कर दैवपर निर्भर हो, भजन-पूजन आरम्भ किया। उसी दिन रातमें उसने

स्वप्न देखा, जिसमें उसके देवताने आकर उससे कहा, कि तुम युद्ध न कर सिकन्दरकी अभ्यर्थना कर उसे नगरमें ले आओ। नगरपाल नगरको फूल पत्तोंसे सजाकर, सिकन्दरकी अभ्यर्थना कर नगरमें ले आया। सिकन्दरने नगरपालका बड़ा आदर किया। कारण पूछनेपर सिकन्दरने कहा, कि एशिया-विजयको निकलनेके पहले उसने भी एक स्वप्न देखा था, कि एक इसी ढङ्गका मनुष्य उसको विजयके लिये बुला रहा है और कह रहा है, कि तुम अनायास ही फ़ारिसके शाहपर विजय प्राप्त करोगे। स्वप्नमें जो मनुष्य दिखाई दिया था, वह ठीक ऐसा ही था। सुचतुर नगरपाल यदि यह उपाय न करता तो वास्तवमें नगर ध्वंस हो जाता और जेरूज़ेलम भग्नस्तूपमें परिणत होता।

जेरूज़ेलमसे सिकन्दर मिश्रदेशकी ओर चला। राहमें ही उसने गाज़ा नामक स्थानपर अधिकार जमा लिया। गाजापर अधिकार जमाते समय उसने जिस अध्यवसाय, निर्भीकता तथा दृढ़ताका परिचय दिया था, वह वास्तवमें आदरणीय है और साथ ही-साथ उसने अपनी जिस पाशव प्रवृत्तिका परिचय दिया था, वह सदा ही घृणित भी समझी जायगी।

गाजा भूमध्य-सागरके पूर्वीय तटपर बसा हुआ नगर है। सीरिया देशका उस समय यह एक वाणिज्य-प्रधान नगर था। वाणिज्यके कारण यह धन-धान्यसे परिपूर्ण हो रहा था। सीरिया और मिश्रदेशके बीचमें जो मरु-भूमि पड़ती है, गाजा उसीके किनारे बसा हुआ है। गाजाके पास पहुँचकर सिकन्दर अपने

कर्म्मचारियोंसे परामर्श करने लगा, कि किस तरह उसपर अधिकार जमाना चाहिये। गाजा ऊँची भूमिपर बसा था, साथ ही यह बड़ी ही ऊँची प्राचीरसे घिरा हुआ था। याँत्रिकोंने गाजाकी अवस्था अच्छी तरह देखकर कहा, कि इस प्राचीरपर बलपूर्वक अधिकार जमाना बिल्कुल ही असम्भव है। यन्त्र-परिचालकोंका यह उत्तर सुनकर सिकन्दरका उत्साह और भी बढ़ गया। जो स्थान सबसे भयानक और विपदु-जनक था, सिकन्दरने उसी स्थानसे आक्रमण आरम्भ किया। सिकन्दरने गाजाके दक्षिण ओर मिट्टी भरकर उस स्थानको गाजाकी ऊँचाईका बना लिया और उसपर प्राचीर ध्वंसक यन्त्र स्थापितकर नगरपर आक्रमण करने लगा।

इस समय दाराका बेतिस नामक एक ख्वाजा गाजाका शासनकर्त्ता था। वह अन्यान्य शासकोंका अनुकरण न कर स्वाधीनोंकी भाँति पौरुष दिखानेके लिये तैयार हो गया। बैतिस नगरको उन्नत प्राचीरसे निम्नस्थ ग्रीक सैनिकोंपर आक्रमण करने लगा। वे इस आक्रमणका वेग किसी तरह सहन न कर सके। सभी जिधर राह मिली उधर ही भागने लगे। प्रज्वलित मशाल लेकर अरबोंने सिकन्दरके यन्त्रोंमें आग लगा दी। सिकन्दर अपनी सेनाका पलायन तथा अरबोंका साहस देखकर अब स्थिर न रह सका। वह सबसे आगे बढ़कर, अपनी सेनाको उत्साहित कर बड़े वेगसे अरबोंपर टूट पड़ा। इसी समय वह एक अरबके भालेकी चोटसे घायल हुआ और बहुत दिनोंतक खाटपर पड़ा रहा।

कुछ दिन बाद अपने आक्रमणके स्थानको और भी ऊँचाकर सिकन्दरने और भी प्रचण्ड वेगसे गाजापर आक्रमण किया। साथ ही प्राचीरके नीचेको बालू खुदवाकर दीवार गिरा देनेकी चेष्टा करने लगा। उधरसे बेतिसके अधीनस्थ सैनिक भी शस्त्र तथा पत्थर फेंककर सिकन्दरकी सेनाको रसातल पहुँचाने लगे। बालू खोद डालनेके कारण कितने ही स्थानोंकी दीवार टूट पड़ी। सिकन्दरकी सेना उसी स्थानसे नगरमें घुसनेकी चेष्टा करने लगी; परन्तु तीन वार वह विफल प्रयास हुई। किसी तरह भी नगरमें घुसनेका जब पथ न मिला तब सिकन्दरने और भी कितने ही स्थानोंकी बालू खुदवा डाली। परिणाम यह हुआ, कि और भी कितने ही स्थानोंकी दीवार टूट पड़ी। इसके बाद सिकन्दरकी बहुत सी सेना रस्सीकी सीढ़ीके सहारे प्राचीरपर चढ़ गई और बहुतसे सैनिकोंको साथ ले सिकन्दर विपत्तिकी पर्वाह न कर भग्न स्थानसे नगरमें घुस पड़ा। नियुप्तिलस नामक योद्धाने सबसे पहले प्राचीरपर चढ़कर शत्रुपर आक्रमण किया। उसकी देखा-देखी और भी कितने ही सैनिक प्राचीरपर जा चढ़े और फिर नगरमें कूद पड़े। जब गाजा निवासियोंने देखा, कि अब वे किसी तरह भी नगरकी रक्षा नहीं कर सकते तब वे अटल अचल भावसे तलवार निकाल युद्धके लिये खड़े हो गये। इस बार बड़ा ही भयानक युद्ध हुआ। गाजावासी अद्भुत साहस दिखाकर हँसते हँसते सुरपुर पधारने लगे। वे नश्वर देहके बदले अक्षय-कीर्त्ति उपार्ज्जन कर परलोक जाने लगे। इस समय उनकी वीरता,

धीरता, स्वामि-भक्ति आदि कोई भी गुण सिकन्दरकी सहानुभूति प्राप्त करनेमें समर्थ न हुआ। दो मासके इस युद्धमें लगभग ३० हज़ार गाजानिवासी वीरलोकमें जा पहुँचे। उनकी स्त्रियाँ तथा पुत्र सिकन्दरके हाथ लगे और निर्दय भावसे गुलाम बनाकर बेच डाले गये। महावीर बेतिसका ऐसा शोचनीय परिणाम हुआ, कि उसके स्मरण करते ही शरीर कण्टकित हो जाता है।

युद्धके समय अगणित शस्त्रोंकी चोट खाने और शरीरसे लगातार रुधिर-धारा प्रवाहित होनेपर भी बेतिस दुर्दमनीय पराक्रमसे युद्ध करता ही गया। उसके प्रचण्ड शस्त्राघातसे बहुतसे शत्रु परलोक जा पहुँचे। इसके बाद सिकन्दरके बहुतसे सैनिकोंने उसे घेर लिया और उस अवस्थामें वह पकड़ा गया, जब उसके हाथसे तलवार गिर पड़ी। सिकन्दरने बेतिसको देखकर बड़े क्रोधसे कहा,—"तुम जैसी मृत्युकी इच्छा करते हो, वैसे ही मृत्यु प्राप्त करोगे। असीम यन्त्रणा भोग करनेके लिये प्रस्तुत हो जाओ।" वीरवर बेतिसने ऐसे निकृष्ट मनुष्यसे बातें करना भी अपमान-जनक समझकर, केवल घृणा-भरी दृष्टिसे एक बार सिकन्दरकी ओर देखा। सिकन्दरने उसी समय अपने एक सहचरसे कहा—"इसकी दृष्टिको देखते हो? इसके मुखसे एक भी वश्यतासूचक शब्द नहीं निकलता। इसका यह मूकत्व मैं दूर करूँगा। यदि और कोई बात मुँहसे न निकलेगी तो यन्त्रणासूचक ध्वनि तो अवश्य ही निकलेगी।" होमर-भक्त सिकन्दरको उपाय खोजनेमें अधिक समय न लगा। एचिलसने हेक्टरका

शरीर रथके चक्केसे बाँधकर जिस तरह ट्राय नगरमें घुमाया था ; उसी तरह सिकन्दरने वीरवर बेतिसके पैरमें कितनी ही कांटियाँ ठोंक, उसे रस्सीके सहारे रथके चक्केमें बाँध, तेज़ीसे घोड़ा दौड़ाकर समूचे गाजा नगरकी प्रदक्षिणा की। सिकन्दरकी इस निष्ठुरताने एचिलिसको भी परास्त किया। एचिलिसने हेक्टरकी लाशको रथके चक्केमें बाँधा था, निष्ठुर सिकन्दरने जीवित बेतिसको बाँधकर अपनी पैशाचिक निष्ठुरताकी पराकाष्ठा दिखला दी।

८

मिश्रपर आक्रमण

सिकन्दर गाजापर विजय प्राप्त कर तेज़ीसे मिश्रकी ओर रवाना हुआ। इस देशके अधिवासी ग्रे निकस, टायरी, गाजा आदि स्थानोंमें सिकन्दरके विजय प्राप्त होनेका समाचार सुन भय-विह्वल हो पड़े। वे बहुत-सा धन लेकर स्वयं सिकन्दरके शरणापन्न होने लगे। उनका साहस दूर भाग गया और विपत्तिके सम्मुख खड़े होनेकी शक्ति भी विलुप्त हो गई।

सिकन्दर मिश्र देशके प्रधान नगर मेमफ़िसकी ओर अग्रसर हुआ। यह नगर नील नदीके तटपर बसा हुआ था। इस स्थानमें जानेके लिये सूर्य्य नगर या ग्रीक हीलियोपोलिस नगरपर उसने अधिकार जमा लिया। मेमफ़िसमें जाकर उसने कितने ही उत्सव मनाये। इस स्थानसे लौटकर सिकन्दर वर्त्तमान अलेक्जैण्ड्रियासे दो सौ बीस मीलकी दूरीपर, स्थित एमनका मन्दिर देखने चला

गया। यहाँ जाते और लौटते समय उसे मरु-भूमिमें बड़ा कष्ट झेलना पड़ा था। इस मन्दिरमें जाकर सिकन्दरने यह जाननेके लिये कि वह किसका लड़का है, धरना दिया। यहाँके पुजारीने सिकन्दरका सम्मान करनेके लिये "ओपिदियम" अर्थात् "हे पुत्र" कहकर सम्बोधन किया ; परन्तु उसका उच्चारण ठीक न होनेके कारण "ओ पी दियस" अर्थात् "हे देवपुत्र" यही सुन पड़ा। सिकन्दरका अभीष्ट सिद्ध हुआ। पुरोहितके भ्रमने उसकी कीर्त्ति बढ़ा दी। पुरोहितको यथेष्ट धन देकर सिकन्दर फिर मेमफ़िसमें लौट आया। निर्विघ्न मरु-भूमि पार करनेके कारण उसका गर्व बहुत कुछ बढ़ गया। जब वह मिश्रदेशमें था तब उसने वर्त्तमान अलेक्जैड्रिया नगर बसाया था। प्राच्य और पश्चिमीय देशके मध्यमें रहनेके कारण इस नगरने वाणिज्यमें प्राधान्य प्राप्त किया था।

ईसा मसीहके ३३१ वर्ष पूर्वके वसन्तकालमें सिकन्दर अलेक्जैण्ड्रिया त्यागकर फिर टायरी चला आया। इस समय सिकन्दर समस्त एशिया-माइनर तथा ग्रीसका अधीश्वर हो रहा था। अतः टायरीमें उसके पास अन्यान्य छोटे-छोटे नृपतिगण एकत्र होने लगे और लगातार कई सप्ताह तक कितने ही प्रकारके खेल-तमाशे और नाना प्रकारके उत्सव होते रहें।

दारा जब सिकन्दरसे युद्धमें पराजित हुआ ; तब वह यूफ्रे-टिसके पार भाग गया और अपने साम्राज्यके आभ्यन्तरीन प्रदेशों-में जाकर फिर सैन्य संग्रह करने लगा। जिन सेनानियोंको लेकर

उसने पहली बार युद्ध किया और पराजित हुआ था ; उन्हें अब उसने त्याग दिया और एकदम नई सेना लेकर युद्धकी तैयारियाँ करने लगा। बैक्ट्रिया, वर्त्तमान अफ़गानिस्थान, बलूचिस्तान प्रभृति देशोंसे बहुत-सी सेना संगृहीत हुई। साथ ही भारत-वर्षके भी कई नृपति अपनी इच्छासे दाराका पक्ष ग्रहणकर सिकन्दरसे युद्धके लिये चल पड़े। इस तरह कितने ही देशोंकी सेना लेकर दारा फिर सिकन्दरसे भाग्य-परीक्षा करनेके लिये चल पड़ा। इस बार दाराकी सेनाके ऐतिहासिक एरियनका मत है, कि उसके पास एक लाख पैदल और चालीस हज़ार घुड़-सवार सेना थी। जस्टिनके मतसे ४ लाख पैदल तथा एक लाख घुड़सवार सेना थी और डियोडोरसका कथन है, कि उसके पास आठ लाख पैदल तथा दो लाख घुड़सवार सेना थी और प्लूटार्क कहते हैं, कि कुल दस लाख सेना साथ लेकर दारा सिकन्दरसे यह युद्ध करनेके लिये दुबारा प्रस्तुत हुआ था। अस्तु,

जब सिकन्दरने दाराकी तैयारियोंका समाचार सुना तब वह अपनी सेना लेकर फिनोशियासे चल पड़ा। ग्यारह दिनोंका पथ उल्लङ्घनकर श्रावण मासमें वह यूफ्रेटिस तटके थपेस्कस नामक स्थानमें जा पहुँचा। इस नदीके दूसरे तटपर मैजियम नामक एक फ़ारिसका सेनापति दो हज़ार ग्रीक तथा एक हज़ार फ़ारिस-की सेना लेकर युद्धके लिये तैयार खड़ा था। कापुरुष मैजियम सिकन्दरके आगमनकी खबर पाते ही भाग गया। अतः सिकन्दर अपनी सेनाके साथ बिना किसी वाधाके नदी पार कर गया।

यहाँसे सीधी राह छोड़, वह पेचीली और पहाड़ी राहसे बैबिलन-की ओर अग्रसर हुआ। इस राहसे जानेपर उसे खाद्य-द्रव्य यथेष्ट मिल सकते थे। अतः इस राहसे जाते समय दाराके कितने ही गुप्तचर उसके हाथ लगे। ये सिकन्दरके विरुद्ध प्रचार कर रहे थे। उनके द्वारा ही सिकन्दरको यह भी मालूम हुआ, कि दारा एक बहुत बड़ी सेना लेकर टाइग्रिस नदीके तटपर उससे युद्धके लिये अग्रसर हो रहा है। यह समाचार सुनकर सिकन्दर तेज़ीसे उधर ही चला जिधर दाराकी सेना थी ; परन्तु वहाँ उसे कोई भी न दिखाई दिया। जो हो, टाइग्रिस पारकर सिकन्दरने अपनी सेनाको विश्राम करनेकी आज्ञा दे दी। यहाँ सेना कई दिनोंतक विश्राम करती रही। ईसा मसीहके ३३१ वर्ष पूर्व २० वीं सेप्टेम्बरको पूर्णग्रास चन्द्र-ग्रहण लगा। इस उपलक्षमें सिकन्दरने भी कितने ही देवताओंका पूजन किया और बलिदान चढ़ाया। यहाँ एक ज्योतिषीने उससे कहा था, कि इस ग्रहणसे तुम्हें लाभ होगा और तुम फ़ारिसवासियोंपर विजय प्राप्त करनेमें समर्थ होगे।

अब यहाँ विलम्ब न कर सिकन्दर दाराकी खोजमें लगा। अभी थोड़ी ही दूर आगे बढ़ा था, कि उसे दाराके आगमनका समाचार प्राप्त हुआ। उधर दाराकी सेनाने जब सिकन्दरके आगमनका समाचार सुना तब वह उस स्थानको छोड़ भाग चली। जिनके घोड़े तेज़ न जा सके, वे सिकन्दरके हाथों बन्दी हुए। उन कापुरुषोंसे ही सिकन्दरको यह समाचार मालूम हुआ कि दारा पासमें ही है और उसके साथ भिन्न-भिन्न देशोंकी

बहुत-सी सेना है तथा भारतवर्षसे पन्द्रह हाथी भी युद्धके लिये आये हैं। यह विशाल सेना गाउगामेला नामक स्थानमें है। इस स्थानसे अरबला ६६ मील दूर रहनेपर भी ऐतिहासिकोंने इसे अरबलाका युद्ध कहा है।

अरबलाका युद्ध

सिकन्दरने इसी स्थानपर अपना पड़ाव डाल दिया और वहाँ रोगी तथा अकर्म्मण्य सैनिकोंको रख, दारासे युद्ध करनेके लिये चल पड़ा। पाँचवें दिन सूर्योदयके समय वह एक पहाड़ीपर जा पहुँचा। यहाँ उसने अपनी सेना रखकर युद्ध-स्थानको अच्छी तरह देखा। यहाँसे लगभग दो कोसकी दूरीपर दाराकी सेना थी। वह सिकन्दरके आगमनका समाचार सुनकर युद्धके लिये तैयार हो गई।

परमिनीने दाराकी सैन्य संख्या अधिक देखकर रात्रिके अन्धकारमें आक्रमण करनेका परामर्श दिया; परन्तु इसे धोखा समझ कर सिकन्दरने अस्वीकार कर दिया।

दूसरे दिन सवेरे ही सिकन्दर हँसता हुआ अपनी सेनामें जा पहुँचा। उसका प्रसन्न मुखमण्डल देख सेना भी उत्साहित

दो उठी। सिकन्दरने अब अपनी सेनाको आठ भागोंमें विभक्तकर सेनापति फिलटकी अधीनतामें युद्ध करनेकी आज्ञा दे दी। परमिनीका पुत्र निकानर और क्रेटेरसको पैदल सेनाके दाहिने और बायें भागमें रहनेकी आज्ञा मिली। बाईं ओर थेसिलीय और सम्मिलित ग्रीक घुड़सवार रखे गये। सिकन्दर दाहिने और परमिनी बायें भागमें रहकर सैन्य-परिचालन करने लगे। इस बार सिकन्दर सात हज़ार घुड़सवार और चालीस हज़ार पैदल सेना ले दारासे युद्धमें प्रवृत्त हुआ।

दाराने अपनी सेनाके वाम भागमें बैक्ट्रियाकी घुड़सवार सेना रखी। इसके बाद दानस (कैस्पियन सागरके पूर्वीय तटकी सेना) आरचोटियन (अफ़गानिस्थान, बलूचिस्थानके मध्यकी सेना) उसके बाद फ़ारिसकी घुड़सवार और केडूसियन (कैस्पियन सागरके दक्षिण पश्चिम ओरकी रहनेवाली सेना) सेना रखी थी। दाहिनी ओर मेसोपोटामिया, पार्थियन (खुरासानके अधिवासी) प्रभृति स्थानोंकी सेना थी और मध्यमें दाराके सामने नाना प्रकारके योद्धाओंसे पूर्ण रथ और १५ हाथी सिकन्दरके प्रति-स्पर्द्धी होकर दण्डायमान थे।

जब दोनों सेना इस भावसे अग्रसर हुई और जब सिकन्दरकी सेनाने दाराकी सेनाके बहुमूल्य वस्त्र देखे तब सिकन्दरने उन्हें घूमकर दाराकी सेनाके बाम भागपर आक्रमण करनेकी आज्ञा दी। आजतक सिकन्दरको युद्ध-स्थलमें हाथियोंसे कभी काम न पड़ा था। इसलिये मालूम होता है, कि उसने सामनेसे आक्रमण न

किया। दाराने भी अपनी सेनाको सम्मुख अग्रसर होनेकी आज्ञा दी। इसके बाद जब सिकन्दरकी सेना कुछ और भी आगे बढ़ी। तब उसने बैक्ट्रिया और शकदेशीय सेनाको सिकन्दरके दक्षिण पार्श्वपर आक्रमण करनेकी आज्ञा दी। जो ग्रीकसेना इनपर आक्रमण करनेके लिये भेजी गई थी, वह दाराकी सेनाका आक्रमण न सह सकी। अतः ग्रीकसेनाकी सहायताके लिये अन्य सेना अग्रसर हुई। उन दोनोंने मिलकर किसी तरह अपने स्थानकी रक्षा की। इसके बाद शस्त्र तथा योद्धाओंसे पूर्ण-रथ सिकन्दरकी ओर अग्रसर हुए। ग्रीक लेखकोंका कथन है, कि इनके चालक सिकन्दरकी सेनाके लम्बे-लम्बे बर्छोंकी चोटसे अकर्म्मण्य हो पड़े। इसलिये वे किसी काममें ही न आये। इस युद्धमें हाथियोंके कार्यके सम्बन्धमें कुछ भी मालूम नहीं होता।

इसके बाद सिकन्दर अपनी दाहिनी ओरकी सेना ले दाराकी सेनाकी प्रथम श्रेणीको भेदकर भीतर घुसा और उसी ओर अग्रसर होने लगा जिधर दारा अपनी विश्वासी सेनाके बीचमें रहकर युद्ध-परिचालन कर रहा था। इस समय सिकन्दरका पराक्रम देखने ही योग्य था। उसने फ़ारिसकी सेनाका व्यूह भेद दिया। थोड़ी-सी जगहमें बहुत-सी फ़ारिसकी सेना रहनेके कारण वह अच्छी तरह शस्त्र न चला सकती थी। इसी समय सिकन्दरके सेनापति पेरिट्रसने बड़े पराक्रमसे दाराकी सेनाके वाम पार्श्वपर आक्रमण किया। बस यह आक्रमण होते ही दाराकी सेना विश्रृ-

ङ्कल हो गई। डियोडोरसका कथन है, कि दाराने बड़े उत्साहसे युद्ध किया था ; परन्तु एरियनका मत है, कि दारा पहलेसे ही डरा हुआ था।

यद्यपि इस ओर सिकन्दरकी विजय रही ; परन्तु उसकी सेनाका दूसरा भाग बड़ी ही दुर्द्दशामें जा पड़ा। वह शत्रुओंके आक्रमणसे व्याकुल हो उठा। इस समय दाराको विजय प्राप्त हुआ ही चाहती थी तथा युद्ध-निपुण परमिनी बारम्बार सिकन्दरके पास सहायताके लिये मनुष्य भेजता था ; परन्तु सिकन्दर उसकी सहायता न कर सकता था। सिकन्दर उसकी यद्यपि सहायता न कर सका, परन्तु उसने कहला भेजा, कि मैंने विजय प्राप्त की है। दारा रणक्षेत्र छोड़कर भाग गया। कुछ देरतक डटकर युद्ध करनेसे ही काम बन जायगा। सिकन्दरका अनुमान ठीक ही हुआ भी। जिस समय दाराके भाग जानेका समाचार मिला ; उस समय यह समाचार सुनते ही दाराकी सेना किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गई। जिसके वेगसे शत्रु भाग जाना चाहते थे, अब वही सेना स्वयं भागनेके लिये तैयार हो गई।

सिकन्दरकी सेना जब दो भागोंमें विभक्त हो गई थी, ठीक उसी समय भारतीय और फ़ारिसकी सेनाने उसका मध्य भाग भेदन कर शत्रुके पीछेसे घोरतर युद्ध आरम्भ किया था। उनके आक्रमणसे ग्रीक सेना एकदम परास्त और हतवीर्य हो गई थी और विजेताके हाथमें मसिडन सेनाका लूटा हुआ सब द्रव्य आ पहुँचा था। सिकन्दरको जब यह समाचार मिला तब उसने कहला

भेजा कि यह सब द्रव्य थोड़े समय बाद ही हमलोगोंके हाथोंमें आ जायगा।

वास्तवमें कापुरुष दाराने भागकर बना बनाया खेल चौपटकर दिया। उसके भागनेका समाचार सुनते ही समस्त सेना घृणित भावसे भागने लगी। मानों युद्धस्थलसे भागनेके लिये ये आपसमें ही स्पर्द्धा दिखाने लगे। इस समय यदि मित्र भी भागनेमें बाधा प्रदान करता तो वह शत्रुकी भाँति मार डाला जाता था।

सिकन्दरने अब इस भागती हुई सेनाका ठीक उसी तरह पीछा किया; जिस तरह चरवाहा भेंड़के पीछे रहकर उसे ले जाता है। इस समय सिकन्दरकी सेनाने इतने मनुष्योंकी हत्या की थी, कि उनके शस्त्रोंकी धार कम हो गई थी। एरियनके मतसे इस युद्धमें तीन लाख फ़ारिसवासी निहत हुए। इसके अतिरिक्त और भी कितने ही मनुष्य कैद करने बाद मार डाले गये थे। डियोडोरसका कथन है कि नब्बे हज़ार मनुष्य मारे गये थे। यह तो दाराके पक्षकी हत्या हुई। अब एरियनके मतसे सिकन्दरकी ओरके एक सौ और डियोडोरसके मतसे पाँच सौ सिकन्दरकी सेना मारी गई थी। इस तरह इस युद्धमें ईसाके ३३१ वर्ष पूर्व सेप्टेम्बर मासमें फ़ारिसकी राजलक्ष्मी फ़ारिसको त्याग कर चली गई।

युद्धके बाद सिकन्दरने दाराका पीछा करना आरम्भ किया। दिनभर वह आगे बढ़ता ही चला गया। परमिनी भी अपनी सेना आगे बढ़ता गया। फ़ारिसवासियोंके द्रव्य तथा हाथी पर-

मिनीके हाथ लगे। इसके बाद लाइकस नदीके तटपर कुछ देर विश्रामकर आधी रातके समय ही फिर यह सेना दाराकी खोजमें चल पड़ी। दारा अरबलासे भी भाग गया। इसी लिये अरबलामें उसका पता न लगा; परन्तु बहुत-सी सम्पत्ति और दाराका रथ सिकन्दरके हाथ आ गया।

अब सिकन्दर बैबिलनकी ओर बढ़ा। बैबिलनके शासन-कर्त्ताने उसका आनुगत्य स्वीकार किया। सिकन्दर बिना किसी बाधाके नगर, दुर्ग तथा धनरत्न प्राप्तकर बड़ा ही प्रसन्न हुआ। नगरमें जाकर उसने जरेक्ससके तोड़े हुए मन्दिरोंको फिरसे बनानेकी आज्ञा दे दी। सैनिकोंमें खूब धन बाँटा। इसके बाद बीस दिवसका पथ अतिक्रम कर वह सुसा नगरमें जा पहुँचा। वहाँसे उसने वे द्रव्य और मूर्त्तियाँ फिर ग्रीसमें भेज दीं जो जरेक्सस उठा लाया था। इसके अतिरिक्त अट्ठारह करोड़ रुपयों-का द्रव्य उसे इस स्थानपर प्राप्त हुआ।

इसके बाद सिकन्दर आगे बढ़ता हुआ फ़ारिसकी राजधानी-की ओर चला। इस समय उसकी कार्य-तत्परता और तेज़ी अभूतपूर्व थी। उसने बड़ी शीघ्रतासे वहाँ पहुँचकर तक्त-इ-जमशेदपर अधिकार जमा लिया। यहाँ सिकन्दरने अपनी हृदय-हीनता और दुष्टताका पूरा पूरा परिचय दिया। परमिनो आदि सेनापतियोंके मना करनेपर भी उसने एक वेश्याकी बातोंमें आकर इस समृद्धिशाली स्थानमें आग लगवा दी; परन्तु कुछ दिन बाद ही इस कार्यके लिये उसे खूब परिताप भी हुआ। इस

स्थानपर बहुमूल्य द्रव्यके अतिरिक्त १२ हज़ार टैलेएट या ४३ करोड़ ५० लाखसे भी अधिक रुपये प्राप्त हुए।

सिकन्दर इतनेसे भी शान्त न हुआ। अब वह दाराकी खोजमें और भी उत्तरकी ओर बढ़ा। वह बड़ी ही शीघ्रतासे नद-नदी पर्वत उल्लङ्घन करता हुआ बढ़ता जाता था। प्लूटार्कका कथन है, कि उसने ११ दिनोंमें १९० मीलका पथ अतिक्रमण किया था।

दाराका परिणाम

समय सबका एक समान नहीं जाता। जो दारा धन, जन, अधिकार सबमें श्रेष्ठ था, उसका परिणाम बड़ा ही शोचनीय हुआ। वह चुपचाप इधरसे उधर भागने लगा। उसके कर्म्मचारियोंने एक एक कर उसे त्याग दिया। जिस समय वह इस तरह अपने आत्मीयोंसे अलग होकर हीन-वेशमें इधर उधर छिपा फिरता था; उस समय उसके ही एक कर्म्मचारीने विश्वास-घातकर उसे कैद कर लिया और मार डाला। ग्रीक ऐतिहासिकोंका कथन है, कि सिकन्दर इतना कष्ट उठाकर भी दाराको जीवित अवस्थामें न पा सका। उसने वहाँ जाकर देखा, कि कितनी ही अक्षोहिणी सेनाका परिचालक, फ़ारिस साम्राज्यका नियन्ता, नाना जातियोंका अधीश्वर, केवल एक प्रभु-भक्त कुत्तेकी रक्षामें अनाथकी नाईं भूमिपर चिर-निद्रामें अभिभूत पड़ा है।

सिकन्दरका हृदय अत्यन्त कठोर रहनेपर भी दाराका यह शोचनीय परिणाम देखकर उसकी आँखोंमें आँसू उमड़ आये और बालकोंकी भाँति रोकर उसने अपने पापका बोझा हलका किया। दारा अपनी पचास वर्षकी अवस्थामें थोड़े ही दिनोंतक राज्य-सुख भोग ईसा मसीहके ३३० वर्ष पूर्व जुलाई मासमें परलोक सिधार गया। सिकन्दरने उसके शवका यथोचित रीतिसे सत्कार कराया। जिस समाधि-क्षेत्रमें उसके पूर्व पुरुषोंको समाधि दी गई थी, दाराको भी उसके पदोचित सम्मानके साथ उसी स्थान पर समाधि दी गई।

इस समय सिकन्दरका चरित्र बड़ा ही कलुषित हो गया था। वह खूब मद्यपान करता था और तीन सौसे भी अधिक सुन्दरियाँ उसकी परिचर्य्या करती थीं। दिन रात गाना बजाना होता था और ब्रह्मचर्य-हीन होनेके कारण वह और भी उद्धत स्वभावका हो गया था।

सिकन्दरने अपने कुछ सैनिकोंको स्वदेशमें भेज बैक्ट्रियाकी ओर प्रस्थान किया। इस समय उसकी हत्याके लिये एक षड़यन्त्र हुआ था। लोगोंका कथन है कि इसमें परमिनीका पुत्र फिलट भी लिप्त था; परन्तु ठीक ठीक प्रमाण नहीं मिलता। प्रमाण मिले या न मिले। फिलटको अपना जीवन विसर्जन करना पड़ा था। इस समय परमिनी अपने सेनाके साथ कुछ दूरी पर था। उसने किसी पत्रमें अपने पुत्रको लिखा था, कि तुम सावधान रहना। इसलिये वह भी दोषी समझा गया। परमिनीको मारनेके

लिये सिकन्दरने उसीके एक विश्वासी मनुष्यको भेजा। साथमें एक पत्र भी भेजा। उसने परमिनीको पत्र दिया। जिस समय परमिनी पत्र पढ़ रहा था, उसी समय उस विश्वासघातीने उसकी हत्या की।

क्लीटस सिकन्दरका विश्वासी सेनापति परन्तु स्पष्ट वक्ता था। इसने ग्रेनिकसके युद्धमें अपने प्राण जानेकी सम्भावना रहते हुए भी सिकन्दरकी जीवन-रक्षा की थी। परमिनीके मरनेपर सिकन्दरने इसे एक प्रदेशका शासनकर्त्ता नियुक्त किया। इसी प्रसन्नतामें उसके जानेके पहले एक नैशभोज हुआ। खूब शराब ढली। सिकन्दर अपने मुँहसे अपनी वीरताकी कहानी बखान करने लगा और फ़िलिपको दोष देने लगा। वृद्ध क्लीटसने बहुत दिनोंतक फ़िलिपके साथ कितने ही स्थलोंमें युद्ध किया था। उसने फ़िलिपकी बहुत कुछ प्रशंसा की। केवल इतना ही नहीं उसने परमिनीके गुणोंकी भी बड़ी प्रशंसा की और साथमें यह भी कहा, कि आपकी पदपदपर सहायता करनेवाला परमिनीके समान ही पुरस्कार पाता है। सिकन्दरने बिगड़कर उसे उस स्थानसे निकल जानेके लिये कहा। उत्तरमें वह बोला—"हाँ हाँ आपके पास सत्य कहनेवालोंको अब बैठना उचित नहीं है। अब असभ्य और वे खुशामदी ही आपके पास बैठेंगे जो आपका फ़ारिसवासियों-सा कमरबन्द और सुन्दर वस्त्र देखकर आपकी प्रशंसा करेंगे।" अन्तमें यह भी सिकन्दरके हाथों मारा गया।

कितने ही सिकन्दरके इस दुर्व्यवहारसे बड़े ही अप्रसन्न हुए।

जो हो सिकन्दर अब और भी आगे बढ़ा और धीरे धीरे समरकन्दके पास आ पहुँचा। यहाँके मनुष्योंने उसे वाधा दी। इसलिये उन लोगोंको भी खूब कष्ट उठाना पड़ा। लगातार युद्धमें विजय प्राप्त करनेके कारण उसके सैनिक बड़े ही उद्दण्ड हो गये थे और घोरतर युद्धमें भी प्राणोंकी ममता त्याग, विजय किये बिना न लौटते थे।

इस समय सिकन्दर खूब बलशाली हो गया था। उसने ग्रीससे कितने ही प्रकारके मनुष्य बुलाकर अपनी सभा पूर्ण की थी। इनमें ग्रन्थकार, कवि और दार्शनिकोंकी संख्या भी कम न थी। सिकन्दर फ़ारिसवासियोंके आचार व्यवहारका बड़ा पक्षपाती हो गया था। फ़ारिसवाले भूमि स्पर्शकर अपने राजाको अभिवादन करते थे। सिकन्दरने यही चाल चलाई। कितने ही ग्रीक पण्डितोंने उसके इस विचारका अनुमोदन किया। परन्तु अरस्तू और कैलिस्थानीने इसके विरुद्ध मत दिया। इस समय सिकन्दरकी उद्दण्डता देखकर एक युवकने उसे मार डालनेकी चेष्टा की। इन दिनों सिकन्दरके पास एक स्त्री आती थी। वह जो कहती, वही सत्य होता था। उसीके कथनानुसार वह उस रातमें सोया ही नहीं, जिस रातमें हत्या होनेवाली थी। दूसरे ही दिन वह युवक पकड़ा गया। उसका नाम हारमोलेयस था। उसने दोष स्वीकार करते समय कहा,—"कोई स्वाधीन पुरुष इसकी दाम्भिकता अब सहन नहीं कर सकता। इसने अन्यायसे फिलटको मारा तथा परमिनी और अन्यान्य पुरुषोंकी हत्याकर सिंहासन

कलंकित किया है।" उसे भी बड़ी निर्दयतासे सिकन्दरने वध कराया। स्पष्ट बोलनेके लिये विद्वान कैलिस्थानी भी मारा गया।

इसके बाद सिकन्दर बैक्ट्रियाको सर करनेका उद्योग करने लगा। बैक्ट्रियाको सर करनेमें उसे यथेष्ट कष्ट उठाना पड़ा। सहजमें वे दासत्व शृङ्खलामें आवद्ध न हुए थे। यहाँ अक्षयरथी अथवा अजयरथी नामक एक पहाड़ी राजासे उसका भयानक युद्ध हुआ। इसका दुर्ग बड़ा ही दृढ़ और पर्वतपर बना था। दुर्गमें भोजनकी सामग्री, शस्त्र तथा जलकी कमी न थी। इसलिये बहुत दिनोंतक घेरा डाले रहनेपर भी अजयरथीके आत्म-समर्पण करनेकी सम्भावना न दिखाई दी। बराबर वर्फसे ढका रहनेके कारण यह पहाड़ और भी दुर्गम हो गया था। सिकन्दरने इस समय चालसे काम लिया। उसने अपने सैनिकोंको एकत्र कर कहा कि जो सबके पहले पर्वतपर पहुंच सकेगा उसे ४४ हज़ार, दूसरा तीस हज़ार और अन्तमें जो पहुँचेगा उसे ५ हज़ार रुपये इनाममें मिलेंगे। पुरस्कारकी इस घोषणाको सुन लगभग तीन सौ सैनिक उस दुरारोह पर्वतपर जानेके लिये तैयार हो गये। ये अँधेरी रातमें उसी स्थानसे चढ़े जहाँसे शत्रुके चढ़नेकी कोई सम्भावना न थी और जो दुरारोह स्थान माना जाता था। ये खूँटे ठोक तथा रस्सीकी सीढ़ीसे ऊपर चढ़ने लगे। इन तीन सौ मनुष्योंमें ३० तो गिरकर परलोक सिधार गये। बाकी किसी तरह ऊपर जा पहुँचे। सूर्य्योदय होते होते वे पर्वत शिखरपर दिखाई देने लगे। इन्हें ऊपर पहुँचा हुआ देखकर सिकन्दरने

निम्नस्थ दुर्ग-रक्षकको कहला भेजा, कि तुम्हारे किलेपर अधिकार हो गया। वह देखो सैनिक ऊपर खड़े हैं। दुर्गवासी ऊपर सैन्य देखकर ही विह्वल हो पड़े। संख्या जाननेकी उन्होंने चेष्टा भी न की। अतः सबने सिकन्दरके निकट आत्म-समर्पण कर दिया। इस युद्धमें जो द्रव्य सिकन्दरके हाथ लगे, उनमें रसना या रक्षणा (रोकज़ाना) नाम्नी एक परमा सुन्दरी राज-कन्या थी। दाराकी स्त्रीके अतिरिक्त रक्षणाके समान दूसरी सुन्दरी उस समय न थी। सिकन्दरने पीछे इससे विवाह किया था।

यह बाह्लीक प्रदेश था। इसे विजय करने बाद सिकन्दरने पराक्रमशाली देवराज्यपर आक्रमण किया। ये काकेशस नदी तट-पर पार्वत्य प्रदेशमें रहते थे। सम्भवतः तक्ष-वंशीय कुलके क्षत्रिय थे। ये सिकन्दरके आक्रमणका समाचार सुन अपनी स्वतन्त्रता-की रक्षाके लिये प्रस्तुत हो गये। ये जिस दुर्गमें रहते थे उसका नाम ग्रीकोंने चेरिणी लिखा है। इस दुर्गमें और भी कई नृपति थे। यह चेरिणी पर्वत लगभग २० स्टैड ऊँचा और ६० स्टैड चौड़ा था। जानेके लिये राह भी इतनी संकीर्ण थी कि दो मनुष्य एक साथ न जा सकते थे। यह चारों ओरसे गहरी पहाड़ी नदीसे घिरा था। सिकन्दर इसकी दुर्गमता देखकर इस पर अधिकार जमानेके लिये और भी व्यग्र हुआ। इस पर्वतपर बहुतसे वृक्ष थे। उन वृक्षोंको काटकर सिकन्दरने नदीमें पुल बाँधना आरम्भ किया। दिन रात काम होने लगा। पुल तैयार हो गया। अब सिकन्दरके सैनिक पहाड़पर चढ़कर आक्रमण

करने लगे। इधर सिकन्दरकी सेनाने अपनी रक्षाके लिये अपनी सेनाके सामने एक प्राचीर खड़ी कर ली। इससे किलेसे आये हुए तीर इनकी हानि न पहुँचा सके। इधर इनके मारे हुए तीर किलेमें पहुँचने लगे। ग्रीक लेखकोंका कथन है, कि इनकी कोई हानि न होती देख तथा इनका तीर दुर्गमें जाते देखकर किले-वालोंने इन्हें अजेय समझ लिया। उन्होंने सन्धिके लिये दूत भेजा। सिकन्दरने इस उत्तम अवसरको उपयोगमें लाना उचित समझ कर अजयरथीको ही भेजा। अजयरथीने सिकन्दरकी बहुत कुछ प्रशंसाकर उसे अपने दलमें मिला लिया। इस तरह उस राज्य-पर भी सिकन्दरका अधिकार हुआ। सिकन्दरने राजाको बहुत कुछ खातिर की और उस राजाने भी बहुत-सा धन और भोजन-सामग्री देकर सिकन्दरका मान बढ़ाया।

इसके बाद सिकन्दर भारत-विजयके लिये चल पड़ा। उसने सैनिकोंको एकत्र कर कहा,—"हमलोग जिस उद्देश्यसे देशसे चले थे, अब वह उद्देश्य पूरा होगा और भारतवर्षमें जाकर हमलोग खूब धन-रत्न एकत्र कर सकेंगे।"

अब आगे चलकर मालूम होगा, कि भारतवासियोंसे सिक-न्दरकी कैसी निपटी और भारतवासियोंने इस युरोपीय शत्रुसे किस तरह अपने देश और स्वाधीनताकी रक्षा की।

दूसरा खण्ड

सिकन्दर शाह ।

हम जिस समयकी बातें कह रहे हैं ; उस समय भारत वर्ष तो हिन्दू राजाओंसे शासित होता ही था, साथ ही साथ वे स्थान जो इस समय भारतके बाहर समझे जाते हैं ; वे भी हिन्दू राजाओं द्वारा ही शासित होते थे अर्थात वर्त्तमान अफ़गानिस्थान, बलख, बोखारा, समरकन्द प्रभृति प्रदेशोंमें हिन्दू राज्य ही स्थापित था तथा इन राजाओंसे भारतवासी अच्छी तरह परिचित थे और इनमें वाणिज्य तथा विवाह-सम्बन्ध भी

हुआ करता था। इसी कारणसे जब सिकन्दरने इस तरह फ़ारिस प्रभृति स्थानोंपर विजय प्राप्त करनी आरम्भ की ; तब यह समाचार भी भारतमें आ पहुँचा और उसी समयसे भारतीय नृपतिवर्ग भी सिकन्दरके भारत आक्रमणके सम्बन्धमें शङ्कित हो उठे।

उधर सिकन्दर भी भारतवासियोंसे अपरिचित न था। दाराकी सेनामें सम्मिलित होकर भारतवासियोंने जो युद्ध-कौशल दिखाया था और जिस तरह भारतका वैभव उसने बन्दी-जनोंके मुखसे सुना था, उससे वह माँस-लोलुप शृगालकी भाँति भारतपर आक्रमण करनेके लिये प्रस्तुत हो गया। एक बात और भी है। इतिहासपर दृष्टि डालनेसे मालूम होता है कि इस समय जो स्थान भारतके बाहर समझे जाते हैं ; उस समय इनमेंसे कितने ही भारतकी सीमाके भीतर ही समझे जाते थे। परन्तु भारतीय नृपति उनकी सहायता न करते थे ; इसीलिये वे क्रमशः भारतकी सीमाके बाहर हो गये। अस्तु,

बाह्लीक देश विजय करनेके बाद सिकन्दरके हृदयमें भारत-विजयकी आकांक्षा उत्पन्न हुई और वह भारतपर आक्रमणकर अपनी रण-तृष्णा निवारणकी चेष्टा करने लगा। अस्तु, जिस समय वसन्त-ऋतु आ पहुंची और सूर्यके उत्तापसे बर्फ का पिघलना आरम्भ हो गया। उस समय अर्थात ईसाके ३०७ वर्ष पूर्वकी वसन्त-ऋतुमें वह पचास या साठ हज़ार सैनिकोंके साथ भारतपर आक्रमण करनेके लिये चल पड़ा और हिन्दू-कुश (Indian caucasus) की खवाक या काओशान घाटीको पार करता हुआ

कोह-इ दमनमें आ पहुँचा। इन स्थानोंको उल्लङ्घन करते समय, उसकी सेनाको खाद्य तथा शीतके कारण अत्यन्त कष्ट झेलना पड़ा था और ग्यारह दिवस तक लगातार कष्ट सहनकर उसकी सेना कोह-इ-दमनमें पहुँची थी। इसके बाद वह हिन्दू-कुशसे अवतरण कर ग्रीक निकाइया (Nicaea) नामक स्थानमें जो वर्त्तमान जलालाबादके पास है, आ पहुँचा। यहाँ उसने बड़े समारोहसे एथिना देवीका पूजन किया और इसी स्थानसे उसने तक्ष-शिलाके अधीश्वर आम्भिके पास दूत भेजे और आम्भिने भी सिकन्दरका पक्ष ग्रहण किया। जिस समय सिकन्दरने भारतपर आक्रमण किया था, उसके कुछ पहले ही आम्भिके पिताका परलोक वास हुआ था। अतः इसमें आश्चर्यकी कोई बात नहीं है, यदि राजधर्म्मसे अनभिज्ञ आम्भि अपनी स्वतन्त्रताकी ओर ध्यान न दे, सिकन्दरके पैरोंपर लोट पड़े हों। आम्भि ३५ हाथी तथा इस देशके उत्पन्न नाना प्रकारके उत्तमोत्तम पदार्थ लेकर सिकन्दरकी सेवामें उपस्थित हुए थे। साथ ही उन्होंने २०० टैलेण्ट नक्द भी सिकन्दरको अर्पण किये थे। उस समय सिकन्दरने आम्भिकी दी हुई नज़र न ग्रहण कर, फ़ारिससे लाये हुए बहुतसे द्रव्य आम्भिको परिवर्त्तनमें दिये थे। सिकन्दरने जो सामान आम्भिको प्रदान किये थे, वे बहुत ही बहुमूल्य थे ; इसलिये सिकन्दरके कितने ही साथी उसपर अप्रसन्न हो गये थे। यह तक्षशिला स्थान लगभग बारह वर्गमीलका हसन अब्दुल नामक स्थानसे पूर्व दक्षिण और रावलपिण्डीसे उत्तर पश्चिमका स्थान घेरे हुए था। उस समय यह

पूर्वीय नगरोंमें एक प्रधान नगर था और विद्यापीठ रहनेके कारण बड़ा ही प्रसिद्ध हो रहा था। वहाँ विशेष कर आयुर्वेदकी शिक्षा दी जाती थी। आम्भिका अत्यन्त सम्मान करनेके कारण आम्भि सिकन्दरके बहुत ही अनुरक्त हो गये थे और इन्होंने भी भारतमें सिकन्दरको विजय प्राप्त करनेमें बहुत बड़ी सहायता पहुँचाई थी।

सिकन्दरने अपनी सेनाको दो भागमें विभक्त कर हिपाइस्तियन और पर्द्दिकाकी अधीनतामें आधी सहचर सैन्य और समस्त वेतनभोगी सेना ग्रीक पियोग लाओरिस (पुष्कलावती)* की ओर भेज दी। यद्यपि भारतवासी इस सेनाके साथ पथ-प्रदर्शकके रूपमें थे; परन्तु वास्तवमें यह सेना सहजमें ही अपने अभीष्ट स्थानमें न पहुँच सकी थी। जिस समय यह सेना काबुल नदीके किनारेसे होती हुई आगे बढ़ी; उस समय हस्ती (Hasti) या अस्तीश (Astes) नामक एक पहाड़ी राजाने एकमास तक बड़े साहससे सिकन्दरकी गति रोध की थी; परन्तु अन्तमें वह भी मृत्यु-मुखमें पतित हुए और सिकन्दरका पथ उन्मुक्त हुआ। जो हो, हिपाइस्तियन गान्धार देशको विजय कर सिन्धु-नदीके किनारे आ पहुँचा और सिन्धु-नदीको पार करनेका उद्योग करने लगा।

सिन्धु नदी तक पहुँचनेमें सिकन्दरको भी कम कष्ट न झेलना पड़ा था। उस समयके पहाड़ी राजे तथा मनुष्योंमेंसे

---

* पेशावरका निकटवर्ती वर्तमान चारसदा प्राचीन पुष्कलावती माना जाता है।

कितनों हीने दुर्गम पहाड़ी प्रदेशोंमें जाकर अपनी रक्षा की थी। जो युद्ध कर सकते थे, वे युद्धके लिये सज्जित हो, नगरके बाहर आ खड़े हुए थे। सिकन्दरने भी उन्हें युद्धके लिये सुसज्जित देखकर उनपर बड़े वेगसे आक्रमण कर दिया था। दोनों ओरके मनुष्य बड़ी वीरतासे लड़े थे। इस भयानक युद्धमें विपक्षकी ओरसे फेंका हुआ एक तीर सिकन्दरका सुदृढ़ आवरण छेदकर उसके बाहुमें घुस गया था। इससे सिकन्दरको बहुत कष्ट झेलना पड़ा था और उसके साथी इस घटनासे इतने क्रुद्ध हो गये थे, कि उन सबने जितने मनुष्य कैद किये गये थे सबको मार डाला और नगरको श्मशानमें परिणत कर दिया।

यहाँसे सिकन्दर अन्दक (Andaka) नामक नगरकी ओर अग्रसर हुआ। ग्रीक ग्रन्थकारोंका कथन है कि अन्दकके नगरपालने नगर समर्पण कर उसकी वश्यता स्वीकार ली। इस स्थानके अन्यान्य राजाओंपर अधिकार जमाकर सिकन्दर अपने सेनापति क्रेटरस (Krateros) को कुनार उपत्यकाको जय करनेके लिये छोड़कर स्वयं अन्यान्य सैनिकोंके साथ अस्पेसियनोंपर आक्रमण करनेके लिये चल पड़ा। दो दिवसोंका पथ उलङ्घन कर वह शत्रुके नगरमें जा पहुँचा। सिकन्दरके आगमनका समाचार सुनते ही नगरवासी नगरमें आग लगा, पहाड़ोंमें भाग गये। उन्होंने विचारा, कि यदि शत्रु नगरपर अधिकार कर लेगा तो उसे भोजनके पदार्थ तथा आश्रय-स्थान प्राप्त होंगे, इससे वह अधिक बलवान होगा। इनको भागते देखकर सिक-

न्दरकी सेनाने इनका पीछा किया और कितनोंको ही बड़ी निर्दयतासे मार डाला।

सिकन्दर इन प्रदेशोंपर अधिकार जमाकर वर्त्तमान बाजोर उपत्यकामें जा पहुँचा। इसी स्थानमें कुनार उपत्यकापर अधिकार जमाकर क्रेटेरस भी उससे आ मिला। इस स्थानका प्राकृतिक सौन्दर्य देखकर सिकन्दरने फिर इस नगरको बसाना चाहा और जिन मनुष्योंने नगरमें रहनेकी इच्छा प्रकट की उन्हें क्षमा कर नगरमें बसनेकी आज्ञा दे दी।

सिकन्दरके भयसे जो मनुष्य ग्राम तथा नगर छोड़ पहाड़ोंमें जा बसे थे, अब सिकन्दरने उनका पीछा करना आरम्भ किया। वह कितने ही पर्वत उल्लङ्घन करता हुआ.अन्तमें एक ऐसे पहाड़के नीचे जा पहुँचा जिसपर बहुतसे भारतीय थे। पहाड़के ऊपर आग जलती देखकर सिकन्दर समझ गया कि यहाँ मनुष्य हैं। अतः उसने अपनी सेनाको दो भागोंमें विभक्तकर एक भागको पर्वतके नीचे छोड़ दिया और दूसरा लेकर पर्वतपर चढ़ा। वहाँ जाकर वह अपनी सेनाको तीन भागोंमें विभक्तकर उनपर टूट पड़ा। भारतीयोंने भी शत्रुको आ पहुँचा देख, बड़े वेगसे उनपर आक्रमण किया। दोनों ओरके मनुष्य प्राणोंकी ममता त्यागकर युद्ध करने लगे। एक पक्ष स्वाधीनता और मान-सम्भ्रमकी रक्षा लिये लड़ता था और दूसरा उच्च आशाके वशीभूत हो। परन्तु सब समय न्याय-पक्षकी विजय नहीं होती। भारतीय प्राणोंकी ममता त्यागकर युद्ध करनेपर भी विजय न प्राप्त कर सके और

पराजित, निहत तथा बन्दी हुए। इस युद्धमें लगभग ४००० मनुष्य बन्दी हुए। यहाँ सिकन्दरके हाथ दो लाख तीस हज़ार गाय बैल लगे। इनमेंसे बहुतसे उसने अपने देशमें भेज दिये।

स्वदेशवासियोंकी पराजयकी बात सुन पार्श्ववर्त्ती असकेनियन (Assakenian) अश्वकगण इस पराजयका बदला लेनेको बड़े उत्साहसे तैयार हो गये। वे शत्रुओंका आक्रमण रोकनेके लिये बीस हज़ार घुड़सवार तथा ३० हज़ार पैदल और तीस हाथी ले युद्धके लिये चल पड़े।

सिकन्दर भी इनपर आक्रमण करनेके लिये स्वयं गौरी नदी (गौरीयस) पारकर मशगा या मशकवती नगरीकी ओर शीघ्रतासे चल पड़ा। जिस समय सिकन्दर नदी पारकर शिविर स्थापनकी चेष्टा कर रहा था; उसी समय अश्वकोंने बड़े वेगसे उसपर आक्रमण किया। सिकन्दरको पीछे हटना पड़ा। सिकन्दरकी सेनाको पीछे हटते देख अश्वकोंने और भी प्रबल वेगसे आक्रमण किया और सिकन्दरकी सेनाका पीछा करते हुए आगे बढ़ने लगे। बस, इसी समय अपनेको विजयी समझकर अश्वकगण विश्टङ्खल हो पड़े। सिकन्दरको यह अच्छा अवसर मिल गया। उसने पीछे हटना बन्दकर बड़े वेगसे अश्वकोंपर आक्रमण किया। अश्वक पीछे हटे और उन्होंने नगरमें घुसकर द्वार बन्द कर लिया। यहाँ सिकन्दरको एक तीरकी चोटसे आहत होना पड़ा। दूसरे ही दिवस सिकन्दरने अपने प्राचीर-ध्वंसी यन्त्रों द्वारा नगरपर आक्रमण किया। किसी तरह प्राचीर-

का एक भाग टूट गया। इसी स्थानसे वह अपनी सेनाके साथ नगरमें घुसा ; परन्तु भारतवासियोंने इस तरह अपना युद्ध-कौशल दिखाया कि उसे फिर भागना पड़ा। पराजित मसिडोनियाकी सेना उस दिन फिर युद्ध न कर सकी। दूसरे दिन फिर युद्ध हुआ ; परन्तु जय-पराजयका कुछ स्थिर न हुआ। तीसरे दिवसके युद्धमें सिकन्दर अपनी सेनाके आगे रहकर सैन्य-परिचालन करने लगा। उसने प्राचीर-ध्वंसक यन्त्रों द्वारा प्राचीरपर तख्ते रख, जमीनसे वहाँ तकका पुल बँधवा, उसीपर चढ़कर आक्रमण आरम्भ किया ; परन्तु वह तख्तेका पुल टूट गया और बहुत-से मनुष्य मारे गये। इसी बीचमें प्राचीरके छोटे छोटे द्वारोंसे निकलकर अश्वकोंने इस वेगसे आक्रमण किया कि सिकन्दरके सैनिकोंके छक्के छूट गये। लाचार सिकन्दरने युद्ध बन्दकर अपने सैनिकोंको लौट आनेकी आज्ञा दी।

चौथे दिवस फिर युद्ध आरम्भ हुआ। सिकन्दरने प्राचीरकी दूसरी ओर अपने यंत्र भेजे। आज अश्वकराज स्वयं सेनाके आगे रहकर युद्ध कर रहे थे। अचानक शत्रुके शस्त्रके आघातसे वे देवलोक सिधारे। उनकी मृत्यु होते ही नगर निवासी दुःखित हो उद्यम-हीन हो पड़े। उन्होंने सिकन्दरसे सन्धिकी प्रार्थना की। सिकन्दरने तुरन्त ही यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

अश्वकोंके साथ सात हज़ार भारतीय सेना भी थी। जब सन्धि हो गई तब यह स्थिर हुआ, कि यह सेना अपने देशको लौट जाये। इसी अनुसार वह सेना मसग नगरसे चल पड़ी।

राहमें उसने पहाड़की तराईमें विश्राम किया। सिकन्दरकी इच्छा थी, कि यह सेना उसके दलमें आ मिले और स्वदेशवासियोंपर आक्रमण करे; परन्तु उन भारतीय सैनिकोंने धनके लोभसे यह स्वीकार न किया। इसलिये जब वे अपने परिवारवालोंको लेकर रात्रिमें विश्राम कर रहे थे; उस समय सन्धिके नियमोंको उल्लङ्घन करते हुए, सिकन्दरने उनपर आक्रमण कर दिया। वे इस समय युद्धके लिये प्रस्तुत न थे, तथापि उन सबने अपनी स्त्रियाँ तथा पुत्रोंको बीचमें रख व्यूह बनाकर युद्ध आरम्भ किया। यद्यपि भारतीय वीरोंने बड़े साहससे यह युद्ध किया; परन्तु सिकन्दरकी सेना बहुत अधिक थी। इसलिये सभी भारतीय मारे गये। उनकी स्त्रियोंने भी इस युद्धमें अच्छी वीरता दिखाई और अन्तमें वे भी युद्धकर ही परलोकगामिनी हुईं। सिकन्दरने इनको मारकर सन्धिकी शर्त उल्लङ्घन करनेका पाप करते हुए फिर नगरपर आक्रमण कर दिया। नगर-निवासी इसके लिये बिल्कुल ही प्रस्तुत न थे। अतः वे एकाएक सिकन्दरको आक्रमण करते देख किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो पड़े। उन्हें विदेशी शत्रुपर विश्वास करनेका फल मिल गया। अश्वकाधिपकी विधवा भार्य्या अपनी सन्तानोंके साथ बन्दी हुई। परन्तु सबसे आश्चर्य्यकी बात तो यह है, कि ग्रीक-सेनाके कुल पचीस मनुष्य ही इतने बड़े युद्धमें परलोक सिधारे।

सिकन्दरने मसग (मशकवती) पर अधिकार जमाकर समझा था, कि शत्रुगण डर जायँगे; परन्तु ऐसा न हुआ। सभी अपनी

जन्म-भूमिकी स्वतन्त्रताकी रक्षाका उद्योग करने लगे। अब सिकन्दरने अपने सेनापति कैनसको बाजिरा * और अटलस, अलिकटस तथा देमिट्रसकी ओर या नोरा नामक स्थानपर आक्रमणके लिये भेज दिया। ओरावासियोंने शत्रुको आते देख नगरसे निकल कर बड़ी वीरतासे सिकन्दरकी सेनापर आक्रमण किया। मसिडोनियाकी सेनाने भी अच्छी तरह प्रत्याक्रमण किया। इस समय अभिसारके अधीश्वरने भी ओरावासियोंकी सहायता की थी।

सेनापति कैनस बाजिरावासियोंका विशेष अपकार न कर सका। बाजिरावासी अपने पहाड़ी दुर्गमें रहने लगे। अब सिकन्दरने कैनसके दुर्ग अवरोधके लिये थोड़ी सेना छोड़; बाकी सेना साथ लेकर उससे सम्मिलित होनेकी आज्ञा दी। परन्तु कैनसके हटते ही बाजिरावासियोंने दुर्गसे निकलकर बड़े विक्रमसे शत्रुपर आक्रमण किया। ग्रीक लेखकोंका कथन है, कि भारतवासी बड़े साहससे युद्धकर फिर किलेमें चले गये। इस क्षण स्थायी युद्धमें पाँच सौ भारतवासी निहत तथा सत्तर बन्दी हुए थे।

उधर अपनी सेना तथा कैनसकी सेनाको लेकर सिकन्दरने फिर ओरापर आक्रमण किया। ओराका पतन हुआ और इस युद्धके विजयमें बहुतसे हाथी तथा सम्पत्ति सिकन्दरके हाथ लगी।

---

* यह ओरा और बाजिरा नामक स्थान मरदान और अम्बेला घाटीके पास है।

ओराके पतनका समाचार जब बाजिरावासियोंको मिला तब वे रात्रिके समय नगर त्याग ओरणसके दुरारोह पहाड़ी दुर्गमें चले गये। इसी तरह लोक-विहीन कितने ही स्थान सिकन्दरको प्राप्त हुए। जब सिकन्दरको यह मालूम हुआ कि नगर-निवासी नगर त्यागकर स्वाधीनताकी रक्षाके लिये ओरणसके गिरि-दुर्गमें चले गये हैं, तब यह अन्य किसी ओर भ्रूक्षेप न कर सीधा ओरणसके दुर्गकी ओर चला। हरक्यूलिस इस दुर्गपर अधिकार न कर सका था; जो वह न कर सका था, वही साधन करनेके लिये इस बार सिकन्दर अग्रसर हुआ।

यह ओरणसका दुर्ग महाबनके दुरारोह पर्वतपर था। यह साधारण पर्वतकी नाईं ढालुआं नहीं, बल्कि मस्तक ऊँचाकर खड़ा है। इसके दक्षिण प्रान्तमें प्रबल वेगवती सिन्धु-नदी है तथा अन्य ओर पर्वत और जलपूर्ण भूमि रहनेके कारण इसपर चढ़ना बड़ा ही दुष्कर हो रहा था। सिकन्दरने जब इसकी दुर्गमता देखी तो जलपूर्ण भूमिको वृक्ष आदिसे परिपूर्ण कर उसके ऊपर सेना ले जानेका उद्योग करने लगा। इस तरह लगातार सात दिनोंतक परिश्रम कर सिकन्दरने ये जलपूर्ण स्थान भर डाले और इसी स्थानसे मसिडोनियाकी सेना तीर आदि शस्त्र चलाने लगी; परन्तु इससे उसके शत्रुओंका कुछ भी अपकार न हुआ। वरन् भारतीयोंके चलाये हुए तीर तथा अन्यान्य शस्त्रोंकी चोट खाकर ग्रीक सैनिक अनायास ही परलोक सिधारने लगे; परन्तु सिकन्दर इससे हटनेवाला न था। अब उसने अपने तीस वीर योद्धाओंको

पर्वतपर चढ़नेकी आज्ञा दी। इनके साथ और भी बहुतसे सैनिक गये ; परन्तु वे सबके सब भारतीय योद्धाओंके शस्त्राघातसे परलोक सिधारे। जो इनसे कुछ दूरीपर थे, वे इनकी दुरवस्था देख भाग चले और ज़ोर ज़ोरसे रोने लगे। डियोडोरसका कथन है, कि जिस समय सिकन्दर इस दुर्गपर विजय प्राप्त करनेकी आशा त्याग चुका था ; उस समय एक दरिद्र वृद्ध अपने दो पुत्रोंके साथ उसके पास जा पहुँचा और इस दुर्गपर चढ़नेका गुप्त पथ बतानेको तैयार हो गया। सिकन्दरने उसे प्रलोभन देकर उसके एक पुत्रको प्रतिभू-स्वरूपमें अपने पास रख लिया और उसके साथ अपने सैनिकोंको पथ देखनेके लिये भेज दिया। पथ मालूम होनेपर मसिडनोंने उसी राहसे दुर्गपर आक्रमण किया। जब भारतवासियोंको मालूम हुआ, कि शत्रुको गुप्त पथ मालूम हो गया, तब वे धीरे-धीरे वहाँसे हटने लगे। यह समाचार सुन सिकन्दरने और भी प्रबल वेगसे आक्रमण किया। कितने ही भारत-वासी पहाड़से गिरकर परलोक सिधारे और कितने ही मारे गये। इस तरह सिकन्दरने इस पहाड़ी प्रदेशपर अधिकार जमा लिया। दुर्गपर अधिकार कर सिकन्दरने मिनर्वा देवीका पूजन किया और कई वेदियाँ निर्माणकर कई दिनोंतक उत्सव मनाता रहा।

जिस वृद्धने विश्वासघात और स्वदेश द्रोहिताकर सिकन्दर-को पथ बताया था ; उसे ८० टैलेण्ट अथवा लगभग तीन लाख रुपयोंके प्राप्त हुआ था। सिकन्दरने इस प्रदेशपर विजय प्राप्तकर

शशिकोटस या शशिगुप्त नामक एक मनुष्यको इसका शासन-कर्त्ता नियुक्त किया। जिस समय सिकन्दरने बाह्लीक प्रदेशपर विजय प्राप्त की थी; उस समय यह उससे जा मिला था। इसके बाद भारत आनेके गुप्त पथ बराबर बताता था। इसीके फलस्वरूप वह इस स्थानका शासनकर्त्ता नियुक्त हुआ था।

सिकन्दर ओरणसपर अधिकार जमाकर अभी निश्चिन्त भी न हुआ था, कि उसे समाचार मिला कि जो अश्वक अपराजित अवस्थामें रह गये थे, वे बहुत बड़ी सेना एकत्र कर उससे युद्धके लिये तैयार हैं। यह समाचार सुन वह उसी ओर चल पड़ा; परन्तु वहाँ सब नगर ग्राम उसे जन-शून्य दिखाई दिये। ऐसा मालूम होता था, मानो किसी भयानक महामारीके कारण सब लोग घर छोड़कर भाग गये हैं। उसने ओरणसके उत्तरकी ओर स्थित डारटा नाम स्थानपर अधिकार जमा लिया। यही नगर तथा इसके चारों ओरका भू-भाग खाली कर दिया गया था और उसके अधिवासी हिडास्पेस (झेलम) और अकेसिनीज़ (चेनाब) नदीके बीचके अभिसार राज्यमें जा बसे थे। अस्तु, इस प्रदेशकी अवस्था जाननेके लिये अपने कितने ही मनुष्य भेज, सिकन्दर सिन्धु नदीकी ओर अग्रसर हुआ। राहमें ही उसे समाचार मिला, कि वे सब अपनी स्वाधीनताकी रक्षाके लिये अभिसार राज्यमें चले गये हैं। अस्तु, इसी स्थानसे नाव बनाने योग्य लकड़ियाँ संग्रहकर, सिकन्दर उधर ही चला गया जिधर उसके सेनापति हिपाइस्तियन और पर्दिका थे।

तक्षशिला
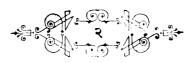
इस विषयके निर्णयमें बड़ा मतभेद है, कि सिकन्दरने किस स्थानसे सिन्धु-नदी पार की थी। कितनोंका ही मत है, कि वर्त्तमान अटकके पाससे वह सिन्धु पार हुआ था, क्योंकि यह स्थान बहुत ही सङ्कीर्ण है; परन्तु अन्यान्य लेखकोंका मत है कि अटकसे सोलह मील उत्तर ओहिन्द या उन्द * नामक स्थानसे वह सिन्धु पार हुआ था।

जो हो, सिन्धु पारकर उसने देखा कि उसका सेनापति हिपाइस्तियन नौ-सेतु प्रस्तुत कर उसके आगमनकी बाट देख रहा है। उस पुलके अतिरिक्त उसने बहुत-सी छोटी तथा तीस-तीस डाँड़ोंकी बड़ी-बड़ी नावें भी प्रस्तुत करा ली थीं। इस कार्यको देखकर सिकन्दर बड़ा ही प्रसन्न हुआ।

---

* इसका संस्कृत नाम उद्भाण्डपुर है। उन्द उस देशके अधिवासी कहते हैं।

इसी ओहिन्द नामक स्थानपर तक्षशिला (Taxila) के अधी-श्वर आम्भि (Omphis) उससे जा मिले। जिस समय सिक-न्दर सिन्धु पार भी न हुआ था, कि दोसौ टैलेण्ट, तीन हज़ार वृष और दश हज़ार मेष भेजकर उन्होंने सिकन्दरको तुष्ट करने-की चेष्टा की। कुछ दिन पहले आम्भिके पिताका स्वर्गवास हुआ था। कह नहीं सकते कि इस वृषोत्सर्गसे उनके पितृ-पुरुष कहाँ तक तृप्त हुए ; परन्तु हाँ, ऐतिहासिकोंका मत है, कि उनके भार-तीय देवता अवश्य ही बड़े सन्तुष्ट हुए थे।

सिन्धु-तटपर एक मास तक सिकन्दरने अपनी सेनाको विश्राम करनेकी आज्ञा दे दी थी ; क्योंकि लगातार कष्ट सहन करनेके कारण वह अत्यन्त व्याकुल हो गई थी और इसीलिये सिकन्दरने उन्हें सन्तुष्ट करना अपना परम कर्त्तव्य समझा था।

हिन्दूकुश पारकर सिन्धु नदीपर आते समय सिकन्दरको लग-भग नौ मासका समय लग गया था। इन नौ मासोंमें सिक-न्दरकी सेनाने जिस तरह कष्ट उठाया था, ऐसा मसिडोनिया त्यागने बाद उसे कभी भी न उठाना पड़ा था और वह एकदम निराश हो पड़ी थी। इसीलिये सिकन्दरने उन्हें विश्राम दिया था।

३२६ ई० पू० के मार्च मासमें सिकन्दरने सिन्धु पारकर तक्ष-शिलामें प्रवेश किया था। बस इसी स्थानसे सिकन्दरके मनुष्यों-को भारतकी शोभा प्राप्त हुई थी और वे चकित हो गये थे। सिकन्दर मोर देखकर इतना प्रसन्न हुआ था, कि उसने अपने सैनिकोंको मोर न मारनेकी आज्ञा दे दी थी।

आम्भि सिकन्दरकी अभ्यर्थनाके लिये सुसज्जित श्रेणी-बद्ध हाथी और बहुत-सी सुसज्जित सेना लेकर तैयार थे। यह देख-कर सिकन्दरको सन्देह हुआ कि आम्भि युद्धके लिये सज्जित हैं। उसने तुरन्त ही अपनी सेनाको युद्धके लिये तैयार होनेकी आज्ञा दी। आम्भि यह देखकर समझ गये, कि सिकन्दरको भ्रम हुआ है। इसीलिये वे थोड़ेसे मनुष्योंको लेकर सिकन्दरके पास गये और उसको अपना उद्देश्य समझाकर निश्चिन्त हुए।

यद्यपि आम्भिने सिकन्दरको बाधा न पहुँचाई थी तथापि तक्षशिलाके जंगली पशु उसे बाधा देनेके लिये तैयार हो गये थे। स्ट्राबोका कथन है, कि जब सिकन्दर अपनी सेनाके साथ अग्रसर हो रहा था, उस समय बहुतसे बन्दर मसिडोनियाके वीरोंकी गति रोकनेके लिये पहाड़के ऊपर श्रेणी बाँधकर खड़े हो गये थे। इन्हें देखकर विदेशी सैनिक बहुत ही डर गये थे। सिकन्दरने भी अपनी सेनाको इनपर आक्रमण करनेकी आज्ञा दे दी थी; परन्तु पीछे आम्भिने उसे समझाकर सिकन्दरका भ्रम दूर कर दिया। सिकन्दरका भ्रम दूर हुआ; परन्तु आम्भिका नहीं और वे अपने देशकी शत्रुसे रक्षा करनेको तैयार न हुए।

वर्त्तमानकालमें यह प्राचीन तक्ष-शिलाका भग्नावशेष लग-भग बारह मील तक रावलपिण्डीके उत्तर पश्चिम और हसन अब्दुलके दक्षिण पश्चिम फैला हुआ दिखाई देता है। दशरथ तनय भरतने जिस नगरीकी प्रतिष्ठाकर अपने पुत्रके नामसे जिसका नाम करण किया था, जिस नगरीमें महाराज जनमेजयने नाग

यज्ञ कर नागवंशको निर्वंश किया था, जिस नगरीमें जनमेजयके सामने पहले पहल भारतीय इतिहास महाभारत पढ़ा गया था, जिस नगरीके विश्व-विश्रुत विद्यालयमें पाणिनि, जीवक, चाणक्य प्रभृति देश-गौरव छात्रोंने अध्ययन किया था, उस नगरीमें इस समय कुछ हिन्दू वणिकोंके अतिरिक्त समस्त यवन ही बसते हैं। जिस उन्नत पर्वतपर पहले राजमहल था, वहाँ अब कृषकोंका हल चलता है। पाठक! यदि इस पर्वतपर चढ़कर चारों ओर देखें तो भग्नस्तूपोंका ढेरका-ढेर दिखाई देगा। वर्त्तमानकालमें इसने अपना नाम बदलकर ढेरिसा नाम धारण किया है।

सिकन्दरने आम्भिकी अभ्यर्थना द्वारा तुष्ट होकर तक्षशिलामें प्रवेश किया। ग्रीक ग्रन्थकारोंका कथन है, कि उस समय उस प्रदेशके सब नगरोंकी अपेक्षा यह नगर बड़ा और समृद्धिशाली था। इसका शासन भी बड़ी उत्तमतासे होता था। सिकन्दरने तक्षशिलाका सिंहासन अपने अधिकारमें न लेकर उसपर आम्भि-को ही बैठा दिया था। क्लीव आम्भि भी इस कामसे अपनेको कृतकृत्य समझते थे। दुःखकी बात है कि जिस समय सिकन्दरने भारतका परित्याग किया, उस समय सब आम्भिसे बदला लेने लगे और वे अकालमें ही कालके गालमें चले गये।

जिस समय सिकन्दर तक्षशिलामें था; उसी समय अभि-सारके अधीश्वरने अपने कई मनुष्य तक्षशिलामें भेजे थे। मालूम होता है, कि वे सिकन्दरकी वास्तविक अवस्था देखनेके लिये ही वहाँ गये थे; क्योंकि पीछे अभिसारके राजाने पुरुसे मिलकर

सिकन्दरकी सेनापर आक्रमण किया था। जो हो, सिकन्दरने उन मनुष्योंके द्वारा अभिसारके राजाको मिलनेका आदेश भेज दिया। इसी समय दोजारसके (Doxares) पाससे भी दूतोंने आकर सिकन्दरको अभ्यर्थना की थी। *

यद्यपि सिकन्दरका तेज देखकर आम्भि डर गये थे। परन्तु तक्षशिलाके ब्राह्मण उससे न डरे थे और ब्राह्मणोंके आगे सिकन्दरका दर्प, अहङ्कार और तेज चूर्ण-विचूर्ण हो गया था। युरोपवासी तक्षशिलाकी समृद्धि और सभ्यता देखकर बड़े ही चकित हुए थे। उस समय तक्षशिलाके नागरिक पैरोंतकका बड़ा ही उत्कृष्ट वस्त्र पहनते थे। वे वर्त्तमानकालकी भाँति पगड़ी बाँधते थे और पैरमें जरदोज़ीका काम किया हुआ जूता पहनते थे। जिसके तलेमें बहुत ही मोटा चमड़ा रहनेके कारण वे कुछ ऊँचे दिखाई देते थे। वे लम्बे केश रखते। धनवान कानोंमें कुण्डल और हाथोंमें कड़े पहनते थे। कोई कोई दाढ़ी रखकर कितने ही रंगोंसे उसे रंगते थे।

राजा बड़े ही ठाटबाटसे रहते थे। जिस समय वे बाहर निकलते थे उस समय उनके जानेको राह सुगन्धित द्रव्यसे सींची जाती थी। उनके अनुचर चाँदीके आस्से सोटे लिये उनके आगे आगे रहते थे। राजा मोती जड़ी पालकीपर सवार होते थे और

---

* ये दोज़ारस कौन है ? मालूम होता है, कि महाभारतमें जो द्विगर्त्त कहलाये हैं अथवा वर्त्तमान डोंगरा जाति ही दोज़ारस कहलाई थी।

सुनहरी ज़रदोज़ीके बहुमूल्य वस्त्र पहनते थे। पालकीके पीछे शस्त्र धारी सैनिक रहते थे और उनके पीछे वे मनुष्य रहते थे, जो वृक्षकी डालियोंपर नाना प्रकारके पक्षी लिये रहते थे। शिक्षित पक्षी उस समय मधुर वाणीसे बोला करते थे ; राज-भवन सदा सबके लिये उन्मुक्त रहता था। यहाँतक कि वस्त्र बदलने और केश झाड़नेके समय भी राजा अभियोग सुनते थे। राज-भवनके सोनेसे जड़े हुए स्तम्भोंपर सोनेकी अँगूरकी लता बड़ी ही शोभा देती थी। उस लतापर नाना प्रकारके रंगबिरङ्गे पक्षी और कारीगरीके अन्य कार्य दर्शकोंका चित्त हरण करते थे। पाठक! युरोपियोंका दिखाया हुआ उस समयका दृश्य एक बार अपने कल्पना चक्षुसे देखिये। मालूम हो जायगा कि क्या अतीतकालके असभ्य, क्या वर्त्तमान कालके सभ्य, किसी समय भी युरोप हमारे हज़ारों वर्ष पूर्वकी सभ्यताका सामना न कर सका है।

मसिडोनियावासियोंको तक्षशिलाके पास एक ऐसी श्रेणीके मनुष्य दिखाई दिये थे ; जो शीत ऊष्णको कुछ समझते ही नहीं थे, सुख-दुःख उनके लिये समान था और दिन रात भगवद्भजनमें लिप्त रहते थे। ये नगरके बाहर जंगलोंमें रहते थे और वृक्षोंका फल और झरनेका पानी उनकी क्षुधा पिपासा दूर करता था। इन ब्रह्मचारी और सन्यासियोंका प्रभेद न समझ कर विदेशियोंने इन्हें "जिमनोसफिस्ट" या नग्न ज्ञानी कहा है। सिकन्दर तथा उसके सैनिकोंको यह देखकर आश्चर्य होता था कि ये जिस समय नगरमें आते ; उस समय इनकी बड़ी खातिर

होती और दूकानदार बिना दाम लिये ही इन्हें आवश्यक पदार्थ दे दिया करते थे। जिस तरह भारतके पशु-पक्षी और वृक्ष-लता देखकर वे अवाक् हुए थे; उसी तरह इन ब्राह्मण त्यागियोंको देखकर भी वे विस्मयाभिभूत हो गये थे। सिकन्दर इन्हें देखनेके साथ ही इनसे मिलनेके लिये व्याकुल हो उठा था। उसने अपने सहचर अनसेक्रिटसको इस ब्राह्मण मण्डलीमें भेजकर उनमेंसे एकको बुला भेजा था। इन ब्राह्मणोंमें कल्याण नामक एक मनुष्यने उसे वस्त्र उतारकर अपने पास आनेके लिये कहा था। कल्याण, जब किसी तरह भी सिकन्दरके पास न गया; तब सिकन्दरने आम्भिके द्वारा उसे बुला भेजा। अब कल्याण सिकन्दरके पास गया। सिकन्दर कल्याणसे बातें कर बहुत ही प्रसन्न हुआ। उसने कल्याणको बड़े सम्मानसे अपने पास रख लिया।

इसके बाद सिकन्दरने ब्राह्मण समाजके अग्रणी महामति दण्डीको बुलानेके लिये अनसेक्रिटसको भेजा। उसने दण्डीके पास जाकर कहा,—"युपिटरके पुत्र मनुष्य जातिके अधीश्वर सिकन्दरने तुम्हें शीघ्र ले आनेका आदेश दिया है। उनके पास यदि तुम जाओगे तो पुरस्कार मिलेगा अन्यथा अवमाननाके लिये प्राण-दण्ड होगा।"

तृण-शय्यापर सोये हुए महामति दण्डीके कानमें जिस समय ये शब्द पड़े, उस समय उन्होंने उसी तरह लेटे लेटे हँसकर कहा—"महामहिमान्वित परमेश्वर द्वारा जगतमें किसीका अनिष्ट नहीं होता। मृत्यु मुखमें जानेपर भी वे फिर सबको जीवन

प्रदान कर पुनर्जिवित कर दिया करते हैं। वे कभी हत्याको प्रश्रय नहीं देते और न युद्ध ही चलाते हैं। तुम्हारे सिकन्दर परमेश्वर नहीं हैं। उन्हें भी एक न एक दिन मरना ही पड़ेगा। जो इस समय तीव्रबहा (Tyberobos) नदी तक न जा सके, जो :अबतक गाधि (Gades—कान्यकुब्ज-राज्य) की सीमा-तक न पहुँच सके, वे किस तरह विश्व-ब्रह्माण्डके अधीश्वर बननेकी कल्पना करते हैं। जो अबतक यह न जान सके, कि आकाश-मण्डलके सूर्यदेव किस पथसे गमनागमन करते हैं और जिनका नाम अबतक कई लाख मनुष्य नहीं जानते, वे किस साहसपर अपनेको सब मनुष्योंका राजा कहते हैं। इतने दिनोंके युद्धसे उनको तृप्ति न हुई हो, तो उनसे कहना कि वे और भी नद-नदी उल्लङ्घन कर आगे बढ़ें। वहाँ उन्हें ऐसी भूमि प्राप्त होगी, कि उनकी आकांक्षा पूर्ण हो जायगी। सिकन्दरने मुझे जिस पुरस्कारका प्रलोभन दिया है, उसका मेरे लिये कुछ भी मूल्य नहीं है। मेरी कुटी और शय्याके लिये पत्ते मौजूद हैं, वृक्षके फल-मूलसे मेरी क्षुधा और इस अञ्जलि द्वारा जल टानकर पिपासा निवृत्त हो जाती है। जो श्रम-लब्ध द्रव्य संग्रह करते हैं, वे दुःखमें पड़ते हैं। वह द्रव्य उनके दुःखका कारण बन जाता है। मैं उन पदार्थोंकी इच्छा नहीं, बल्कि उनसे घृणा ही करता हूँ। स्वर्ण प्राप्तिकी आकाँक्षा उत्पन्न होते ही मुझे अच्छी तरह सुखकी नींद न आयगी। जननी जिस तरह सन्तानका पालन-पोषण करती है, पृथ्वी भी उसी तरह मेरे समस्त अभावोंको दूर किया करती है।

जहाँ इच्छा होती है, वहीं मै जाता हूँ। कमीको दूर करनेके लिये कहीं नहीं जाता। तुम्हारे सिकन्दर मेरा मस्तक काट लेनेपर भी मेरी आत्माको अपने वशमें नहीं ले जा सकते। सिकन्दर मेरे छिन्न मस्तकपर अधिकार जमा सकते हैं; परन्तु मनुष्य जिस तरह जीर्ण वस्त्र परित्याग कर देता है, उसी तरह मेरी आत्मा पृथिवीपर उत्पन्न हुआ यह शरीर पृथिवीपर त्यागकर जो इस शरीरका रचनेवाला है उसी ईश्वरके पास चला जायगा। पृथिवी-पर आकर हमलोग उसके आज्ञानुरूप चलते हैं या नहीं? इसी बातकी परीक्षाके लिये उसने हमलोगोंको पृथिवीपर भेजा है। जीवनका अन्त होनेपर वह हमलोगोंके सब कार्योंका विचार किया करता है। पीड़ितोंका आर्त्तनाद और दीर्घ-निश्वास कष्ट देनेवालोंको शान्ति देता है। मैं जब उस विचारकके पास खड़ा होकर अपना विचार होता देखूँगा, तब शान्ति प्राप्त करूँगा।

"तुम जाकर अपने सिकन्दरसे कहो, कि जिन्हें स्वर्णकी आकांक्षा हो, जो सम्पत्ति लाभके लिये अकार्यको कार्य समझकर कर डालते हों और जो सदा मृत्यु-भयसे विह्वल रहते हों, वे ही तुम्हारे इस भय-प्रदर्शनसे डर जायँगे। ब्राह्मणोंकी सोनेपर प्रीति नहीं होती; इसलिये मृत्यु-भय उन्हें कभी व्याकुल नहीं कर सकता। तुम उनसे कहना, कि दण्डी तुमसे रत्ती भर सम्मान भी नहीं चाहता; इसलिये वह कभी तुम्हारे पास न जायगा। यदि उन्हें मुझसे कुछ काम हो तो स्वयं मेरे पास आयें।"

जीवन्मुक्त दण्डीका यह उत्तर सुनकर सिकन्दर दण्डीका

दर्शन करनेके लिये व्याकुल होकर जङ्गलमें गया और उनका दर्शन प्राप्त कर कृतार्थ हुआ। ग्रीक मेगास्थनिसने लिखा है, कि सिकन्दर अनिसेक्रिटिसके मुँहसे दण्डीका उत्तर सुनकर उसके दर्शनके लिये बहुत ही उत्सुक हुआ था।

तक्षशिक्षामें जो ब्राह्मण रहते थे, उनमें बहुतसे उत्तम ज्योतिषी भी थे। उन ज्योतिषोंकी प्रतिभा देखकर सिकन्दर बहुत चकित हुआ था।

तक्षशिलामें अवस्थानके समय ही सिकन्दरने पुरुके (Porus) पास दूत भेजकर उन्हें सीमापर उपस्थित होकर आत्म-समर्पण करनेके लिये लिखा था; परन्तु वीरवर पुरुने स्पष्ट कहला भेजा कि मैं सीमान्त प्रदेशपर अवश्य तुम्हारे बादशाहसे मिलनेके लिये आऊँगा; किन्तु वह मिलन शस्त्र-मिलन होगा।

सिकन्दर पुरुके इस गर्वपूर्ण उत्तरसे बड़ा ही विस्मित हुआ। उसने मन-ही-मन सोचा था, कि वह बिना रक्तपात किये ही पुरुपर अधिकार जमा सकेगा और उसके भयसे ही पुरु वश्यता स्वीकार करेंगे; परन्तु उसकी सब आशा निराशामें परिणत हुई और अब वह युद्धके लिये तैयारियाँ करने लगा।

पुरुके राज्यपर आक्रमण करनेके लिये सिकन्दरको विवस्ता (Hydaspes झेलम) पार करनेकी आवश्यकता थी। पुरु भी इस विषयमें सावधान थे और इसीलिये उन्होंने झेलम नदीमें जितनी नावें रहती थीं; वे सब ध्वंस करा डाली थीं। जब सिकन्दरको यह समाचार मिला तब उसने सिन्धु पार करनेके

समय प्रस्तुत की हुई नावें मगवाकर झेलम नदी पार करनेका संकल्प किया। उसने बड़ी बड़ी नावें तीन भागोंमें और छोटी दो भागोंमें विभक्त कर झेलम तटपर मगवा लीं।

सिकन्दर अपनी कुछ सेना तक्षशिलामें रख और तक्षशिला-की सेनामेंसे भी पाँच हज़ार सेना लेकर पुरुसे युद्ध करनेके लिये चल पड़ा। तक्षशिलासे झेलम जानेकी दो राहे हैं। एक रावल-पिण्डी, मानकेला (माणिक्यालय) और रोतसहाकर झेलमकी ओर गई है। दूसरी दक्षिण ओर हटती हुई, दुधियान होकर ढीला पर्वतके नीचेसे सिन्धु पवनकी छोटी छोटी पहाड़ी नदियों को पार करती हुई झेलमसे २८ मील दक्षिण जा पहुँची है। यह निश्चित करना बड़ा ही कठिन है, कि सिकन्दर किस राहसे झेलम तटपर उपस्थित हुआ था। कनिङ्गहम प्रभृति ऐतिहासिकोंने वर्त्तमान जलालपुरमें सिकन्दरका युद्ध शिविर बताया है। अवट-का कथन है, कि वर्त्तमान झेलम शहरके पास सिकन्दरने अपना शिविर स्थापन किया था। पियरसन साहबने प्रमाणित किया है, कि वह बुनहार घाटीको अतिक्रमण कर * जलालपुरमें आया था। उनका यह भी कथन है, कि उसने दोनों पथ काममें लाये थे। विनेएट स्मिथ साहबने भी यही मत ग्रहण किया है। किसी किसीका यह :भी कथन है, कि पिण्डदादन खाँके दक्षिण अह-

---

* Pearsons Alexander Porus and the Punjub. *Ind. Ant 1905 P 253 with may)*

मदाबाद नामक स्थानमें सिकन्दरने शिविर स्थापन कर झेलमके पार पुरुसे युद्ध किया था। जो हो, स्थानका निर्णय सहज काम नहीं है। क्योंकि इन दो हज़ार वर्षों में झेलममें यथेष्ट परिवर्त्तन हो गया है, अतः उस प्रान्तकी भौगोलिक अवस्थाका बदल जाना भी कोई आश्चर्यका विषय नहीं है। किसी समय पुरातन झेलम सराय और नौरङ्गाबादके नीचेसे झेलम नदी प्रवाहित होती थी। अब वह उस स्थानसे बहुत दूर प्रवाहित होती है।

कुछ भी हो, सिकन्दरने झेलम तटपर उपस्थित होकर (मई ३१६ ई० पू०) जो दृश्य देखा, उससे उसका अन्तरात्मा काँप उठा और उसके चेहरेपर विषादकी रेखा दिखाई देने लगी। उसने मन-ही-मन सोचा था, कि सहजमें ही पुरुपर अधिकार हो जायगा और इस देशका शासक भी बुद्धिमान आम्भिकी भाँति ही उसका स्वागत करेगा। परन्तु वहाँ ठीक उसके विपरीत दृश्य दिखाई दिया। उसके प्रतापको तुच्छ समझकर नदी-तटपर पचास हज़ार भारतवासी मनुष्य, अनेकानेक हाथी तथा अगणित घोड़े खड़े होकर उसकी बाट जोह रहे हैं। इस सेनामें हौदे सहित दो सौ हाथी थे। चार चार घोड़े जुते हुए रथ और पचास हज़ार पैदल भारतके सम्मानकी रक्षाके लिये अटल भावसे खड़े थे।

तीव्र-गामिनी झेलम भी सिकन्दरकी गति-रोधकर पुरुकी सहायताके लिये तैयार थी। भयावह झेलमको देखकर सिकन्दर-को बड़ी चिन्ता आ पड़ी, कि वह किस तरह नदी पार करेगा। वह जो नावें ले आया; विपक्षकी इतनी सेनाके सामने उन नावों-

पर तीव्रवहा झेलमको पार करना सहज काम नहीं था। जिस स्थानपर सिकन्दरका शिविर था, ठीक उसके सामने झेलमके दूसरे तटपर पुरुका शिविर था। पुरुकी सेना सिकन्दरकी सेनाको देखते ही ज़ोरसे हुङ्कार-ध्वनि कर उठी थी। कुछ देरतक यही शब्द युद्ध होता रहा। पुरुकी सेनाके गर्ज्जनमें हाथियोंने भी साथ देकर सिकन्दरकी सेनाके हृदयमें भय उत्पन्न कर दिया था। इसके बाद नदीमें पड़े हुए बालूके टीलोंपर कितनी ही बार दोनों ओरकी सेनाने तैरकर नदी पार करते हुए युद्ध किया था। ऐसे युद्धमें भी बहुत-सी मसिडन सेना भारतीयोंके हाथों मारी गई थी और जो बच सके थे, वे झेलमकी प्रबल धारामें प्रवाहित हो गये थे। ऐसे युद्धोंका फल देखकर दोनों तटोंपर अवस्थित नृपतिगण जय-पराजयकी कल्पना मन-ही-मन किया करते थे।

अब सिकन्दरने सरल उपायसे काम न निकलता देख चालसे काम निकालना चाहा। उसने यह बात प्रचारित की कि शीतकालमें जब झेलमका जल घट जायगा; तब वह पुरुपर आक्रमण करेगा। शत्रुको अपनी बातका विश्वास दिलानेके लिये उसने बहुत दिनोंके योग्य खाद्य-सामग्री हस्तगत करनेके लिये अपने मनुष्य इधर-उधर भेजने आरम्भ किये। साथ ही बहुतसे चमड़ोंमें घास भरकर तैरते हुए तूम्बे बनानेकी आज्ञा दी और नावें, इधर-उधर भेज नदी पार करनेका ढोंग दिखाकर पुरुकी सेनाको विचलित करने लगा। नदी पार करनेके लिये रातभर मशाल जला, सेनाको श्रेणीवद्ध भावसे खड़ा कर सिकन्दर पुरुको विच-

लित करने लगा। शत्रुके आक्रमणकी आशङ्कासे पुरु अपनी सेना-को नदी तटपर भेजने लगे। सिकन्दरने नित्य रात्रिके समय ऐसे ही कार्य कर पुरुको धोखा दे अपना काम निकालना चाहा। पुरु भी नदीके इधर-उधर अपने गुप्तचर रखकर सिकन्दरकी धूर्त्तता दमन करनेका उद्योग करने लगे।

इसी समय सिकन्दरको समाचार मिला कि अभिसारके अधीश्वर एक बहुत बड़ी सेना लेकर लगभग बाईस-तेईस मीलकी दूरीपर पुरुकी सहायताके लिये प्रस्तुत हैं, अतः इन दोनोंके सम्मिलित होनेके पहले ही सिकन्दरने शत्रु-सैन्यपर आक्रमण कर देना उचित समझा।

सिकन्दरने जहाँ अपना शिविर स्थापन किया था; वहाँसे लगभग सोलह मीलकी दूरीपर झेलम तटपर जङ्गलोंसे छिपी हुई एक ऊँची भूमि थी। यहाँ झेलम टेढ़ी होकर बही थी और उस स्थानपर एक बहुत बड़ा टापू बन गया था। उसपर भी घना जङ्गल था। इस कारणसे न झेलमके इस पारवाले उस टापूकी दूसरी ओरका हाल जान सकते थे और न दूसरे पक्षके। सिक-न्दरने यह स्थान अपनी कार्य-सिद्धिके उपयुक्त समझा और यहीं अपनी नावें उसने मगवा लीं तथा इसी स्थानसे नदी पार करने-का उद्योग करने लगा।

बहुत ही शीघ्र समाचार आदान-प्रदानके लिये नदीके किनारे सेना इतनी दूरीपर रखी जाने लगी कि वह आपसमें एक दूसरेको देख सके। सिकन्दर अपनी सेनाका अधिकाँश अपने साथ, उसी

बड़ी सहायता पहुँचाई। थोड़ी ही देरमें मूसलाधार वृष्टि आरम्भ हुई, आकाशमें बादल गरज-गरजकर प्रबल वेगसे युद्धकी सूचना देने लगे। भीषण समय उपस्थित हुआ और यही भीषणता सिकन्दरके कार्यकी सहायक हुई। छिपाई हुई नावें जङ्गलके भीतरसे निकालकर सिकन्दर पार उतरनेका उद्योग करने लगा। मेघोंकी गरज और मूसलाधार वृष्टिके शब्दोंने शस्त्रोंकी भनभनाहटका शब्द छिपा लिया। भारतीय पहरेदारोंको उनका शब्द न सुन पड़ने लगा। सूर्योदयके समय यह वृष्टि बन्द हुई, उस समय सिकन्दर अपनी सेनाके साथ पार पहुँचना ही चाहता था। इसी समय पुरुके प्रहरियोंने सिकन्दरकी सेना पार उतरती हुई देखी।

अरिष्टोटलका कथन है कि, जिस समय सिकन्दर नदी पार कर चुका उस समय पुरुका पुत्र ६० रथ लेकर उस स्थानपर जा पहुँचा था; परन्तु उसने सिकन्दरको किसी प्रकारकी बाधा नहीं दी। इसीसे सिकन्दर नदी पार हो सका। इसके बाद दोनोंमें युद्ध आरम्भ हुआ और दोनों पक्षके बहुतसे मनुष्य मारे गये। कोई कोई लेखक कहते हैं, कि पुरुके पुत्रने नदी पार करते समय प्रचण्ड बाधा दी। उसने सबके आगे रहकर प्रचण्ड वेगसे आक्रमण किया और अपने हाथों सिकन्दरको घायल किया। साथ ही सिकन्दरका प्रसिद्ध बुकेफैलस घोड़ा भी मार डाला। विंसेण्ट स्मिथ साहब कहते हैं, कि सिकन्दरकी आगमन वार्त्ता सुनकर पुरुका पुत्र १२० रथ और २००० घुड़सवार सेना ले वहाँ जा

पहुँचा ; परन्तु उस समय सिकन्दर नदी पार हो चुका था। युद्ध हुआ और ४०० भारतीय मारे गये।

जो हो, यह निश्चित मालूम होता है, कि सिकन्दरके नदी पार करने बाद उसकी सेना पहुँची। सिकन्दरने सेनाको आते देखकर समझ लिया कि स्वयं पुरु अपनी सेना लेकर आये हैं। अतः उसने तुरन्त ही पुरुकी सेनापर आक्रमण कर दिया। दोनों दलोंमें घोर युद्ध हुआ। वृष्टिके कारण राहमें बड़ा कीचड़ हो गया था। दुर्दैवके कारण भूमि रथके चक्केको ग्रास करने लगी। इन रथोंके बेकार हो जानेके कारण शत्रु और भी प्रबल हो उठे। पुरुके पुत्रने बड़े साहससे सबके आगे रहकर सैन्य-परिचालन करते हुए भारतीय शौर्यका परिचय प्रदान किया। वे इस युद्धमें शत्रुके शस्त्रके आघातसे परलोक सिधारे और इस क्षण-स्थायी युद्धमें चार सौ भारतीय इस नश्वर देहको त्यागकर परलोक जा पहुँचे।

पुरुकी यह धारणा थी, कि अभिसारके अधीश्वर उनकी सहायता करेंगे और इसीलिये वे सेना लेकर आ रहे हैं ; परन्तु जब आहतोंने आकर सिकन्दरके आगमन और युद्धमें वीरता दिखाते हुए राजकुमारके स्वर्गलोक गमनका समाचार सुनाया, तब पुरुका भ्रम दूर हुआ। वे राजकुमारकी मृत्युका समाचार सुन किंकर्त्तव्य विमूढ़ न हो गये ; बल्कि वीर हृदय पुरु शत्रुका सामना करनेके लिये तैयार हो गये। उन्होंने नदी पारसे और भी शत्रु न आ पहुँचें ; इसलिये बहुतसे हाथी, पैदल और घुड़सवार सेना वहीं छोड़, बाकी सेना लेकर स्वदेशकी स्वाधीनताकी

रक्षाके लिये उसी ओर प्रस्थान किया, जिधरसे सिकन्दरके नदी पार करनेका समाचार मिला था। थोड़ी दूर आगे बढ़कर जो स्थान उन्हें कीचसे शून्य और कड़ा मालूम हुआ। वहीं पर खड़े होकर शत्रुकी अपेक्षा करने लगे। उन्होंने अपनी सेनाका व्यूह बना डाला। इस व्यूहके सम्मुख भागमें दो सौ हाथी थे। इनके आगे कवच पहने हुए बहुतसे पैदल सैनिक थे। हाथियोंकी दोनों ओर तीन-तीन सौ रथ और चार हज़ार अश्वारोही तथा इन सबके पीछे तीस हज़ार पैदल सिपाही थे। ये रथ उस समय ठीक छोटे दुर्गके समान मालूम होते थे। इनमें छः सैनिक बैठते थे। इन छः मनुष्योंमें दोके हाथोंमें तीर धनुष रहता था, जिससे वे शत्रुपर आक्रमण करते थे। दोके हाथमें ढाल रहती थी, जिससे वे शत्रुके शस्त्रोंका आघात बचाते थे और दो सारथीके कार्यमें नियुक्त रहकर रथ-परिचालन करते थे। जब रथ शत्रुके पास जा पहुँचता, तब अश्व-चालनकी आवश्यकता न पड़ती थी, उस समय दोनों सारथी घोड़ोंकी रास छोड़कर भालेसे शत्रुपर आक्रमण करते थे; विदेशी ग्रन्थकारोंका कथन है, कि पुरुकी सेनाके आगे शत्रु निसूदन महावीर (हरक्यूलिस) की आकृति अङ्कित पताका रहती थी। घोर संग्राममें भी इस पताकाका त्यागना गर्हित समझा जाता था। इसलिये भारतीय वीर प्राण-पणसे इसकी रक्षा करते थे। उन्नत शरीर वीर पुरु बहुत बड़े हाथीपर सवार हो सबके ऊपर दिखाई देते थे। मसिडोनियाकी सेना जिस तरह हाथियोंको देखकर डर गई थी, उसी तरह प्रचण्ड शरीर

पुरुको देखकर भी आश्चर्यसे चकित हो गई थी। पुरुको देखकर सिकन्दरने अपनी बगलवाले मनुष्यसे कहा था—"इतने दिन बाद मैं अपने साहसके अनुरूप विपद्के सम्मुख आया हूँ। अब इन जङ्गली जानवर (हाथी) और असाधारण वीरोंसे युद्ध करना होगा।" इतना कहकर उसने कैनसकी ओर देखकर कहा—"जब मैं हिपाइस्थियन प्रभृति सेनापतियोंके साथ शत्रुके वाम भागपर आक्रमण करूँ, तब तुमलोग भी आक्रमण कर उन्हें चञ्चल कर डालना।" इसके बाद सिकन्दरने ऐण्टिजिनस, लियोनेटेनस और टूरमयकी ओर देखकर कहा,—"और तुमलोग शत्रुके सम्मुख भागपर आक्रमण कर उसे विचलित कर डालना। हमलोगोंके लम्बे-लम्बे बर्छे इन बड़े-बड़े हाथियोंके शरीरमें आघात करनेके उपयुक्त हैं। आपलोग इनकी सहायतासे हाथियोंको विद्धकर आरोहियोंको नीचे गिरायें। ये हाथी घायल होकर हमलोगोंकी अपेक्षा शत्रुका ही विशेष अनिष्ट करेंगे।"

यह उपदेश देकर सिकन्दर ज़ोरसे घोड़ा दौड़ा, सबके पहले शत्रुके सामने जा पहुँचा। सिकन्दरको शत्रुसे घोरतर युद्धमें प्रवृत्त देखकर कैनसने बड़ी तेज़ीसे पुरुकी सेनाके वाम भागपर आक्रमण किया। साथ ही उसके पैदल सिपाही भारतीय सेनाके सम्मुख भागपर टूट पड़े। इस आक्रमणसे पुरुकी सेना विचलित हो पड़ी। इस समय सिकन्दरकी सेनाको जहाँ जरा भी जगह मिली वहीं व्यूहके भीतर घुसकर युद्ध करने लगी।

पुरुकी सेनाकी इस चञ्चलताका कारण असलमें यह था,

कि उसके हाथियोंपर सिकन्दरकी घुड़सवार सेनाने आक्रमण किया, दूसरे धनुर्धारीगण अपने धनुषपर शीघ्र ज्या रोपण न कर सके, इसी कारणसे भारतीय सैन्य विचलित हो उठी थी। ग्रीक ग्रन्थकारोंका यही मत है। ये धनुर्धारी धनुष भूमिमें रखकर ज्या चढ़ाते थे। परन्तु भूमि कीचमय होनेके कारण वे शीघ्र अपना कार्य सिद्ध न कर सकते थे। ग्रीक ग्रन्थकारोंका कथन है, कि भारतीय सैनिकोंके तीरोंकी गति रोध करनेमें मसिडन सिपाही समर्थ न थे। उसकी चोट इतनी दारुण और ऐसी साँघातिक होती थी, कि इसकी चोट खाकर मनुष्यको यमपुरीके दरवाजेपर पहुँच ही जाना पड़ता था। दुर्भाग्यवश युद्धके आरम्भमें इन तीरोंने कुछ विशेष कार्य न किया। वीर पुरुने जब देखा कि सेनामें चञ्चलता आ गई है; तब वे बड़े विक्रमसे शत्रुके सम्मुख जा पहुँचे। अब युद्धस्थल भीषणसे भीषणतर हो गया। जब हाथी शत्रुओंको पददलित और सूँड़से उठाकर इधर-उधर फेंकने लगे, तब शत्रु एकदम निराश हो पड़े। वे विजयकी आशा त्यागकर भागने लगे। पुरुकी सेनाने उनका पीछा किया। आगे पुरुकी सेना पीछे नदी और पर्वत, जब शत्रुओंने देखा कि इस महादेशसे भाग जाना भी असम्भव है; तब वे किसी तरह साहस बाँधकर युद्ध ही करने लगे। इस समय पुरुकी सेनामें भी एक गोलमाल मच गया।

ऊपर ही कह चुके हैं, कि पुरुकी सेना पहले चञ्चल हो उठी थी। कोई कोई कहता था कि शत्रुके आक्रमण करनेपर युद्ध

होगा। कोई शत्रुके पीछे जाकर उसपर आक्रमण करनेका विचार करता था। इसी तरह नाना सेनापतियोंका नाना मत हो गया। पुरुके आदेशसे वे ठीक ठीक अवगत न हो सके। अतः सब एकत्र होकर शत्रुपर आक्रमण कर विजय न प्राप्त कर सके।

समस्त सेनाकी सहायता न पानेपर भी महाबाहु पुरु अपने साहसपर निर्भर हो, शत्रु-सैन्यको मर्दन करने लगे। मसिडोनियों-की सेनाने भी फिर आगे बढ़ युद्ध करना आरम्भ किया। भीम-काय भारतीय हाथियोंके चिंघाड़नेका शब्द और उनकी सूढ़ोंके आघातसे सिकन्दरके अश्वारोही अग्रसर न हो सके। उनके घोड़े पिछले पैरोंपर खड़े होने लगे, सवार हाथियों द्वारा फेंके जाने लगे और कितने ही हाथियोंके पैरोंके नीचे कुचल डाले गये। यह हाल देख सिकन्दरकी सेनाके सवार अवसन्न हो पड़े। वह पीछे हटने लगे। सिकन्दरने अपनी सेनाको बारबार पीछा हटते देख-कर, अपने सैनिकोंको केवल पुरुको लक्ष्यकर शस्त्र फेंकनेकी आज्ञा दी और कितने ही सैनिकोंको बड़े बड़े बर्छों से हाथियोंपर आक्रमण करने कहा। इस तरह युद्ध होने लगा; परन्तु इसमें भी सिकन्दरके सैनिक पार न पा सके; क्योंकि हाथियोंके ऊपर बैठे हुए भारतीय वीरोंके शस्त्रोंकी चोट वे किसी तरह बचा न सकते थे और सीधे यमपुरी जा पहुँचते थे। सेनाका यह आशा-तीत युद्ध-कौशल देखकर ग्रीकगण विमूढ़ हो गये। अब कोई उपाय न देख, सिकन्दरकी सेनाने पुरुकी सेनाके हाथियोंके सूँढ़ काटना आरम्भ किया। इस भयानक चोटको न सह सकनेके

कारण हाथी मरने लगे। कितने ही गरजने, चिंघाड़ने और अपनी ही सेनामें घुसकर अनर्थ करने लगे। सेनामें विश्रृङ्खलता उत्पन्न हो गई। इस विश्रृङ्खलताने मसिडोनियावासियोंको बड़ी सहायता पहुँचाई। यद्यपि अपनी सेनाको सुश्रृङ्खलित करनेकी वीर पुरुने यथेष्ट चेष्टा की ; परन्तु वे किसी तरह भी सफल मनोरथ न हो सके। अनेकानेक शस्त्रोंका आघात पाकर भी वे जिस पराक्रमसे युद्ध कर रहे थे, उसकी प्रशंसा मुक्त-कण्ठसे ग्रीक ग्रन्थकारोंने की हैं। ग्रीक योद्धाओंने भी मुक्तकण्ठसे भारयीय योद्धाओंका गुण-कीर्त्तन किया है। अस्तु,

इसके बाद भीषण समस्या उपस्थित हुई। जो हाथी शत्रुओंको मर्दन करनेके लिये पुरुने एकत्र किये थे ; वे अब उनका ही पक्ष ध्वंस करने लगे। आहत हाथी चिंघाड़ते हुए चारों ओर भागने लगे और अपने ही मनुष्योंको मारने लगे। इस समय भी पुरु बड़े पराक्रमसे सबके आगे रहकर सैन्य-परिचालन कर रहे थे। अन्तमें इसी तरह युद्ध करते करते, कितने ही शस्त्रोंकी चोट खाकर वे बहुत घायल हो गये। उनके शरीरसे लगातार रक्त-धारा बहने लगी। वे चेतना-रहितसे होने लगे। यह अवस्था देख, जिस हाथीपर वे सवार थे, उसका महावत उन्हें रणक्षेत्रसे निकाल ले चला। उसने अपने प्रभुकी रक्षाके लिये युद्धक्षेत्र परित्याग किया। सिकन्दरने भी उसका पीछा किया ; परन्तु उसका घोड़ा बहुत ही घायल हो गया था। अतः वह अग्रसर न हो सका और घोड़ेने गिरकर अपने प्राण त्याग दिये।

अन्तमें सिकन्दरने आम्भिके भ्राताको समझाकर पुरुको वश्यता स्वीकार करनेके लिये कहला भेजा। परन्तु उस समय अत्यन्त कष्टमें रहनेपर भी पुरुने उसकी बात स्वीकार न की और उसे पहचान कर कहा, कि तुम्हारे भ्राताने अपना राज्य विदेशियोंको अर्पण किया है। इतना कहकर उन्होंने आम्भिके भ्रातापर शस्त्र फेंका। संयोगवश वह हट गया, नहीं तो उसी समय उसका प्राणान्त हो जाता।

जब पुरुने देखा, कि अब उनका जीवित रहना कठिन है और सिकन्दरकी सेनासे बचना भी असम्भव ही है। तब उन्होंने फिर अपनी सेनाको युद्धक्षेत्रमें अग्रसर होनेकी आज्ञा दी और स्वयं भी वीरलोक प्राप्त करनेकी इच्छासे शत्रु-सैन्यकी ओर चल पड़े। बुझता हुआ दीपक जिस तरह एकबार अपनी प्रबलताओं पर अन्तिम ज्योति दिखाकर फिर बुझ जाता है; उसी तरह पराक्रमी पुरु भी अधिक पराक्रम दिखाकर अपना पीछा करनेवालोंपर टूट पड़े। फिर भयंकर युद्ध होने लगा। भारतीय योद्धा अपने प्राणोंकी ममता त्यागकर एक बार फिर शत्रुओंपर टूट पड़े। शत्रु-सैन्य निहत होने लगी। परन्तु तुरन्त ही सिकन्दरकी नवीन सेना आकर उसमें योग देने लगी। इस तरह सिकन्दरकी सेनाका बल बढ़ता ही गया। इसी समय सिकन्दर भी दूसरे घोड़ेपर सवार होकर वहाँ आ पहुँचा। युद्ध समाप्त होनेका समय ज्यों ज्यों निकट आता गया; त्यों त्यों पुरु अधिकाधिक विक्रम प्रकाश करने लगे। इधर मसिडोनियन वीर भी प्रबल वेगसे अस्त्र शस्त्र फेंकने लगे।

परन्तु इसी समय एक ऐसी घटना घटी, जिससे युद्ध समाप्त होनेका अवसर आ पहुँचा।

लगातार कितने ही शस्त्रोंका आघात प्राप्तकर जब पुरु हाथीपर बैठनेमें असमर्थ हो गये थे, तब महावतने उनको इधर उधर ढुलकते देखकर समझा, कि वे उतरनेका इशारा कर रहे हैं। इससे महावतने हाथीको बैठनेका इशारा किया। उस हाथीके बैठते ही अन्यान्य समस्त हाथी भी बैठ गये और इसी समय पुरु हाथीसे लुढ़ककर नीचे भूमिपर गिर पड़े। महावत मारा गया। हाथी अपने स्वामीको भूमिपर गिरते देखा, विज्ञ चिकित्सककी भाँति उनके शरीरमें घुसे हुए तीर निकालने लगा। मसिडन सेनाके सैनिक इस समय पुरुको निहत समझकर उनके शरीरपर से बहुमूल्य रत्न लूटनेके लिये दौड़ पड़े। चतुर हाथीने यह दशा देखकर पुरुको अपनी सूँढ़ द्वारा उठाकर पीठपर डाल लिया और शत्रु-सैन्यको मर्दन करने लगा। परन्तु हाथी अधिक देरतक युद्धस्थलमें ठहर न सका। वह भी अविरल शस्त्रोंका आघात सहनकर परलोकगामी हुआ। सिकन्दर मूर्च्छित पुरुकी सुन्दरता और तेजपूर्ण बलिष्ट शरीर देखकर मुग्ध हो गया। उसने पुरुकी सुश्रूषा कराई और जब पुरु होशमें आये तब उसने पूछा- "मैं तुमसे कैसा व्यवहार करूँ ?" तेजस्वी पुरुने बड़े दर्पसे कहा,— "सिकन्दर! राजाओंके योग्य व्यवहार करो।" सिकन्दरने कहा—"मैं आपसे वैसा ही व्यवहार करूँगा। परन्तु आप मुझसे और क्या चाहते हैं?" पुरुने कहा—"मेरे प्रथम उत्तरमें ही सब

बातें आ गई हैं।" सिकन्दर इस अवस्थामें भी पुरुका साहस और वीरत्व देखकर मुग्ध हो गया। उसने पुरुको अपने बन्धु-रूपमें ग्रहणकर अपने हृदयके महत्व और बुद्धिका परिचय दिया।

सन् ३२६ ई० पू० के जुलाई मासके आरम्भमें यह युद्ध हुआ था। डियोडोरसका कथन है कि इस घोरतर संग्राममें १८ हज़ार भारतवासी निहत और नौ हज़ार बन्दी हुए थे। सिकन्दरकी ओरके २८० घुड़सवार और सात सौ पैदल मारे गये थे। यह युद्ध आठ घण्टे तक हुआ था।

सिकन्दरने अपनी इस असाधारण विजयकी स्मृतिमें दो नगर निर्माण किये थे। जहाँ युद्ध हुआ था, वहाँ एक नगर बसाकर उसका नाम निकाइया (Nikaia) रखा था। दूसरा अपने घोड़ेके नामसे बुकेफेला रखा था।

इस बातका कुछ भी पता नहीं लगता, कि पुरु किस वर्णके वीर थे। उस समय बहुतसे राज्य ब्राह्मणों द्वारा भी शासित होते थे। कितने ही पुरुको ब्राह्मण कहते हैं।

इस महायुद्धमें जितने ग्रीक वीर मारे गये थे, वीर सिकन्दरने बड़े समारोहसे उनकी अन्त्येष्टि कराई और ग्रीक देवी देवताओंका बहुत कुछ पूजन अर्च्चन भी हुआ तथा इस उपलक्ष्यमें कई दिनोंतक महोत्सव होता रहा।

इस युद्धमें यद्यपि सिकन्दरको विजय प्राप्त हुई और यद्यपि पराक्रमी पुरु दुर्भाग्य क्रमसे पराजित हुए तथापि सिकन्दर तथा उसके सैनिक अच्छी तरह समझ गये, कि भारतवर्षमें आकर

जिस युद्ध प्रणालीका उन्हें सामना करना पड़ा है ; उससे सर्वत्र विजय प्राप्त करना तो कठिन है ही, साथ ही अबतक लगातार विजय प्राप्तकर जो सुनाम और सुकीर्त्ति वे अर्ज्जन करते आये है ; उसकी रक्षा करना भी दुःसाध्य है । सिकन्दर यद्यपि अध्यवसायका अवतार था और यद्यपि उसमें कार्यकरी शक्ति बहुत अधिक थी ; तथापि पुरुसे युद्धकर वह अच्छी तरह समझ गया था, कि इसके पहले जितने युद्ध हुए हैं, वे वास्तवमें इसके आगे एक खेलके समान थे ।

भारतवर्षमें आनेके पहले सिकन्दर भारतीय धन-रत्नपर अनायास ही अधिकार हो जानेका प्रलोभन अपने सैनिकोंको बराबर दिलाया करता था, बराबर उन्हें समझाया करता था, कि भारतमें बहुत सा धन-रत्न है, जिसपर हमलोग विना विशेष क्षति सहे ही अधिकार जमा सकते हैं ; सिकन्दरके उत्साह भरे वचन तथा प्रलोभन भरी बातें सुनकर उसके सैनिक भी सब कष्टोंको तृणवत् समझकर भारताभिमुख धावित हुए थे। परन्तु यहाँ आकर उन्हें जो कष्ट भोगना पड़ा था ; जिस तरह पदपदपर विपत्तिका सामना करना पड़ा था और जिस युद्ध-कौशलकी टक्करमें खड़ा होना पड़ा था, उससे उनका वह अध्यवसाय और वह पूर्वका साहस दूर भाग गया था । वे एक प्रकारसे हताश हो पड़े थे ।

सुदक्ष सेनापतिगण अपने सैनिकोंको युद्धके सब भेद नहीं बताते । सच्ची बातें सुननेसे कितने ही अवसरोंपर सैन्य भय-

कम्पित हो उठती है; इसलिये बहुत-सी बातें सदा गुप्त रखनी पड़ती हैं। सिकन्दरके सेनापति भी प्रकृत विषयको गुप्त रखकर इसी तरह सैन्यको बराबर प्रलोभन दे, उत्साहित किया करते थे। अस्तु, इस बार जब पुरुसे युद्ध समाप्त हो गया; तब सिकन्दरने अपने सैनिकोंको एकत्र कर, उनकी वीरताकी यथेष्ट प्रशंसा करते हुए कहा,—"अब वह समय आ पहुँचा है, कि हमलोगोंको युद्ध करना ही न पड़ेगा। थोड़ी दृढ़तासे और भी काम करनेपर और थोड़ी दक्षता और चातुरी दिखानेपर हमलोग आगेके सब स्थानोंमें भी जय प्राप्त करेंगे; क्योंकि भारत-वासियोंमें हमलोगोंको बाधा पहुँचानेकी जो शक्ति थी, वह गत युद्धमें ही समाप्त हो गई हैं। अब हमलोगोंका काम केवल भारतके मूल्यवान द्रव्योंका संग्रह करना है। इसके अतिरिक्त हम-लोग अब जिस देशकी ओर अग्रसर होंगे, वहीं एक प्रकारसे भारतका धन-रत्न-भाण्डार है। वहीं भारतके चिर-प्रसिद्ध-धन-रत्न प्राप्त होते हैं। भारतीय द्रव्योंके सम्मुख वे द्रव्य कुछ भी नहीं हैं; जो हमलोगोंको फ़ारिसमें प्राप्त हुए हैं। अब हमलोग हीरे, पन्ने, मोती, हाथी दाँत प्रभृति नाना प्रकारके पदार्थ अना-यास ही प्राप्त करेंगे। इतना धन प्राप्त होगा, कि केवल हमलोग ही नहीं, वरन् समस्त मसिडोनियावासी तृप्त हो जायँगे।"

इसी तरह सिकन्दरने प्रलोभन देकर अपनी सेनाको फिर पूर्वरूपसे उत्साहित कर दिया। उसकी लोभी सेना सिकन्दरकी बातें सुन भारतवासियोंके धन-रत्न लूटनेके लिये तैयार हो गई।

सिकन्दरने जिस तरह तक्षशिलामें अपनी थोड़ी सेना इस इच्छासे छोड़ दी थी, कि जिसमें लौटते समय किसी प्रकारकी बाधा न प्राप्त हो अथवा आम्भि फिर स्वतन्त्र न बन बैठें ; उसी इच्छासे पुरुके राज्यमें भी उसने क्रेटेरसको थोड़ी सेनाके साथ दुर्ग निर्माणकर रहनेकी आज्ञा दे दी। इसी स्थानपर सिकन्दरने अपने कुछ मनुष्य हिमालयसे बड़े बड़े वृक्षोंको काट लाने और समुद्रमें जाने योग्य बड़ी बड़ी नावें तैयार करनेके लिये भेज दिये।

पुरुके साथ युद्धमें जिन सैनिकोंने वीरत्व प्रदर्शन किया था और जिन्होंने विजय प्राप्त करनेमें खूब साहस दिखाया था, उन्हें सिकन्दरने पदानुसार बहुत कुछ धन बाँटा। पुरुने भी आरोग्य होकर सिकन्दरकी वश्यता स्वीकार ली और इसके बदलेमें उन्हें उनके राज्यके साथ-ही-साथ और भी कई प्रदेशोंका शासन भार प्राप्त हुआ। इसी स्थानपर अभिसारके अधीश्वरने कुछ उपहार भेजकर सिकन्दरकी वश्यता स्वीकार की। सिकन्दरने अभिसारके राजाको बुलवा भेजा। इस बातका ठीक पता नहीं लगता, कि अभिसारके राजाने सिकन्दरकी आज्ञा मानी थी या नहीं और पीछे सिकन्दरने उनके साथ कैसा व्यवहार किया था।

सिकन्दर लगभग एक मास तक पुरुके राज्यमें रहा था। पुरुकी शासन-प्रणाली, समृद्धि-सम्पन्न प्रजा और उनके सुखपूर्ण कार्य देखकर वह बड़ा मुग्ध हुआ था।

३

सांगला विजय

यद्यपि पुरु पराजित हो गये थे ; परन्तु उनकी देखा-देखी अन्यान्य नृपतिगण सिकन्दरकी वश्यता स्वीकार करनेके लिये तैयार नहीं हो गये थे। सिकन्दरने ३२६ ई० पू० के जुलाईके मध्यभागमें चेनाब (चन्द्रभागा Akesines) पार करनेके पहले ग्लोसे या ग्लौकनिकोईपर आक्रमण करनेके लिये अपने सैनिकोंमेंसे बहुतसे साहसी और कर्मठ सैनिक चुन लिये। इन्हें लेकर ग्लौसेपर आक्रमण करनेके लिये आगे बढ़ा। इस बार वह जिस सावधानतासे चुने हुए सैनिकोंको लेकर आगे बढ़ा था ; उसीसे मालूम होता है, कि पुरुसे युद्धकर उसके हृदयमें भारतीयोंकी युद्ध प्रणालीका भय समा गया था। ग्रीक ग्रन्थ-कारोंका कथन हैं, कि पुरुके राज्यके पार्श्ववर्त्ती सब लोगोंने

सिकन्दरकी वश्यता स्वीकार ली थी। कितने ही ऐतिहासिकों-का मत हैं, कि इस तरह सैंतीस नगर और कितने ही गावोंपर सिकन्दरने अपना अधिकार जमाया।

उसी समय पराजित अश्वकगणोंने फिर अधीनता पाश छिन्न कर अपनेको स्वतन्त्र बना लिया था। सिकन्दरने अपनी कुछ सेना उनको दमन करनेके लिये भेजी भी थी; परन्तु ठीक ठीक पता नहीं लगता, कि वास्तवमें क्या हुआ था। इसी समय आम्भि भी अपने राज्यमें भेज दिये गये थे। सम्भव है, कि विदे-शियोंकी विभेद नीतिका अनुसरण कर ही सिकन्दरने आम्भिको भी आगे देशवासियोंके विरुद्ध प्रेरण किया हो और इसी तरह अश्वकोंको पराजित करनेका संकल्प किया हो।

इस बातका ठीक ठीक पता नहीं लगता कि सिकन्दरने चेनाब (चन्द्रभागा) नदी किस स्थानसे पार की थी। रेवर्टी साहबका मत है, कि वज़ीराबादसे पच्चीस या तीस मील उत्तर की ओर उसने चेनाब पार की थी। इसे अतिक्रमण करनेमें भी उसे कम कष्ट न उठाना पड़ा। वेगवती चन्द्रभागाके जलमें बड़े बड़े शिला-खण्ड है। इनकी चोट खाकर सिकन्दरकी बड़ी बड़ी नावें चूर चूर हो गई थीं और उसके कितने ही सैनिक चेनाबकी प्रवल धारामें यमालय जा पहुँचे थे। इस चन्द्रभागाने सिकन्दर को जैसी वाधा पहुँचाई थी; इसीलिये ग्रीक ग्रन्थकारोंने इसे अलेकजैण्ड्रोकस अर्थात् अलेक्जैण्डर-नाशिनीके नामसे अभिहित किया है। कुछ भी हो। बड़ी कठिनतासे सिकन्दरकी सेना नदी

पार करनेमें समर्थ हुई थी। जिस स्थानपर सिकन्दरने नदी पार की थी ; वहाँ उसकी चौड़ाई ३००० हज़ार गज़ थी।

सिकन्दर चन्द्रभागा अतिक्रमण कर जिस देशमें जा पहुँचा था ; उसके अधिपति पुरु (द्वितीय पुरु) थे। उसने अपने सेनापति हिपाइस्तियनको इसी द्वितीय पुरुको वशमें लानेके लिये भेज दिया। ग्रीक ग्रन्थकारोंने इस पुरुको प्रथम पुरुका सम्बन्धी बताया है। यह द्वितीय पुरु बाहुबलसे अपने राज्यकी रक्षा न कर सकनेपर भी सिकन्दरके शरणापन्न न हुए और उन्होंने पर्वत तथा जङ्गलोंमें रहकर अपनी स्वाधीनताकी रक्षा करनी चाही। वे अपने बन्धु-बान्धवोंको लेकर दुर्गम पहाड़ी प्रदेशोंमें जा बसे और उनकी प्रजाने भी उनका ही अनुकरण किया। इस प्रदेशमें सिकन्दरको खाद्य द्रव्य न मिले। इसीलिये, उसने प्रथम पुरुके राज्यमें खाद्य सामग्री संग्रह करनेके लिये अपने मनुष्य भेजे थे।

सिकन्दरको भारतवासियोंका बाहुबल इसके पहले ही मालूम हो चुका था ; इसलिये उसने पुरुको शीघ्र अपनी सेना लेकर आनेके लिये कहा और भारतवासियों द्वारा ही भारतवासियोंको पराजित करनेका संकल्प किया। विदेशी आक्रमणकारियोंने इसी नीतिसे सदा भारतवासियोंको पराजित किया है।

सिकन्दर द्वितीय पुरुपर अधिकार जमानेके लिये द्रुत वेगसे गमन करता हुआ रावी (ऐरावती Hydraotes) नदीके तटपर जा पहुँचा। इसे पार करनेमें सिकन्दरको किसी प्रकारकी बाधा न पड़ी। उस देशके भीतरी भागमें जाते समय सिकन्दरने अपनी

सेना थोड़ी थोड़ी दूरीपर रख दी और उस प्रदेशका भार भी अपने पराजित पुरुको सौंप दिया। इन सब विस्तृत स्थानोंपर विदेशियोंका शासन साध्य न समझकर ही सिकन्दरने अपने शत्रु पुरुको, प्रथम पुरुके शत्रु-रूपमें परिणत कर, उस शत्रुका दमन करनेके लिये, पुरुको ही नियुक्त कर दिया था।

कुछ भी हो। रावी पार करनेपर भी वाधाओंने सिकन्दरका पीछा न छोड़ा। यद्यपि किसी किसी ग्रामके नि;सहाय मनुष्योंने सिकन्दरकी वश्यता स्वीकार ली; परन्तु कितने ही उसे वाधा पहु चानेके लिये खड़े भी हो गये। जो वाधा प्रदानमें असमर्थ थे, वे नगर छोड़ जङ्गलोंमें भाग गये।

परन्तु रावीके पार कुछ आगे बढ़ते ही सिकन्दरने सुना, कि उस स्थानके समर-प्रिय अधिवासी उससे युद्ध करनेके लिये तैयार हैं। यह समाचार सुन सिकन्दर स्थिर न रह सका। वह उनपर शीघ्र ही आक्रमण करनेके लिये तैयार हो गया। क्योंकि उसे भय था, कि कहीं अन्य भारतीय वीर जातियाँ भी इनकी सहायताके लिये तैयार न हो जायँ। इन स्वतन्त्र जातियोंमें कठाई-ओई (Kathaioi) की अधीनतामें बहुतसे मनुष्य थे। ये बड़े ही समर-कुशल थे। इनके पड़ोसी आक्सिड्राकाई (Oxydrakai) और मलोई थे, जो रावी और लाहौरके बीचमें बसे थे। ये भी बड़े बहादुर लड़ाके थे।

रावी-तट परित्याग करनेके दूसरे दिवस अडराइसताई (Adraistai) नामक जातिकी राजधानी पिम्प्रमापर सिक-

न्दरने अधिकार जमा लिया और वहाँ अपनी सेना सहित एक दिवस विश्रामकर साँगलापर आक्रमण करनेके लिये चल पड़ा। साँगलाकी रक्षाके लिये कुठाईओई तथा अन्य जातियाँ नगरकी निकटवर्त्तिनी एक छोटी पहाड़ीपर पड़ाव डाले हुए थीं। ये सैनिक अपने शिविरके आगे गाड़ियोंकी तीन श्रेणियाँ रखकर शत्रुके आगमनकी राह देख रहे थे। सिकन्दरने इन्हें देखते ही अपनी सेनाको कई भागोंमें विभक्तकर इनपर आक्रमण करनेकी आज्ञा दे दी। सिकन्दरने सोचा था, कि सेनाको आते देखकर भारतीय योद्धा इन गाड़ियोंके आगे आकर उसकी सेनापर आक्रमण करेंगे; परन्तु इसके बदले वे गाड़ियोंपर खड़े होकर सिकन्दरकी सेनापर शस्त्र फेंकने लगे। इस समय सिकन्दरने देखा, कि घुड़सवार सेना द्वारा कोई काम निकलनेकी सम्भावना नहीं है। इसलिये उसने अपनी पैदल सेनाको प्रवल विक्रमसे आक्रमण करनेकी आज्ञा दी। ग्रीक ग्रन्थकारोंका कथन हैं, कि ये क्षत्रिय वीर अब गाड़ियोंकी प्रथम श्रेणी छोड़कर द्वितीय श्रेणीके सामने खड़े होकर शत्रुओंपर आक्रमण करने लगे। इस तरह मसिडन सेना बड़ी असुविधामें जा पड़ी। भारतीय वीर बड़े विक्रमसे सिकन्दरकी सेनापर शस्त्र फेंकते थे; परन्तु सिकन्दरकी सेना उन्हें कुछ भी हानि न पहुँचा सकती थी। अब सिकन्दरकी सेनाको जब दूसरा उपाय न दिखाई दिया, तब उसने गाड़ियोंकी प्रथम श्रेणीको खींचकर दूर हटा दिया और इस तरह उनके पास पहुँचकर आक्रमण करने लगे। ग्रीक ग्रन्थकारोंका कथन है, कि अब

भारतीय योद्धा वह स्थान छोड़कर नगरमें जा घुसे और नगरका दरवाज़ा उनलोगोंने बन्द कर लिया। सिकन्दरने नगरकी प्राचीरके पास ही अपना शिविर स्थापन कर नगर घेर लिया। इस नगरके पास ही एक बड़ी भारी झील थी। इस भयसे कि कहीं उसे पार-कर रात्रिके समय शत्रु भाग न जायँ, सिककन्दरने उसके चारों ओर भी अपने सैनिकोंका दल भेज दिया। नगर या दुर्गमें अव-रुद्ध अवस्थामें रहना और शत्रुके हाथोंमें बन्दी रहना, एक ही है। इस अवस्थामें कितनी ही बार भूखों मरना पड़ता है। यह सोच-कर भारतीय योद्धाओंने रात्रिके अन्धकारमें नगर त्याग देना चाहा और उस झीलको पारकर जङ्गलोंमें चले जानेके विचारसे नगरसे बाहर निकले। इन्हें निकलते देख पहलेसे ही सावधान मसिडन सेनाने इनपर बड़े वेगसे आक्रमण किया। खूब युद्ध हुआ और भारतीय फिर नगरमें लौट आये।

सवेरा होते ही सिकन्दरने बड़े पराक्रमसे नगरपर आक्रमण किया। इसी समय उसकी सहायताके लिये पुरु भी कुछ हाथी और अपनी पाँच हज़ार सेना लेकर वहाँ जा पहुँचे। हाय! जो हाथ एक दिन स्वदेशवासियोंकी रक्षामें नियुक्त हुआ था, वही अब उनके ध्वंसके लिये उठा।

अब सिकन्दरने प्राचीरकी नींव खोदकर उसे गिरा देना ही उचित समझा। थोड़े ही परिश्रममें सिकन्दरकी मनोकामना सिद्ध होनेका अवसर आ पहुँचा। कितने ही स्थानोंकी दीवार ढह पड़ी। उस राहसे मसिडन सेना प्रवल वेगसे भीतर घुसी।

अब दोनों दलोंनें तुमुल-युद्ध आरम्भ हुआ। इस युद्धमें भारत-वासियोंने बड़ी वीरता दिखाई। विदेशी लेखकोंने स्पष्ट लिखा है, कि इस स्थानपर सिकन्दरकी सेनाको बहुत ही दुःखित होना पड़ा था। बहुतसे मनुष्य मारे गये थे और सिकन्दर अत्यन्त क्रुद्ध हो गया था। इसी विषयसे मालूम होता है, कि भारतीयोंने आशातीत पराक्रमसे युद्ध किया था। एरियनका कथन है, कि थोड़ी ही देरमें सिकन्दरके एक हज़ार दो सौ मनुष्य आहत हुए थे। इन आहतोंमें सिकन्दरके बड़े बड़े सेनापति भी थे। इनके अतिरिक्त एक सौ मसिडन सैनिक मारे गये थे। इन ऐतिहासिकोंकी बातें कहाँतक सत्य हैं, उसका कोई प्रमाण हमारे पास नहीं है परन्तु इतना अवश्य कह सकते हैं, कि समय समय-पर ये पक्षपातसे शून्य नहीं रहते। इसी युद्धमें भारतवासियोंके सम्बन्धमें एरियनने लिखा है—सत्रह हज़ार भारतवासी निर्दयतासे मारे गये थे और सत्रह हज़ार बन्दी हुए थे। इनके साथ पाँच सौ घुड़सवार और तीन सौ शकट भी सिकन्दरके हाथ लगे थे। क्यूर्टियसने लिखा हैं, कि शत्रु-पक्षके आठ हज़ार मनुष्य नष्ट हुए थे। इनमें किसकी बात ठीक है, सो तो ईश्वर ही जाने। इन हताहतोंकी संख्या देखकर ही मालूम होता है, कि सिकन्दरको इस बार क्षत्रियोंसे काम पड़ा था और उसे अच्छी शिक्षा भी मिल गई थी। इस युद्धके सम्बन्धमें एक बात और भी विचारणीय है। ग्रीक ग्रन्थकारोंने जिस ढङ्गसे इस युद्धका वर्णन किया है; उससे मालूम होता है, कि इस प्रदेशका कोई राजा न था और

प्रजा ही सब कार्य देखती थी। जो हो, साँगलापर सिकन्दरका अधिकार हो गया। सिकन्दरने क्रोधके वशीभूत होकर साँगलाको श्मशानमें परिणत किया; क्योंकि यहाँ उसे सबसे अधिक बाधा प्राप्त हुई थी। सिकन्दरकी आज्ञासे उसके सैनिकोंने साँगला-वासियोंके सब मकान चूर्ण-विचूर्ण कर डाले, वह स्थान मनुष्यों-की आवास-भूमि न मालूम होने लगी। *

* साँगला किस स्थानपर है, इसका ठीक ठीक निर्णय नहीं होता। कनिंग-हम साहब झंग जिलेके साँगला ठिला नामक स्थानको साँगला प्रमाणित करते हैं। विंसेण्ट स्मिथ साहब इसे गुरुदासपुर जिलेमें बताते हैं।
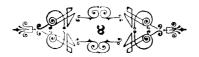
सिकन्दरने सांगलापर अधिकार जमाकर और भी पूर्वकी ओर अग्रसर होनेकी इच्छा प्रकट की। क्रमशः कई दिवस तक अग्रसर होनेके बाद सिकन्दरको हिफासिस (व्यास) नदी बाधाके रूपमें दण्डायमान दिखाई दी। इस स्थानपर आकर सिकन्दरने व्यासके उस पारके देशकी शासन प्रणाली और सैन्य-का जो समाचार सुना, उससे वह अत्यन्त विचलित हो गया। उसकी दिग्विजय-वासना दूर भाग गई और उसके सैनिक अब विपत्तिमें अग्रगामी होनेके बदले लौट चलनेके लिये आग्रह प्रकाश करने लगे ; क्योंकि उन सबने सुना, कि व्यास नदीके उस पारकी भूमि बड़ी ही उर्व्वरा है और वहाँके मनुष्य कृषि-कार्यमें जैसे निपुण हैं, युद्ध-कौशलमें भी वैसे ही पटु हैं। वहाँकी शासन प्रणाली भी अति उत्तम है। अन्यान्य राज्योंकी अपेक्षा उस

राज्यका हाथियोंका बल बहुत ही अधिक है। वे हाथी बहुत बड़े हैं और उन्हें रणक्षेत्रमें युद्ध करनेकी अच्छी शिक्षा भी मिली है। उसके बाद गाङ्गेय प्रदेश है। उस प्रदेशके अधीश्वर दो लाख पैदल, तीस हज़ार घुड़सवार और ३ हज़ार हाथियोंकी सेना लेकर युद्ध क्षेत्रमें उपस्थित हो सकते हैं। पुरुके हाथियोंका सामना कर ही सिकन्दरकी सेना विचलित हो उठी थी। अब पूर्वकी अपेक्षा भी अधिक हाथियोंका सामना करना उन्हें और भी कठिन मालूम हुआ। पहले तो सिकन्दरको इस समाचारपर विश्वास न हुआ। उसने पुरुको बुलाकर इस विषयमें पूछा और उन्होंने भी इस समाचारकी पुष्टि की। अस्तु

जब सिकन्दरने देखा, कि उसके सैनिक अब व्यास नदीको पारकर विपत्तिका सामना नहीं किया चाहते, तब उसने उनको उत्साहित करनेके लिये कहा—"अब क्या आपलोग विपत्तिमें मेरा साथ न देंगे? यह सभा इसीलिये एकत्र की गई है, कि आपलोग निश्चित करें कि अब आगे बढ़ा जाय अथवा इसी स्थानसे लौट चला जाय। आपलोगोंके अध्यवसाय और परिश्रमका ही यह फल है, कि हमलोग हेलिसपौण्ट, कैपेडोसिया, पैफलागोनिया, लीडिया, केरिया, फिनीशिया, बैबिलन, सीरिया, मेसोपोटामिया, फ़ारिस, एजिप्ट प्रभृति देश और प्रदेशोंपर अधिकार जमा सके हैं। इनके अतिरिक्त कैस्पियन-तटके भू-भाग, ककेशश प्रदेश और भारतवर्षके सिन्धुसे इस व्यास-तट तकके प्रदेश हस्तगत कर सके हैं। ऐसी अवस्थामें इस व्यासको उल्लङ्घन

कर धन-धान्यपूर्ण देशपर अधिकार जमानेमें आपलोग क्यों इतस्ततः कर रहे हैं ? क्या इन असभ्योंके निरर्थक बाधा प्रदानके भयसे ही आपलोग डर गये हैं ? यदि कोई जानना चाहे, कि इस युद्धका अन्त कहाँ होगा, तो उसे जान रखना चाहिये, कि गङ्गा और पूर्व समुद्र यहाँसे बहुत दूर नहीं है। मेरी दृढ़ धारणा है, कि इस समुद्रके साथ ही समुद्र मिल गया है और पृथिवीके चारों ओर समुद्र-ही-समुद्र है भी। इसके अतिरिक्त यह भी मैं प्रमाणित कर दूँगा, कि भारत उप-सागर- हारकेनियन समुद्र और फ़ारिस-का समुद्र मिल गया है। इस फ़ारिसके उप-सागरके पाससे हमारे जहाज़ अफ्रिकाकी प्रदक्षिणा करते हुए हर्क्यूलिसके स्तम्भके पास जा पहुँचेंगे। इस तरह आफ्रिकाका भीतरी भाग और समस्त एशिया हमलोगोंके अधिकारमें आ जायगा। देव-ताओंने पृथिवीकी जो सीमा निर्धारित की हैं; वही हमलोगोंका राज्य होगा। इसके विपरीत हमलोग यहाँसे ही यदि लौट चलेंगे, तो इस व्यास नदी तक ही हमलोगोंके विजयकी सीमा रह जायगी। एक बात और भी है। यदि उन मनुष्य और जातियोंको जो अभी तक पराजित नहीं हुई हैं, बिना विजय किये ही हमलोग छोड़ देंगे, तो वे उन मनुष्योंको भी उभाड़ेंगे, जो पराजित होकर हमलोगोंके अधिकारमें आ गये हैं। इससे वे जातियाँ भी स्वतन्त्र हो जायँगी और हमलोगोंका इतने दिनोंका परिश्रम और रक्तपात वृथा ही हो जायगा तथा हमलोगोंको फिर भयानक विपत्तिका सामना करनेके लिये तैयार होना पड़ेगा। आपलोग तो जानते हैं,

कि हमारे पूर्वजोंने जो सम्मान प्राप्त किया था, वह ग्रीस देशमें बैठकर नहीं ; वलिक घरसे बाहर निकल कर ही। तपस्याके बिना कौन देवत्व प्राप्त कर सकता है ?

आपलोगोंको विपत्तिमें डालकर क्या मैं चुपचाप बैठ जाता हूँ ? मैं भी तो आपलोगोंके साथ ही रहता हूँ। हमलोग सभी एक साथ परिश्रम करते हैं और एक साथ ही प्राण-भयको त्यागकर उद्योग करते हैं। अतः इसके फलके हमलोग सभी एक समान अधिकारी हैं। अतः जो भूमि हमलोगोंने जीती है ; उसके आपलोग ही राजा हैं और जो धन हमलोगोंने लूटा है, उसका अधिकांश ही आपलोगोंको दे दिया है। जिस समय समस्त एशियापर हमलोगोंका अधिकार हो जायगा ; उस समय हम आशासे अधिक देकर आपलोगोंको सन्तुष्ट करेंगे और जो देश जाना चाहेंगे, उन्हें भेज देंगे अथवा अपने साथ ले चलेंगे ; परन्तु जो यहाँ रहना चाहेंगे, उन्हें मैं इतना दूँगा, कि दूसरे लोग देखकर चकित हो जायँगे।"

कहना वृथा है, कि सिकन्दरकी इस वक्तृता और प्रलोभनका कुछ भी प्रभाव न पड़ा। किसी समय सिकन्दरका मामूली संकेत पाते ही जो सेना अपने प्राणोंकी ममता त्याग, भीषणसे भीषण स्थानमें जानेके लिये प्रस्तुत हो जाती थी ; वही आज एकदम निश्चेष्ट और निस्पन्द होकर बैठ रही। जब बहुत देर हो गई और किसीने कोई उत्तर न दिया तो सिकन्दरका सेनापति कैनस बोला—

"इस समय वाध्य होकर हमें भी कुछ कहना पड़ता है। यह बातें मैं केवल अपने स्वार्थवश या किसी सैनिक विशेषके स्वार्थवश नहीं कह रहा हूँ ; बल्कि सबकी ओरसे ही कह रहा हू । इसमें कोई सन्देह नहीं, कि आपके द्वारा प्रचुर धन, सम्मान तथा दूसरोंपर प्रभुत्व करनेकी क्षमता प्राप्त की है। अतः इसमें कोई सन्देह नहीं, कि हमलोगोंको प्रत्येक अवस्थामें आपकी इच्छाको पूर्ण करनेके लिये तत्पर रहना चाहिये। परन्तु विचार करनेकी बात तो यह है, कि इस समय हमलोगोंकी अवस्था क्या हो रही है? एक बार स्मरण कीजिये, कि मसिडोनिया तथा ग्रीससे कितने मनुष्य लेकर हमलोग चले थे तथा हमलोगोंके चलने बाद भी कितने आकर हमलोगोंसे सम्मिलित हो गये थे तथा अब हमलोगोंकी संख्या कितनी रह गई है। इन सब बातोंपर विचार करनेसे स्पष्ट मालूम होता है, कि हमलोगोंकी संख्या बहुत कम हो गई। हमलोगोंकी विपत्तिकी एक सीमा निर्धारित हो जानी चाहिये। थेसिलीवासी जब एक बार युद्ध न किया चाहते थे ; तब आपने उनलोगोंको बिदाकर अत्यन्त बुद्धिमत्ताका कार्य किया था। इसके अतिरिक्त आपने जो नगर बसाये हैं ; उनमें भी बहुतसे ग्रीसवासियोंको रख आये हैं। वे इच्छा न रहनेपर भी आपकी आज्ञासे वाध्य होकर अबतक वहाँ बैठे हैं। कितने ही परलोक सिधार गये हैं और कितने ही एकदम अकर्मण्य हो गये, तथा कितने ही जिन देशोंको हमलोगोंने जय किया है, उनकी रक्षा कर रहे हैं। अनेकानेक रोगसे पीड़ित होकर मर

गये हैं। जो बचे हैं; वे अबतक हमलोगोंके साथ कष्ट भोग रहे हैं। अतः हमलोगोंकी सैन्य संख्या घट जानेके साथ-ही-साथ अब इतने दिनोंसे युद्ध करते करते इन सैनिकोंके शरीरमें यथेष्ट बल भी नहीं रह गया है, तथा ये उत्साह-हीन और शक्ति-हीन भी हो गये हैं। इसके अतिरिक्त अब ये अपने परिवारवालोंसे मिलनेके लिये भी बहुत व्यग्र हो रहे हैं। अतः आप इन्हें इनकी इच्छाके विरुद्ध आगे न ले जायँ। यदि ये उत्साह-हीन रहेंगे, तो पूर्ण हृदयसे कार्य न कर सकेंगे और जब पूर्ण हृदयसे कार्य न होगा; तब विजय प्राप्त: करना असम्भव ही है। अतः मेरी यह तुच्छ प्रार्थना है, कि जो धन सम्पत्ति आपने इतने दिनोंमें उपार्ज्जन की है, उसे लेकर देशको चलें और अपने देशके राजकाजकी व्यवस्था करें। इसके कुछ दिन बाद यदि इच्छा हो तो फिर युद्ध-यात्रा करें, इससे न तो सैनिक हतोत्साह होंगे और न आपके कार्यमें किसी प्रकारकी वाधा ही पड़ेगी। साथ ही आपको सेना भी वहुत मिलेगी; क्योंकि जब आपके देशवासी देखेंगे, कि आपके साथ गये हुए सैनिक प्रचुर द्रव्य उपार्ज्जन कर लाये हैं, तो वे अनायास ही आपका साथ देनेके लिये तैयार हो जायँगे।"
इसके अतिरिक्त कैनसने और भी बहुत कुछ कहा, जिसे सुनकर सिकन्दरके सैनिक तो प्रसन्न हो उठे; परन्तु सिकन्दर बड़ा ही असन्तुष्ट हुआ। सेनाकी अवस्था अपनी इच्छाके विपरीत देखकर उसने सभा भङ्ग कर दी। उसका क्रोध बढ़ता ही गया। दूसरे दिवस अन्य कर्मचारियोंको बुलाकर उसने समझाया; परन्तु

इतनेपर भी वे सिकन्दरके प्रस्तावमें सहमत न हो सके। अन्तमें सिकन्दरने कहा,—"मैं तो नदी पार अवश्य जाऊँगा। मुझे बहुतसे मनुष्य ऐसे मिल जायँगे, जो अपनी इच्छासे मेरे साथ जायँगे। अतः जिनको लौट जाना हो, वे लौट जायँ और ग्रीस देशमें जाकर सबसे कह दें, कि हमलोग अपने राजाको शत्रुओंके बीच छोड़ आये हैं।" इतना कहकर सिकन्दर अपने खीमेमें चला गया और तीन दिनोंतक बाहर न निकला।

सिकन्दरने समझा था, कि उसको क्रुद्ध देखकर उसके सैनिकोंका मत परिवर्त्तित हो जायगा; परन्तु सभी लौट जानेके लिये दृढ़ प्रतिज्ञ थे। अतः सैनिकोंका मत किसी तरह भी परिवर्त्तित न हुआ। जब सिकन्दरने देखा, कि उसके सैनिक अब किसी तरह नहीं मानते, तब उसने एक चाल चली। उसने पूजा आरम्भ की और इसी तरह दो तीन दिनोंतक पूजन करने बाद यह प्रचारित किया, कि उसे देवताने लौट चलनेकी आज्ञा दी है। अतः अब आगे बढ़ना स्थगित रहेगा। यह समाचार सुनते ही सेनाके आनन्दकी सीमा न रही। कितने ही सिकन्दरके शिविरके चारों ओर घूम घूमकर आनन्द-ध्वनि करने लगे और कितने आनन्दाश्रु बहाकर अपना आनन्द प्रकट करने लगे।

उस समय दो माससे भी ऊपर बराबर मूसलाधार वृष्टि होती रही और कितनी ही बार वज्रपात हुआ। सिकन्दरकी सेनाके कष्टका वारापार न रहा। सिकन्दरने विजित देशकी सीमा निर्धारित करनेके लिये व्यासके तटपर बारह बड़ी बड़ी वेदियाँ

तैयार कराईं। ये वेदियाँ चौखूँटे पत्थरोंसे बनाई गई थीं और पचास पचास फ़ीट ऊँची थीं। इनके अतिरिक्त स्वयं तथा अपने सैनिकोंको साधारण मनुष्योंसे अधिक लम्बे चौड़े प्रमाणित करनेके लिये उसने कई पत्थरके पलङ्ग बनाये थे। साथ ही यह भी ग्रीस ऐतिहासिकोंने लिखा है, कि सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य प्रति-वर्ष इन वेदियोंका दर्शन और पूजन करने जाते थे; जो बिलकुल ही असम्भव बात है; क्योंकि मेगास्थिनीसने अपने विवरणमें चन्द्रगुप्तका वेदियोंका पूजन करना कहीं भी नही लिखा हैं। जो हो, इन वेदियोंके बनते समय खूब उत्सव और नृत्य-गीत आदि हुए थे।

५

प्रत्यागमन
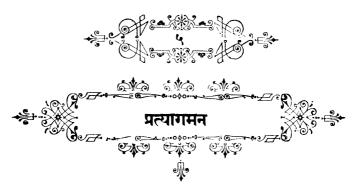
अब लाचार होकर सिकन्दरको अपने देशकी ओर लौटना पड़ा। वह वेदियोंका कार्य समाप्त कर तथा भारतवासियोंको भ्रममें डालनेके और भी कितने ही साधन व्यास तटपर एकत्र कर, चेनाव तटके उस स्थानपर जा पहुँचा; जहाँ उसका सेनापति हिपाइस्तियन गढ़ निर्माण कर बैठा हुआ था। वहाँ उन मनुष्योंको जो स्वेच्छासे वहाँ रहना चाहते थे तथा युद्धके कारण जो अकर्मण्य हो गये थे, उनको उसने रहनेकी आज्ञा दे दी और यहींसे उसने समुद्र-तटकी ओर यात्रा करनेका प्रबन्ध किया।

इसी स्थानपर अभिसारके निकटवर्त्ती उरसाके अधीश्वर (Hazara) जिन्हें एरियनने अर्सकीस लिखा है, नाना प्रकारके बहुमूल्य द्रव्य लेकर सिकन्दरकी सेवामें उपस्थित हुए

और उन्होंने सिकन्दरकी वश्यता स्वीकार ली। इनके साथ ही अभिसार (वर्त्तमान भीमभार और राजौरी) के अधीश्वरने भी अपने भ्राताको भेजकर सिकन्दरका आनुगत्य स्वीकार किया। दूतके साथ तीस हाथी भी सिकन्दरको उपहार स्वरूपमें मिले। अभिसारके राजा रुग्न रहनेके कारण स्वयं न आये। अभिसारके राजाको उनका देश तथा अर्सकीस (वर्त्तमान हज़ाराका निकटवर्त्ती प्रदेश) भी प्रदान किया गया तथा यह निश्चित कर दिया गया, कि किसे कितना कर देना पड़ेगा।

यहाँ सिकन्दरने फिर अपने देवताका पूजन किया। इसी स्थानपर थ्रेससे पाँच हज़ार घुड़सवार और बैबिलनसे सात हज़ार पैदल उसके पास आ पहुँचे। इनके साथ पच्चीस हज़ार सैनिकोंकी पोशाक भी थी तथा एक सौ टैलेण्ट मूल्यकी औषधियाँ भी आई थीं। सिकन्दरने वह नवीन पोशाक अपने सैनिकों में बाँट दी और पुरानी जलवा दी।

इसके बाद यात्राके कुछ पूर्व सिकन्दरने अपने आनुगत्योंको एकत्रकर उनके सामने ही पुरुको हिडास्पेस और हिफासिसके बीचके सब स्थानोंका शासनकर्त्ता नियुक्त किया। इन स्थानोंमें ग्लौसे, कटाइओई प्रभृति सात जातियाँ रहती थीं। तक्षशिलाके अधीश्वर आम्भि तथा पुरुमें वैमनस्य चला आता था। सिकन्दरने उन दोनोंमें मेल करा दिया और फिर उन दोनोंमें विवाह सम्बन्ध हो गया।

चेनाब पारकर सिकन्दर अब झेलमके तटपर आ पहुँचा।

यहाँ उसे यात्राकी तैयारियोंमें ही कई दिवस लग गये। यहीं उसके सेनापति कैनसकी मृत्यु हो गई। इसकी मृत्युसे सिकन्दरको बड़ा दुःख हुआ। उसने बड़े समारोहसे कैनसकी दाह क्रिया करा दी।

मसिडोनियन सेनाको ले जानेके लिये लगभग दो हज़ार नावें तैयार हुईं। इनमें तीस तीस डाँड़ोंकी अस्सी नावें थीं। इनके अतिरिक्त घोड़े हाथी ले जानेवाली नावें अलग थीं। समुद्र-अधिवासिनी जातियोंको नाव खेनेका काम सौंपा गया और नियार्कस इस नौ-वाहिनीका अध्यक्ष बनाया गया।

ईसामसीहके ३२६ वर्ष पूर्व अक्टूबर मासके मध्य भागमें सिकन्दरके यात्राकी सब तैयारियाँ हो गईं। इस समय सिकन्दरने सिन्धु-पर्वत प्रदेशके अधीश्वर सौफिटि (Sophytes या सौभूति) के आक्रमण भयसे हिपाइस्तियन और क्रेटेरस नामक अपने दोनों सेनापतियोंको उनपर तेज़ीसे आक्रमण करनेके लिये भेज दिया। ग्रीक ग्रन्थकारोंका कथन है, कि सौभूतिके अधीश्वरने बिना किसी युद्धके वश्यता स्वीकार ली।

३२६ ई० पूर्वके अक्टूबर मासके अन्तिम भागमें प्रातःकालके समय सिकन्दर अपने दल-बल सहित स्वदेशकी ओर चल पड़ा। कितने ही देशोंकी एक लाख बीस हज़ार सेना उसके साथ ही साथ चली। इनके साथ दो सौ हाथी भी थे। क्रेटेरस बहुतसे सैनिक लेकर दाहिने ओर हिपाइस्तियन अधिकांश सेना लेकर नदीकी बाईं ओरसे अग्रसर हुआ।

जानेके पहले सिकन्दरने सोनेके पात्रमें जल लेकर अपने देवता तथा झेलम और सिन्धु-नदीका पूजन किया। बाजे बजने लगे और इसी तरह धूम-धामसे यह दल आगे बढ़ा। इस तरह आगे बढ़ता हुआ वह दो दिन बाद उस स्थानपर जा पहुँचा, जहाँ हिपाइस्तियनने स्थल-भागसे जाकर पड़ाव डाला था। यहाँ दो दिनोंतक सेना विश्राम करती रही। यह स्थान शायद भीरा था। यहीं फिलिपौस भी उससे आ मिला। फिलिपौस सिकन्दरका एक सुचतुर सेनापति था। इस प्रदेशके कितने ही स्थानोंके अधिवासियोंने सिकन्दरकी वश्यता स्वीकार ली और कितने ही शत्रु बन स्थान छोड़ पहाड़ोंमें चले गये। अतः सिकन्दर अब नदीके उसी भागसे आगे बढ़ा जिधर उसे शत्रुओंका भय न था। सेनापति फिलिपौस उसके पश्चात-भागकी रक्षा करता हुआ अभी तक आ रहा था; अब उसे अग्रभागमें रहनेकी आज्ञा दी गई।

यहाँसे प्रस्थान कर सिकन्दर पाँचवें दिवस उस स्थानपर जा पहुँचा जहाँ झेलम और चेनाबका संगम हुआ था। ग्रीक ग्रन्थकारोंका कथन है, कि यहाँ नदी अत्यन्त सङ्कीर्ण और धारा बड़ी ही प्रखर हो गई थी। इससे नदीमें बड़े बड़े भँवर पड़ते थे और बहुत दूरसे हर-हराहटका शब्द सुननेमें आता था। सिकन्दरको अपने किसी भारतीय मित्रसे नदीकी इस अवस्थाका पता पहले ही लग चुका था। अतः वह अत्यन्त सावधानतासे अग्रसर होने लगा। परन्तु लाख सावधानता अवलम्बन करनेपर भी कितनी ही नावें आपसमें टकराकर टूट गईं। कितनी ही बड़े

ज़ोरसे किनारेसे टकराकर बेकार हो गईं और कितनी ही जलके प्रवल वेगमें डूब गईं। सिकन्दरकी नाव डूबती डूबती बची और सिकन्दरके सौभाग्यवश चेनावने अलेक्जैण्डर-नाशिनी नाम सार्थक न किया। बड़ी कठिनतासे ये नावें किनारे लगाई गईं और किसी तरह सिकन्दरकी सेना तटपर उतर पड़ी।

जिस समय सिकन्दर चेनाब और झेलमके संगम-स्थलपर इस तरह कष्ट भोग रहा था; उसी समय उसे समाचार मिला, कि सिबोई (Seboi) और माल जातिके मनुष्य उसे बाधा प्रदान करनेके लिये तैयार हैं। सिकन्दरने इन दोनोंका मिलन होनेके पहले ही सिबोईपर आक्रमण कर देना उचित समझा और उसी समय उनपर आक्रमण कर दिया। सिबोईयोंका नगर नदीसे २५० स्टेडिया दूरीपर था। अतः राहमें जितने गाँव मिले सब सिकन्दरके सैनिकों द्वारा नष्ट हुए। सिबोईकी राजधानीपर अधिकार जमानेमें भी सिकन्दरको कम कष्ट न हुआ। उसने नगरके प्राचीरको घेरकर बड़ी कठिनतासे उसपर अपना अधिकार जमाया। इस सिबोई राज्यके पास अगलसोई (Agalassoi) नामक एक और भी ज़बर्दस्त योद्धा जाति रहती थी। इसके राजा चालीस हज़ार पैदल तथा तीन हज़ार घुड़सवार सेना लेकर युद्ध-क्षेत्रमें उपस्थित हो सकते थे। सिकन्दरके आगमनका समाचार सुनते ही ये उसे बाधा प्रदान करनेके लिये तैयार हो गये। यह युद्ध नदी तटपर ही हुआ। यद्यपि भारतवासियोंने बड़े विक्रमसे युद्ध किया; परन्तु ये पराजित हुए और हटकर नगरमें चले गये।

सिकन्दरने फिर नगरको आ घेरा। क्यूर्टियसका कथन है, कि इस युद्धमें कोई भी वयःप्राप्त मनुष्य सिकन्दरके सैनिकोंकी तलवारके आघातसे न बचा और जो शस्त्रके आघातसे बच गये, वे दास रूपमें बेच डाले गये। उसके बाद सिकन्दर बढ़ता हुआ, लगभग तीस मील दूरीके उनके नगरमें जा पहुँचा। नगरके अधिवासी लगभग बीस हज़ार थे। उन्होंने नगरमें आग लगा दी और स्त्री बच्चे समेत जल मरे। बड़ी कठिनतासे सिकन्दरने यह आग ठण्डी की। यह घटना कहाँ हुई थी, इसका ठीक पता नहीं लगता। विसेण्ट स्मिथ साहब इसे झङ्ग ज़िलेके किसी स्थानमें बताते हैं। जो हो, सिकन्दर जिस समय इस प्रदेशमें आया उसके कुछ पहलेसे मूमुक्ष (Oxydrakai) और मालव देशवासियोंमें झगड़ा चल रहा था। यह झगड़ा यहाँतक बढ़ गया था, कि कई बार युद्ध भी हो गया; परन्तु जब इन्हें सिकन्दरके आगमनका समाचार मालूम हुआ, तब ये एकत्र होकर सिकन्दरके विरुद्ध शस्त्र लेकर खड़े हो गये।

सिकन्दर इस प्रदेशकी युद्ध-कुशल जातियोंका सामना कर चुका था; इसलिये इस बार वह चरके मुँहसे यह समाचार सुन, इन दोनोंके भी मिलनेके पहले ही इनपर आक्रमण करनेको तैयार हो गया। उसने विचारा कि इनपर पृथक पृथक आक्रमण करना ही श्रेयस्कर होगा।

यह सोच उसने अपनी सेनासे चुने हुए मनुष्य अपने साथ ले लिये। इन्हें लेकर वह चेनाबसे २० स्टेडिया दूरीपर एक छोटी

नदीके किनारे जा पहुँचा । यहाँ उसने कुछ देरतक विश्राम किया। अब उसे जल-हीन देशमें जाना पड़ता ; इसलिये उसने अपने सैनिकोंको जल-पात्रमें जल भर लेनेकी आज्ञा दे दी। इस तरह दिवसका अन्तिम भाग और रातभर चलकर सूर्योदयके समय वह एक नगरके पास जा पहुँचा। इस नगरमें बहुतसे मलोई थे। ये मलोई इस समय बिल्कुल ही असावधान थे। इन्हें स्वप्नमें भी आशा न थी, कि इस तरह मरुभूमि पारकर सिकन्दर एकाएक आ पहुँचेगा। इस समय सूर्योदय हो चुका था अतः कितने ही मनुष्य कार्यवश नगरके बाहर जा रहे थे। ये सिकन्दरके सैनिकोंके हाथ जा पड़े और बड़ी बेदर्दीसे मारे गये। कुछ मनुष्य शत्रुके आगमनका समाचार जान नगरमें घुस गये और उन सबने नगरनिवासियोंको सावधान कर दिया। इसके बाद नगर द्वार बन्द हो गया।

सिकन्दरने नगरकी चारों ओर अपनी सेना फैला दी और नगर घेर लिया। उसके पैदल सैनिक अभी पीछे ही रह गये थे। उनके आ जानेपर सिकन्दरने अपनी घुड़सवार सेनाका आधा अंश देकर सेनापति पदिकाको निकटवर्त्ती एक दूसरे नगरपर आक्रमण करनेके लिये भेज दिया। इसी अवसरमें और भी मसिडोनियन सेना, जो पीछे रह गई थी, वहाँ आ पहुँची। अब सिकन्दरने बड़े पराक्रमसे नगरपर आक्रमण किया। सिकन्दरने इस समय इतनी सावधानतासे काम लिया कि कोई भी मनुष्य उस नगरसे निकलकर न तो किसीको सहायताके लिये बुला सका

और न समाचार ही दे सका। नगरनिवासी भी आत्म-समर्पण न कर युद्ध करने लगे। उनमें कितने ही मनुष्य परलोक सिधारे। परन्तु युद्ध शान्त न हुआ। नगरनिवासी अपने पहाड़ी दुर्गम दुर्गमें चले गये। सिकन्दर नगरपर अधिकार न जमा सका। वह अब दुर्गपर अधिकार करनेकी चेष्टा करने लगा। वह अपनी सेनाको बहुत तरहसे उत्साहित कर बड़े पराक्रमसे दुर्गपर चढ़ दौड़ा। अल्प संख्यक भारतवासियोंका सब उद्यम वृथा हुआ। दो सहस्र मनुष्य जिन्होंने दुर्गमें आश्रय लिया था, परलोक सिधारे। सिकन्दरने शून्य दुर्गपर अपनी गौरव-पताका स्थापित की।

परन्तु इस स्थानपर सिकन्दरको कुछ ऐसे मनुष्योंसे काम पड़ गया था, कि यदि वह एक नगरपर अधिकार जमा भी लेता तो युद्धका अन्त न होता। वरन् दूसरे स्थानके अधिवासी और भी प्रवल वेगसे वाधा प्रदान करनेके लिये तैयार हो जाते, मानो वे स्वर्ग-द्वारको खुला समझकर युद्धमें अपनी आहुति देनेके लिये तैयार हो गये हों। इस नरमेधमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सभी जातियाँ सम्मिलित थीं। क्यूर्टियसने लिखा है कि शूद्रकोंने इस युद्धमें साथ दिया था।

पर्दिकाको जिस ओर भेजा गया था, उधरके अधिवासी शत्रुओंके आगमनका समाचार सुनकर ग्राम त्यागकर जङ्गलमें चले गये। उसने जङ्गलमें भी उनका पीछा किया और उसको केवल कुछ निरस्त्र मनुष्य वहाँ मिले; जिन्हें मारकर उसने अपनी युद्धेच्छा तृप्त की।

दुर्गको घेरकर उसकी प्राचीर तोड़ डालनेका उद्योग करने लगी। उसके अधिवासी प्राचीरको गिरते देख नगरसे दुर्गमें चले गये ; कुछ सिकन्दरके सैनिक भी उनके पीछे पीछे गये। उन्हें पीछा करते देख ब्राह्मणोंने प्रबल वेगसे आक्रमण किया। वे भाग चले। ग्रीक ग्रन्थकारोंका कथन है, कि इस क्षणिक युद्धमें पच्चीस मसिडोनियावासी परलोक सिधारे थे। सिकन्दर अपने सैनिकोंको मरते देख क्रोधसे अधीर हो गया था। उसने दुर्ग प्राचीर तोड़ डालने और डोरीकी सीढ़ी लगाकर चढ़ जानेकी आज्ञा दी। एक ओरकी प्राचीर खोद डालनेके कारण गिर पड़ी। दूसरी ओर रस्सीकी सीढ़ीके सहारे सिकन्दर सबके पहले प्राचीर पर जा चढ़ा। सिकन्दरको प्राचीरपर चढ़ते देख फिर सेना निश्चेष्ट न रह सकी। सैनिक प्राचीर उल्लङ्घन कर, चढ़कर और भग्न स्थानसे भीतर घुसकर दुर्गमें जाने लगे। दुर्गमें उपस्थित ब्राह्मण गण भी शस्त्र ले शत्रुओंपर टूट पड़े। किसी किसीने अपने घरमें आग लगाकर इस दृश्यको और भी भयानक बना लिया। एरि-यनका कथन है, कि ये बड़े तेजस्वी थे। अतः इनमें बन्दियोंकी संख्या बहुत ही कम थी। लगभग पाँच हज़ार ब्राह्मणोंने इस युद्धमें परलोक पयान किया। यथार्थ ब्राह्मण कभी अर्थ लोभमें मुग्ध नहीं होता, अतः वह कर्त्तव्य भ्रष्ट भी नहीं होता। इसीसे ब्राह्मणोंमें कैदियोंकी संख्या बहुत कम थी।

अभी सिकन्दरने ब्राह्मणोंपर विजय प्राप्त की थी, कि उसे समाचार मिला कि पिथन भी विजयी हुआ है।

इसके बाद उस ब्राह्मण ग्राममें एक दिवस अपनी सेनाको विश्राम करनेकी आज्ञा दे, सिकन्दर इस प्रदेशके अन्यान्य ग्रामों-को विजय करनेके लिये चल पड़ा । सिकन्दरके आगमनका समाचार सुन, वहाँके अधिवासी भी नगर त्याग जङ्गलोंमें चले गये। सिकन्दरको जब यह समाचार मालूम हुआ तब उसने डेमिट्रस और पिथनको नदी तटके जङ्गलोंमें सैनिकोंके साथ भेजा। वहाँ ये कुछ शस्त्र-हीन मनुष्योंका संहारकर लौट आये।

अब सिकन्दर वहाँसे आगे बढ़ता हुआ एक ऐसे स्थानपर जा पहुंचा ; जहाँ बहुतसे भारतवासी आश्रय ग्रहण किये हुए थे। इस नगरके अधिवासी सिकन्दरके आगमनका समाचार सुनकर उसे नदी तटपर ही बाधा पहुँचानेके लिये जा पहुँचे और नदीके किनारे कतार बाँधकर खड़े हो, सिकन्दरके आगमनकी राह देखने लगे ।

सिकन्दर इनको युद्धके लिये तैयार देखकर स्वयं घुड़सवार सेना ले आगे बढ़ा और नदी तटपर भारतीय सैनिकोंको देखनेपर भी साहसकर नदी पार होने लगा। एरियनका कथन है, कि अभी सिकन्दर नदी पार हुआ भी न था, कि भारतीय योद्धा पीछे हटने लगे। इस पीछे हटनेके समय भी भारतीय सेना विश्रृङ्खल न दिखाई देती थी। परन्तु इसके बाद सिकन्दरको अल्प-संख्यक सैन्यके साथ अग्रसर होते देखकर भारतवासी फिर लौट पड़े! सिकन्दर यह अवस्था देख, फिर आगे न बढ़ा और वहीं रुक गया। इसके बाद जब उसकी पैदल सेना आ पहुँची, तब सिक-

न्दर आगे बढ़ा। अब भारतवासी हटकर अपने सुदृढ़ नगरमें चले गये। ग्रीक ग्रन्थकारोंने इनकी संख्या लगभग पच्चीस हज़ारके बताई है। कह नहीं सकते, कि यह कहाँतक सत्य है। दूसरे दिवस सवेरे ही अपनी सेनाको दो भागोंमें विभक्त कर सिकन्दरने उस नगरपर आक्रमण किया। किसी तरह सिकन्दरको नगर प्राचीरमें एक छोटे द्वारका पता लग गया और वह उसे तुड़वा कर भीतर घुसा। पर्दिका भी बड़ी कठिनतासे प्राचीर उल्लङ्घनकर नगरमें घुस सका; परन्तु इससे भी मसिडोनियन सेनाका काम न बना और भारतवासी नगर त्यागकर दुर्गमें जा घुसे।

अब मसिडोनियन सेना दुर्गपर आक्रमण करनेका उद्योग करने लगी। इस दुर्गके आगे भी एक प्राचीर थी। कोई रस्सीकी सीढ़ी लगाकर उसके द्वारा प्राचीरपर चढ़नेका उद्योग करने लगा, कोई प्राचीरको खोद गिरानेकी चेष्टा करने लगा और कोई अन्य रूपसे प्राचीर भेद करनेका प्रयास करने लगा। इस समय सिकन्दरने बड़े साहसका काम किया। अपने एक सैनिकसे रस्सीकी सीढ़ी ले, वह सबके पहले प्राचीरपर जा चढ़ा। उसके चढ़ते ही अन्य कई सैनिक चढ़ने लगे। इससे वह सीढ़ी टूट गई और वे सैनिक जो उस सीढ़ीके सहारे ऊपर चढ़ना चाहते थे, नीचे गिर पड़े। फिर कोई भी ऊपर न चढ़ सका। उधर दुर्गवासियोंने जब देखा, कि शत्रु-पक्षका मनुष्य प्राचीरपर चढ़ आया है, तो वे लगातार शस्त्र चलाने लगे। सिकन्दर बड़ी विपत्तिमें जा पड़ा। सेना

उसके लिये चिन्तित हो उठी। सैनिक सिकन्दरको बाहरकी ओर कूद पड़नेका आग्रह करने लगे; परन्तु सिकन्दर बाहर न कूदकर दुर्गके भीतर ही कूद पड़ा। जिस स्थानपर सिकन्दर कूदा था, उस स्थानपर बहुतसे वृक्ष थे। उन्हीं वृक्षोंकी शाखायें बन्धु-भावसे उसकी रक्षा करने लगीं। इस समय सिकन्दरपर इतने शस्त्रोंकी वर्षा हुई, कि उसके मस्तकका शिरस्त्राण चूर चूर हो गया और उसमें ढालसे आत्म-रक्षा करनेका सामर्थ्य न रह गया। इसी समय एक तीर उसके कलेजेमें जा घुसा और वह अवसन्न होकर गिर पड़ा। इसके बाद एक मनुष्य शत्रुको अवसन्न होकर गिरते देखकर उसके पास गया; परन्तु सिकन्दरने इस अवस्थामें भी अपनी समस्त शक्ति संग्रहकर उसपर शस्त्राघात कर उसे यमलोक भेज दिया। विन्सेण्ट स्मिथ साहब कहते हैं, कि यह भारतीय शासक था; परन्तु क्यूर्टियसने उसे एक साधारण सैनिक बताया है। इस अवस्थामें भी उस सैनिकको मारे जाते देखकर सब भारतीय सैनिक स्तम्भित और किंकर्त्तव्य-विमूढ़ हो गये। कोई भी उसके पास फिर न गया। अब सिकन्दर वीरोंकी भाँति हाथमें कृपाण लेकर मरनेके लिये तैयार हो गया। इसी समय प्यूकिस्टस, लियोनेटस तथा अब्रियस ये तीन मनुष्य उसके पास जा पहुँचे। यही प्यूकिस्टस प्राचीन योद्धाओंके शस्त्र लेकर सिकन्दरकी सेनाके आगे आगे चलता था। सिकन्दर इस अवसरपर अपने स्वदेशवासियोंको देखकर बहुत कुछ आश्वस्त हुआ। इसी समय दुर्गवासियोंको

मालूम हो गया, कि स्वयं सिकन्दर आहत होकर गिरा है। अतः वे बड़े वेगसे उसपर टूट पड़े ; परन्तु इस समय सिकन्दरके इन तीनों साथियोंने बड़ा वीरत्व प्रदर्शन किया। अब्रियस शीघ्र ही मारा गया। बाकी दोनों अचल अटलकी भाँति अपने स्वामीकी रक्षा करने लगे।

इधर सिकन्दरके दुर्गमें गिरनेका समाचार जब सिकन्दरके सैनिकोंमें प्रचारित हुआ ; उस समय वे सैनिक किंकर्त्तव्यविमूढ़ न होकर अपने राजाका उद्धार करनेकी चेष्टा करने लगे। वे दुर्ग प्राचीर उल्लङ्घन करनेके लिये प्राणपणसे चेष्टा करने लगे। जिस समय मनुष्यमें किसी कार्यको करनेका दृढ़ सङ्कल्प उत्पन्न हो जाता है ; उस समय कोई भी पदार्थ उसकी गतिको नहीं रोक सकता। इस बार मसिडोनियन सेना भी इतनी उत्साहित हो उठी, कि कोई भी बाधा उसको रोक न सकी। कोई द्वार तोड़-कर, कोई प्राचीर उल्लङ्घन कर, कोई कोई प्राचीरमें कीलें ठोंक, उनपर चढ़कर दुर्गमें कूद पड़ा और अपने स्वामीकी रक्षा करनेकी चेष्टा करने लगा। इस बार दुर्गवासी और दुर्ग-शत्रु इन दोनोंमें घोर युद्ध आरम्भ हुआ। सिकन्दरकी बगलमें ही मृत योद्धाओं-का ढेर लग गया। बड़ा भयानक युद्ध हुआ। जिस समय युद्ध समाप्त हुआ, उस समय उस स्थानपर कोई भी भारतवासी जीवित न दिखाई दिया। ग्रीक ग्रन्थकारोंने कहा है, कि लगभग पचास हज़ार भारतवासी सिकन्दरकी गति रोकनेके लिये नदी तटपर युद्धके लिये गये थे। अतः इसमें कोई सन्देह नहीं, कि

यदि उनकी बताई हुई संख्या सत्य है, तो ये सबके सब युद्ध-क्षेत्रमें परलोक सिधारे थे।

सिकन्दरके कितने सैनिक मारे गये थे, इस विषयमें ग्रीक-ग्रन्थकार बिल्कुल ही नीरव हैं। मालूम होता है, कि सिकन्दरके घोर रूपसे आहत होनेके कारण ही वे मसिडोनियन सेनाकी मृत्यु-संख्या भूल गये।

इसके बाद जब सिकन्दर अपने शिविरमें आहत अवस्थामें लाया गया, उस समय उसका आघात देखकर उसके साथी विषाद-सागरमें निमग्न हो गये। जिस तीरसे सिकन्दर घायल हुआ था, वह उसके कलेजेमें बेतरह घुस गया था। उसे सहजमें निकालना भी कठिन था। शस्त्र चिकित्सकको आहत स्थान और भी काटकर तीर निकालनेका साहस न पड़ता था। क्योंकि उसे भय था, कि कहीं चीरनेपर अधिक रक्त निकलनेके कारण सिकन्दरकी मृत्यु न हो जाय। सिकन्दरने अपनी प्रकृत अवस्था समझकर शस्त्र-चिकित्सकको आज्ञा दी, कि तुम जिस तरह हो तीर बाहर निकाल लो। अतः उसने तीर निकाल लिया। जिस समय तीर निकाला गया; उस समय उसमेंसे इतना रक्त निकला कि सिकन्दर बेहोश हो गया। वह मूर्च्छा बहुत देरतक रही और उसके साथी सिकन्दरका मृत्युकाल उपस्थित समझकर बड़े ही चिन्तित हो पड़े।

इसी घटनाके कारण एकाएक सिकन्दरकी मृत्युका सम्बाद उसके चेनाब तटवाले प्रधान शिविरमें जा पहुंचा। पाठकोंको

स्मरण होगा, कि उसकी बहुत-सी सेना अब भी चेनाब-तटपर पड़ाव डाले हुए थी। उसके सैनिक सब भी बड़े दुःखित, चिन्तित और विचलित हुए। इस समय उन्हें सबसे बड़ी चिन्ता यह आ पड़ी, कि अब कौन उनका नायकत्व स्वीकार करेगा। यद्यपि उन्हें सन्तोष दिलानेके लिये सिकन्दरका हस्ताक्षरित पत्र भी उनके पास पहुँचाया गया; परन्तु सम्बाद-वाहक पर वे सब किसी तरह भी विश्वास न कर सके।

इधर सिकन्दरके हृदयसे निकलते हुए रक्तको रोकनेकी जो कुछ चेष्टा होती थी; वह किसी तरह भी सिद्ध न होती थी। अन्तमें कुछ दिन बाद रक्तका बहना आप-ही-आप बन्द हुआ और वह घाव भी अच्छा हो गया। सिकन्दर नावपर सवार हो बड़ी कठिनतासे चेनाव तटके प्रधान शिविरमें गया। अबतक सैनिकों-को सिकन्दरके आरोग्य होनेपर विश्वास न था, उन्हें सन्देह था, कि सिकन्दरका शव इस नावमें लाया गया है। परन्तु जब सिक-न्दर नावसे बाहर निकला; उस समय सैनिकोंकी प्रसन्नताका वारापार न रहा और वे नाना प्रकारसे, कोई उसे स्पर्श कर, कोई प्रणाम कर, कोई उसका वस्त्र छू कर अपनी प्रसन्नता प्रकट करने लगे। कितने ही मनुष्योंने उसे ऐसा अनुचित साहस न करनेका भी आग्रह दिया।

ग्रीक ग्रन्थकारोंका कथन है, कि इसके बाद मलोई तथा आक्सिड्राकाई इन दोनों जातियोंने युद्धका संकल्प त्याग कर सिकन्दरकी वश्यता स्वीकार ली। सिकन्दरने उनमें से प्रतिभू

स्वरूप एक सौ उत्तम योद्धा अपने पास रख लिये। यह भी लिखा है कि सन्धिका प्रस्ताव करते समय इन लोगोंने १०३० चार घोड़ों-वाले रथ, १०००० भारतीय ढाल, सौ टैलेण्ट मूल्यका इस्पात, बहुतसे वस्त्र और एक पालतू सिंह और एक व्याघ्र दिया था। इसके साथ-ही-साथ तीन सौ घुड़सवार सैनिक भी दिये थे।

इस स्थानपर सिकन्दरने टूटी हुई नावोंकी मरम्मत करा ली और रावी तथा चेनाबका सङ्गम-स्थल पार कर असिक्नि (सिन्धु) तटपर जा पहुँचा।

सिन्धु नदीके साथ चेनाबका सम्मिलन जहाँ हुआ था, वहाँ भी उसने एक नगर बसाया था। वहाँ उसने नावें रखनेके लिये बन्दरगाह बनाया था। फिलिपौस जिस स्थानका शासक नियुक्त हुआ था, उसकी यह दक्षिण सीमा मानी गई थी। जिसमें फिलि-पौस सदा इन स्थानोंको अपने शासनमें रख सके इसलिये उसे भरपूर थ्रेसियन तथा अन्य देशीय सेना भी दी गई थी। यहीं अजयरथी भी सिकन्दरसे मिलने आया था। यहीं एरियनके कथना-नुसार अन्सटलोई, अक्सथरोई (क्षत्रिय) ओसाडियोई प्रभृति जातियोंने सिकन्दरकी वश्यता स्वीकार की थी। डियोडोरसने लिखा है कि इनके अतिरिक्त सद्रोई (Sadroi) और मसनोई (Masanoi) नामकी दो जातियोंका अधिकार नदीके दोनों तटोंपर था और इसी स्थानपर अलेक्जैण्डर नामका नगर बसाया गया था, जिनके निवासियोंकी संख्या लगभग दस हज़ारके थी।

वर्त्तमान अवस्थामें इन नदियोंकी गति इतनी परिवर्त्तित हो गई है, कि प्रकृत स्थानका पता लगना एक प्रकारसे असम्भव ही है। अरबी लेखकोंका मत हैं, कि दोश-इ-आब जो भावलपुर प्रान्तमें है, वहाँ पंजाबकी सब नदियाँ किसी समय आकर मिल गई थीं। इसलिये इस उत्तरीय सिन्ध प्रान्तमें सिकन्दर किस पथसे गया था, इसका ठीक ठीक पता नहीं लगता।

सिन्धु-देश

जब सिकन्दर सिन्धु-सङ्गम त्यागकर तथा पञ्जाब प्रदेशको पार करता हुआ सिन्धुकी ओर अग्रसर हुआ। अबतक क्रेटेरस नदीके दक्षिण भागकी रक्षा करता हुआ अपने सैनिकोंके साथ आगे बढ़ता जाता था। परन्तु अब वह वाम भागकी रक्षापर नियुक्त हुआ और वह अधिकाँश सैन्य तथा हाथियोंके साथ आगे बढ़ने लगा। बीचमें ही सगरोई (Sagaroi) राजधानी पड़ी। इसपर सिकन्दरने अधिकार जमा लिया और नावें रखनेका स्थान बनवाकर अपनी नावोंकी एक बार फिर मरम्मत करा डाली।

सिकन्दरने समझा, कि जिस तरह उसे लगातार विजय प्राप्त हो रही है और जिस तरह उसकी विजयवार्त्ता चारों ओर

फैल गई है, उससे अब किसी प्रकारकी वाधा न प्राप्त होगी। इसी आशासे अब वह तेज़ीसे आगे बढ़ता हुआ सिन्धु-प्रदेशमें जा पहुँचा। यहाँ मूषिकान (Mousikans) नामकी एक जाति रहती थी। यह बड़ी ही समृद्धि-सम्पन्न जाति थी। इनमें उस समय आयुर्वेदका बड़ा प्रचार था। मूषिकोंके अधीश्वरने सिकन्दरके अग्रसर होनेका समाचार सुनकर भी अन्यान्य नृपतियोंके समान अपने दूत भेजकर सिकन्दरकी वश्यता स्वीकार नहीं की।

सक्कर जिलेके आलोर अथवा आरोर नगरमें इनकी राजधानी थी। ये उस समय भारतवर्षमें बड़े ही विख्यात थे। आहार-विहारके ऊपर इनकी विशेष दृष्टि रहनेके कारण ये उस समय १३० वर्षकी आयु प्राप्त करते थे। इनको इतने कालतक जीवित देखकर मसिडोनियनोंको बड़ा आश्चर्य हुआ था। वास्तवमें उन लोगोंके लिये आश्चर्यकी बात थी भी ; क्योंकि उस समय युरोप अज्ञानान्धकारसे ढक रहा था। उस समय ग्रीकोंमें चिकित्सा-शास्त्रका ज्ञान नाम मात्रको था। यद्यपि मूषिकोंके राज्यमें सोने चाँदीकी खाने थीं ; परन्तु वे उसपर बिल्कुल ही ध्यान न देते थे। उनमें दासत्व-प्रथा बिल्कुल ही दिखाई न देती थी। बहुतसे मनुष्य एक साथ बैठकर भोजन करते थे। वहाँ आईन और अदालतका नाम नहीं था। नर-हत्या आदि भयानक अपराधोंके लिये ही दोषी राज-दरबार तक लाया जाता था और वहाँ अपराध होते भी अत्यन्त अल्प थे। अस्तु,

सिकन्दर मूषिकोंको पदानत होते न देखकर कुछ चकित

हुआ। पीछे उसके आक्रमणका समाचार सुनकर कहीं वे सब युद्धके लिये तैयार न हो जायँ, इसलिये युद्ध-विद्या विशारद सिकन्दर बड़ी तेज़ीसे एकाएक उनकी राजधानीपर टूट पड़ा। अप्रस्तुत मूषिकगण इस आकस्मिक आक्रमणसे चकरा गये। उन लोगोंने इस समय सिकन्दरकी वश्यता स्वीकार कर ली। इस वश्यता स्वीकार करनेमें भी उनकी कुछ चाल मालूम होती है; क्योंकि कुछ ही दिवस बाद ही वे फिर विद्रोही हो गये। मालूम होता है, कि सिकन्दरको एकाएक आक्रमण करते देखकर युद्धके लिये प्रस्तुत होनेका उन्हें अवकाश न मिला और यह वश्यता स्वीकार कर ही उन्होंने अपना काम निकाल लिया। सिकन्दर उनकी राजधानी और नाना प्रकारके फल-पुष्पोंसे सुशोभित देश देखकर बड़ा ही प्रसन्न हुआ। इसके बाद मूषिकोंके वश्यता स्वीकार कर लेनेपर सिकन्दर वहाँके दुर्गमें अपनी कुछ सेना रख आगे बढ़ा।

एरियनका कथन है, कि मूषिकोंपर आक्रमणकर सिकन्दर आक्सिकानस (Oxykanos) पर आक्रमण करनेके लिये आगे बढ़ा। आक्सिकानसने भी वश्यता स्वीकार नहीं की। तुमुल-युद्ध हुआ। सिकन्दरने दो नगरोंपर अधिकार जमा लिया और आक्सि कानस बन्दी हुआ। इन नगरोंमें सिकन्दरको प्रचुर धन प्राप्त हुआ तथा कई हाथी भी हाथ लगे। सिकन्दरने लूटा हुआ सब धन अपने सैनिकोंमें बाँट दिया।

क्यूर्टियसका कथन है, कि सिकन्दरने इन लोगोंको पराजित

कर प्रयस्ती (Praesti) नामक जातिके विरुद्ध यात्रा की। प्रयस्तियोंके राजा पोर्टिकानस (Porticanus) ने आत्म-रक्षार्थ एक सुदृढ़ नगरमें प्रवेश किया। तीन दिवसों तक सिकन्दर नगरके चारों ओर घेरा डाले रहा। परन्तु इन तीन दिनोंमें भी उसपर अधिकार न जमा सका। बड़ी कठिनतासे चौथे दिवस सिकन्दर ने नगरपर अधिकार जमाया। अब प्रयस्तिगण दुर्गमें जाकर युद्ध करने लगे। एक दुर्गका एक बुर्ज फटकर गिर पड़ा। मसिडोनियन सेना उन्मतकी नाईं उसी भग्न स्थानसे भीतर घुसकर युद्ध करने लगी। वीर पोर्टिकानस तलवार हाथमें लेकर युद्ध करते करते ही परलोक सिधारे।

इस प्रदेशमें सिकन्दरको लगातार जिस तरह पद-पदपर वाधा प्राप्त हो रही थी; उससे वह क्रोधके वशीभूत हो अपना मनुष्यत्व भूल गया था। उसने जो बालक बालिका, स्त्री, बृद्ध बच गये थे, उन सबको दास रूपमें बेच डाला। इतना करके भी सिकन्दर तृप्त न हुआ। उसने नगरमें आग लगा दी और चूर्ण-विचूर्ण कर श्मशानमें परिणत कर डाला।

यद्यपि सिकन्दरने परम असभ्यताका यह कार्यकर भारत-वासियोंके हृदयमें भय उत्पन्न करना चाहा था; परन्तु किसी तरह भी भारतवासियोंको भयभीत न कर सका था। जिस समय वह अपनी इन पैशाचिक वृत्तियोंको दिखाकर अपना दिग्विजयी नाम सार्थक करना चाहता था; उसी समय मूषिकोंने विद्रोह मचा दिया। उन्होंने अधीनता-पाश छिन्नकर सिकन्दरके

जो सैनिक वहाँ उपस्थित थे; उनपर आक्रमण कर दिया था। ग्रीक ग्रन्थकारोंका कथन है, कि ये मूषिकगण ब्राह्मणोंकी उत्तेजनासे ही एकाएक विद्रोही हो गये थे। विदेशियोंको भारतसे दूर करनेके लिये मूषिकोंके साथ ब्राह्मणोंने भी शस्त्र ग्रहण किया था; क्योंकि ब्राह्मणगण गाँव गाँव और नगर नगरमें जाकर सबको उत्तेजित कर देते थे। ब्राह्मणोंके इस उदाहरणसे उत्तेजित होकर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सभी घोर विक्रमसे समराग्नि प्रज्वलित कर देते थे। सिकन्दरने अपने सेनापति पिथनको इनपर आक्रमण करनेके लिये भेज दिया। ग्रीक ग्रन्थकारोंका कथन है, कि इस बार सिकन्दरकी क्रोधाग्निमें जितने विद्रोही थे सब भस्म हो गये।

यद्यपि सिकन्दरको यहाँ पद-पदपर बाधा प्राप्त हो रही थी; परन्तु वह हताश न होता था। मूषिकोंको दमन करनेके लिये पिथनको भेजकर वह स्वयं साम्बो राज्यपर आक्रमण करनेके लिये चला। साम्बो राज्यकी राजधानी सिण्डिमाना * थी। साम्बोके अधीश्वरने यद्यपि सिकन्दरकी वश्यता स्वीकार ली; परन्तु प्रजा विद्रोही बन बैठी। वह सिकन्दरसे युद्ध करने लगी। इसी साम्बो राज्यके एक नगरपर आक्रमणकर सिकन्दर जब किसी तरह प्राचीर उल्लङ्घनकर नगरमें प्रवेश न कर सका, तब

---

* वर्तमान सिहवान ही प्राचीन सिण्डिमाना कहलाता है। परन्तु इसका कोई भी पूरा पूरा प्रमाण नहीं है।

वह सुरङ्ग खुदवाकर उसीकी राहसे नगरमें जा घुसा। इससे नगरनिवासी बहुत ही विस्मित होकर सिकन्दरके शरणापन्न हो गये। यद्यपि उन्होंने सिकन्दरकी वश्यता स्वीकार ली; तथापि सिकन्दर इस बार अत्यन्त क्रुद्ध हो गया था। ब्राह्मणों-पर तो उसके क्रोधका वारापार न था। अतः उसने अगणित मनुष्योंकी हत्याकर यहाँ भी अपने हृदयकी नृशंसताका पूरा पूरा परिचय दिया।

उधर पिथन तथा मूषिकोंसे भीषण समर आरम्भ हुआ; दोनों दल बड़े विक्रमसे एक दूसरेको पराजित करनेकी चेष्टा करने लगे। ग्रीक ग्रन्थकारोंका कथन है, कि सिकन्दरकी क्रोधाग्निमें पड़कर मूषिकोंके सब नगर ध्वंस हो गये थे। पिथन मूषिकोंके राजा तथा कितने ही ब्राह्मणोंको गिरफ्तार कर लाया था। सिकन्दरने कांटियाँ ठुकवाकर इन सबको मार डाला।

यहाँसे सिकन्दर अपनी सेना सहित डेल्टा राज्यकी ओर चला। वहाँकी राजधानी पटल * थी। ग्रीकोंने इसे पैटेलिन लिखा है।

पटल जाते समय हर्मेटेलिया नामक एक और भी नगर पड़ता था। डियोडोरसका कथन है, कि इस प्रदेशके अधिवासी सिक-न्दरकी सेनाको देखते ही उसपर आक्रमण करनेके लिये तैयार

---

* यह पटल राज्य प्राचीन बहमनाबादके पास है। वर्तमान मंसूरियासे बहमनाबाद लगभग छः मीलकी दूरीपर है।

हो गये। इनके प्रचण्ड विक्रमके आगे मसिडन सेना भाग चली। विदेशी ग्रन्थकारोंका कथन है, कि मसिडोनियन सेना भागी अवश्य थी ; परन्तु वह भयसे नहीं वरन् युद्ध-नीतिसे। अपनी सेनाके भागनेका समाचार सुनकर स्वयं सिकन्दर वहाँ जा पहुँचा। अब फिर प्रवलतर युद्ध आरम्भ हुआ। बहुतसे मसिडोनियन और भारतवासी परलोक सिधारे। भारतवासियोंकी तलवारका जरा भी घाव जिसे लग जाता, वही परलोक जा पहुँचता था। मसिडोनियन चिकित्सक इसका कोई प्रतिकार नहीं कर सकते थे। सिकन्दर सबके आगे रहकर युद्ध परिचालन कर रहा था। भारतवासी चाहते थे, कि इस विष-विदग्ध शस्त्रका आघात सिकन्दरको भी प्राप्त हो ; परन्तु किसी तरह भी उनकी आशा पूरी न हुई। सिकन्दरका एक सेनापति इससे घायल हुआ सिकन्दर उसके पास बैठकर उसकी सुश्रूषा करने लगा। कितनों का ही कथन है, कि सिकन्दरको स्वप्नमें इसकी औषधि प्राप्त हो गई थी। परन्तु वास्तवमें यह बात नहीं है। किसी स्वदेश-द्रोही लोभी भारतवासीने ही धनके लोभसे इसकी औषधि बता दी थी। इसी औषधसे वह सेनापति आरोग्य हो गया। दैवके विपरीत हो जानेके कारण यह कूटनीति अवलम्बन कर भी भारतवासी विजय प्राप्त न कर सके। सिकन्दरका उनपर अधिकार हुआ। सिकन्दरने इनको कोई दण्ड न देकर मीठी बातोंसे ही तुष्ट किया।

जिस समय सिकन्दर मूषिक-राज्यसे अग्रसर हुआ, उसी समय पटलके अधीश्वरने सिकन्दरकी वश्यता स्वीकार ली। ये

स्वयं सिकन्दरके पास उपस्थित हुए। सिकन्दरने उन्हें अपने देशमें जाकर यात्रामें सहायता देनेका अनुरोध किया।

यहाँसे सिकन्दरने अपने सेनापति क्रेटेरसको करमानियाकी ओर सेना तथा लूटा हुआ द्रव्य लेकर भेज दिया। उसके साथ अटलसा, मिलिगर तथा ऐण्टिजिनसकी अधीनतामें रहनेवाली सेना थी। बहुतसे अकर्म्मण्य तथा ऐसे सिपाही भी जो युद्धके उपयुक्त न थे, वे भी इसी सेना-दलके साथ भेज दिये गये। इस सेना-दलके साथ बहुतसे हाथी भी भेजे गये थे।

अब हिपाइस्तियन उस सेनाका प्रधान सेनापति बनाया गया, जो नदीके किनारे किनारे पटलकी ओर अग्रसर हो रही थी। क्रेटेरस जो नदीके वाम भागकी रक्षा करता था, उसका स्थान पिथनको दिया गया। तीन दिनोंतक लगातार यात्राकर सिकन्दर पटल जा पहुँचा। यहाँ आते ही उसने देखा, कि नगर निवासी नगर छोड़कर भाग गये हैं। एरियनका कथन है, कि सिकन्दरने यह अवस्था देखकर अपने सैनिक देशके भीतरी भागमें भेजे। वे उन सबको समझा बुझाकर और आश्वासन देकर लौटा लाये। वे सब नगरमें लौट आये।

सिकन्दरने पटलको सामरिक अड्डेके उपयुक्त समझकर वहाँ पोताश्रय निर्म्माण करनेकी हिपाइस्तियनको आज्ञा दी और बहुत दिनोंतक वहाँ रहकर अपने निरीक्षणमें कार्य कराता रहा। वहाँ तथा निकटस्थ स्थानोंमें पीनेके योग्य जलका अभाव देखकर उसने वहाँ कई कूप भी खुदवाये थे।

पटलके पास ही सिन्धु-नदी दो भागोंमें विभक्त होकर समुद्र-में जा मिली है। सिकन्दर इस स्थानसे समुद्रकी दूरी देखनेके लिये स्वयं नावपर चढ़कर पश्चिम भागकी धारासे समुद्र-तटतक गया। यह स्थान शायद सिन्धुका प्राचीन बन्दर देवल था, जो थत्थासे लगभग १५ मीलकी दूरीपर है। यहाँ भी सैनिकोंको बड़ा कष्ट भोगना पड़ा था ; क्योंकि अबतक वे भू-मध्य-सागरके शान्त-जलके ही अभ्यस्त थे। भू-मध्य-सागरमें समुद्रके जलका घटना बढ़ना नहीं मालूम होता। सिन्धु-नदीके प्रबल ज्वारमें उसकी नावें इधर उधर हो गईं और उसके साथियोंमें बड़ा भय उत्पन्न हो गया। बड़ी कठिनतासे ये नावें समुद्र तक पहुँच सकीं। सिन्धुके मुहानेपर किलौता नामक एक द्वीप उन्हें दिखाई दिया। वहाँ पहलेसे ही नावें रखनेकी जगह बनी हुई थी। वहाँ अपनी नावें रखकर सिकन्दर बहुत दूरतक समुद्रमें घूम आया।

इसके बाद वह फिर पटल लौट आया। यहाँ लौटकर उसने देखा, कि पोताश्रयका कार्य बहुत कुछ हो गया है। अतः वह पूर्वीय पथसे अग्रसर हुआ। एरियनका कथन है, कि यह पथ बड़ा सुगम था। सिकन्दरको सिन्धुके मुहानेके पास एक बड़ा ह्रद दिखाई दिया। वर्त्तमान समयमें उसका नाम समारा झील है। तीन दिनोंतक समुद्र-तटका निरीक्षणकर सिकन्दर फिर पटलमें लौट आया और वहाँ आकर वह स्वदेश जानेकी तैयारियाँ करने लगा। उसके सहचर नियार्कसकी अध्यक्षतामें नावें समुद्र-पथसे फ़ारिसकी ओर भेजनेका उद्योग होने लगा। चार मासके

उपयुक्त भोजनकी सामग्री एकत्र की गई और यह निश्चित हुआ, कि कुछ सेना जल मार्गसे नियार्कसकी अध्यक्षतामें जाय और बाकी गोडरेशिया (वर्त्तमान मकरान) के पथसे जङ्गलोंमें होती हुई फ़ारिस पहुँचे। इस तरह प्रवन्ध कर सिकन्दर अक्टूबर ३२५ ई० पू० में स्वदेशकी ओर चल पड़ा।

इस यात्रामें वायु अनुकूल न रहनेके कारण नियार्कसको बहुत कुछ कष्ट उठाना पड़ा और चौबीस दिनोंतक वह आगे न बढ़ सका। वह जिस स्थानपर इन चौबीस दिवसोंको तक पड़ा रह गया। उसका नाम उसने अलेक्जैण्डर्स हेवेन रखा था। *

सिकन्दर अपने दलके साथ आगे बढ़ता हुआ अर्बियस, वर्त्तमान पुराली नदी तटपर जा पहुँचा और इसे पारकर बलूचिस्तानमें चला गया। इस प्रदेशके हिन्दू नरपतियोंने भी सिकन्दरको कम वाधा न पहुँचाई और ओरीताई (Oreitai) ने सिकन्दरकी किसी प्रकारकी सहायता नहीं की। दोनोंमें घोर युद्ध हुआ और बहुतसे ओरीताई मारे गये। ओरीताइयोंके ६००० मनुष्य इस युद्धमें परलोक सिधारे।†

नियार्कस अपने दलके साथ अग्रसर होता हुआ कोकाला नामक स्थानपर जा पहुँचा। यहाँ सैनिकोंको आराम करनेकी

---

* इस स्थानका ठीक पता नहीं लगता, परन्तु इतना कहा जा सकता है, कि यह कराचीके पास ही था।

† वर्त्तमान लासवेला हो ओरीताइयोंका राज्य था।

आज्ञा दे दी गई। इसी स्थानपर लियोनेटस तथा नियार्कसका दल मिल गया। यहाँ वे मनुष्य जो नौ-परिचालनके अयोग्य समझे गये थे, पैदल सेनामें ले लिये गये और उनके बदले लियोनेटसकी अधीनतासे कितने ही सैनिक दे दिये गये।

अब यह दल अग्रसर होता हुआ तोमरस नदी तटपर जा पहुँचा। इस स्थानके अधिवासी असभ्य थे। उन्हें अन्यान्य शस्त्रोंका ज्ञान न था और वे केवल भालोंका व्यवहार जानते थे। वे चमड़ेके वस्त्र पहनते थे। सिकन्दरकी जल सेनाको उन लोगोंने भी वाधा दी और एक साधारण युद्धके बाद वे भाग गये; यहाँ पाँच दिवसों तक सेना रही और फिर मल्लना (वर्त्तमान रास मालिन) नामक स्थानपर जा पहुँची। यह ओरीताइयोंके राज्य-की पश्चिमीय सीमा थी।

मलना अन्तरीप उल्लङ्घनकर ये गोडरेशियोई ओमती जातिके स्थानपर जा पहुँचे। ये केवल मछली खाकर अपना जीवन व्यतीत करते थे। इनके मकान बड़ी बड़ी व्हेल मछलियोंकी हाड़के बने थे और उनके जबड़े दरवाजोंके काममें लाये जाते थे। इस तरह कितनी ही वाधाओंको उल्लङ्घन करता हुआ यह दल वादिस बन्दरसे होता हुआ उर्मुज स्ट्रेटके पास जा पहुँचा। अब ये कारमानिया प्रान्तमें जा पहुँचे। इसके बाद वे हर्मोजिया (उर्मुज़) नगरमें गये। इसी स्थानपर नियार्कसको एक ऐसा मनुष्य मिला जो ग्रीक था और जिसने कहा, कि सिकन्दर यहाँसे पाँच दिनोंके पथपर है।

नियार्कसकी ऐसी बुरी दशा हो रही थी, कि सिकन्दर उसे एकाएक पहचान न सका। पीछे उसने पहचाना। यहाँसे नियार्कस फिर यूफ्रेट्रीस तटकी ओर रवाना हुआ और सूसानें सिकन्दरसे जा मिला था।

स्थल-पथसे जानेमें सिकन्दरको भी कम कष्ट न हुआ था। उत्तप्त भूमि तथा गर्मीके कारण उसे बड़ी विपत्तिमें पड़ना पड़ा था और उसके हज़ारों सैनिक परलोक सिधार गये थे। दुःखके समय ही मनुष्यकी परीक्षा होती है। सिकन्दरने बड़े साहससे यह विपत्ति सह ली थी। उसके सैनिकोंको भोजन न मिलता था। कितनी ही बार ऐसी अवस्था आ पड़ी थी, कि घोड़ोंका माँस उन्हें खाना पड़ा था। एक बार एक पहाड़ी नदीके किनारे बहुत से सैनिक थे, एकाएक नदी उमड़ पड़ी और उसके बहुतसे सैनिक बह गये। परन्तु सैनिक इसी कारणसे विचलित न हुए, कि सिकन्दर भी सामान्य सैनिकोंकी भाँति उनके साथ-ही-साथ कष्ट सहन करनेके लिये प्रस्तुत रहता था; इसीलिये उसके सैनिक भी कदापि हताश न होते थे और बराबर सिकन्दरपर भक्ति करते थे। अस्तु,

जिस समय करमानियामें सिकन्दरकी सेना पड़ी थी; उसी समय उसे समाचार मिला, कि भारतमें विद्रोह मच गया और सिन्धु-प्रदेशका सत्रप (फ़ारिसके शासनकर्त्ताका पद) मार डाला गया; परन्तु इतना सुनकर भी उस समय सिकन्दर कुछ कर न सका। उसने थ्रेशियन सेनाके नायक यूडिमस और तक्ष-

शिलाके राजा आम्भिको इस प्रदेशका शासन भार ग्रहण करनेके लिखा। साथ ही समस्त पंजाबका शासन भार पुरु और आम्भिको प्राप्त हुआ। पिथन जो सिन्धुके मुहानेपरके प्रदेशका शासनकर्ता नियुक्त हुआ था, आरचोसिया प्रदेशमें भेज दिया गया और वास्तवमें इसी समयसे मसिडोनियन सेना द्वारा भारतवर्ष परित्यक्त हुआ।

सूसामें पहुँचकर फ़ारिसवासियोंसे निकटस्थ सम्बन्ध स्थापित करनेके लिये सिकन्दरने दाराकी कन्यासे विवाह किया। उसकी देखा-देखी और भी उसके कितने ही सहचरोंने फ़ारिसदेशीय रमणियोंसे विवाह किया। दश हज़ार मसिडोनियन सैनिक तथा उन रमणियोंमें विवाह बन्धन हुआ। इस समय कितने ही ऐसे पुरुष भी थे, जो सिकन्दर तथा उसके सैनिकोंके इस कामसे बड़े ही असन्तुष्ट हुए थे। इसी समय उसके प्रियतम बन्धु हिपाइस्तियनकी मृत्यु हुई। उसकी मृत्युसे सिकन्दर बड़ा ही दुःखित हुआ। इस समय उसका अमिताचार बहुत कुछ बढ़ गया था। उसका शरीर भी अब पहले जैसा न था। वह खूब शराब पीने लगा था। सूसासे वह बैबिलन गया। बैबिलनमें उसे ज्वर आया। ज्वरकी अवस्थामें ही वह बराबर शराब पीता रहा और ३२६ ई० पूर्वके जून मासमें प्रायः ३३ वर्षकी अवस्थामें १३ वर्षतक राज्य भोगकर परलोक सिधारा।

इस तरह सिकन्दरका जीवन अवसान हुआ। सिकन्दरने अपनी छोटी अवस्थामें जिस अध्यवसाय और कष्ट-सहिष्णुताका

परिचय दिया था, उसीसे वह इतने थोड़े समय और इतनी अवस्थामें इतना कार्य्य कर सका था।

जिस समय सिकन्दरकी मृत्युका समाचार भारतमें आया, उसी समयसे सिकन्दरका सम्बन्ध त्यागनेके लिये भारतवासी खड्गहस्त हुए। इसके पहले ही सिकन्दरका सेनापति फ़िलिपौस मारा गया था। अब विदेशियोंका जो कुछ सम्बन्ध भारतवासियोंसे रह गया था, उसे भी त्याग देनेके लिये वे तय्यार हो गये। इसी समय एक घटना ऐसी और भी घटी, कि जिससे भारतवासी और भी क्रुद्ध हो उठे। पाठकोंको स्मरण होगा, कि थ्रेशियन सेनाका सेनापति युडिमस था। इसने विश्वासघातकतासे पुरुको मार डाला और उसके हाथी ले यूमिनेसकी सहायताके लिये चल पड़ा जो एण्टिगोनसपर आक्रमण किया चाहता था। इससे भारतवासी और भी बिगड़ उठे और वे इस तरह मसिडोनियन सेनापर खगड्हस्त हुए कि उनका ठहरना कठिन हो गया और उनमें कितने ही मारे गये तथा कितने ही भाग गये। जिस महापुरुषने भारतीय सेनाका नायकत्व ग्रहण कर इस तरह विदेशियोंको मार भगाया था, उनका नाम चन्द्रगुप्त था। चन्द्रगुप्तकी अधीनतामें भारतवासियोंने बड़ी उन्नति की थी और इनके ही पौत्र धर्म्मबुद्धि अशोकने प्रजापालनमें तत्परता तथा बौद्धधर्म्मके प्रचारमें बड़ी सहायता दी थी।

समाप्त

अनेक रंग विरंगे चित्रोंसे सुशोभित।

लेखक—देशभक्त लाला लाजपतराय।

जिस महाराष्ट्र केशरीने एक साधारण गृहस्थके यहाँ जन्म लेकर भी अपनी योग्यता, महत्ता तथा रण-निपुणताके कारण बड़े बड़े वीरोंके छक्के छुड़ा दिये, मुगल-साम्राज्यकी जड़ हिला दी और दक्षिणमें एक नया हिन्दू राज्य स्थापित कर दिया, यह उसी वीर, प्रतापी, यशस्वी, निर्भीक धर्मपरायण शिवाजीका ऐसा जीवन-चरित्र है, जिसे पढ़कर नस-नसमें वीरताकी बिजली दौड़ने लगती है, कायरता भाग जाती है और मुसलमानोंके अत्याचारोंके दृश्यके साथ ही-साथ उस समयके हिन्दुओंके धर्म प्रेमका नजारा बायस्कोपके चित्रकी भाँति आँखोंके सामने आ जाता है। देश-भक्त लालाजीने इसमें अपनी कलमके जोरसे वह जादू भर दिया है, ऐसी वीर भाषामें यह जीवनी लिखी है, कि कायरोंके हृदयमें भी वीरता उमड़ पड़ती है। यदि आप, वास्तवमें वीरताके उपासक है, इतिहासके प्रेमी हैं, अपने पूर्वजोंकी सुकृतिको जान-

कर अपनी तथा अपनी सन्तानोंकी उन्नति किया चाहते हैं, तो शिवाजी पढ़िये। इसमें आपको एक आदर्श चरित्र दिखाई देगा, मुसलमानोंकी कूट-नीति, मुगल-साम्राज्यका दोर्दण्ड प्रताप, औरङ्गजेबकी भयानक चालें, अफजल खाँ, दिलेर खाँ, शाइस्ता खाँ और बीजापुर दरबारकी हिन्दू-द्वेषी नीतिके घोर अन्धकार पूर्ण साम्राज्यमें शिवाजी एक ऐसा चमकता हुआ सितारा दिखाई देगा, जो हिन्दुओंकी गौरवकी पताका फहराता हुआ, सबकी चालोंको काट देता है, जिसकी चमकसे बीजापुर दरबार काँपता है, औरङ्गजेब थर्राता है, बड़े बड़े सेनापति और कूट-नीतिज्ञ या तो कालके गालमें चले जाते हैं अथवा मुँह छिपाकर भाग जाते हैं। इसीलिये कहते हैं, कि यह बहुत ही सुन्दर अनेक ऐतिहासिक चित्रोंसे सुशोभित, मोटी दलदार पुस्तक मंगाकर स्वयं पढ़िये, पुत्र-परिजनको पढ़ाइये। आपका जीवन सफल होगा, देशका मङ्गल होगा। मूल्य १।)

पञ्चभूत

लेखक—महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर।

पञ्चभूत साहित्य जगतका देदीप्यमान सूर्य, गद्यकाव्य कानन-का कुसुमित कुसुम, कहानीके रूपमें अद्भुत विचारों, दार्शनिक तत्वों तथा आध्यात्मिक उक्तियोंका रत्नाकर है। पृथ्वी, जल, अग्नि,

आकाश और वायुसे किस तरह मानव शरीरसे लेकर समस्त संसारकी उत्पत्ति होती है, ये इस संसारमें कैसा कैसा खेल दिखाते हैं, इन तत्वोंके क्या कार्य हैं प्रभृति बातें जाननी हों तो इसे पढ़िये। इसमें कहानीके रूपमें सौन्दर्य, स्त्री, पुरुष, गाँव, मनुष्य, मन, अखण्डता, गद्य-काव्य, काव्यका तात्पर्य, प्रांजलता, कौतुक-हास्य, कौतुक-हास्यकी मात्रा, सौन्दर्यमें सन्तोष, भद्रता-का आदर्श, अपूर्व रामायण, वैज्ञानिक कौतूहल—प्रभृति, उच्च विचारोंसे पूर्ण ऐसी कहानियाँ हैं कि पढ़कर दङ्ग हो जाना पड़ता है। सारांश यह कि आप साधारण उपन्यास पाठक हों तो पञ्च-भूत पढ़िये, लेखक हों तो पढ़िये, सम्पादक हों तो पढ़िये, दार्श-निक, अध्यात्म-चिन्तक साहित्यिक—चाहे जो हों, जिस विचार-के हों, इसे पढ़िये। इसमें वह आनन्द वह ज्ञान विज्ञान मिलेगा, जो आजतक किसी पुस्तकमें दिखाई न दिया है। सुन्दर दलदार पुस्तकका मूल्य १॥)